

* नमः श्रीपूज्यपादाय *

सनातनजैनग्रंथमाला।

१२

काव्यतीर्थ व्याकरणशास्त्रि–श्रीश्रीलालजैनकृत

संस्कृतप्रवेशिनी

प्रथमभाग।

जिसको

गांधीहरिभाईदेवकरण एंड सन्स द्वारा संरक्षित

भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्थाके महामंत्री

श्रीपन्नालाल बाकलीवालने

आकलूजनिवासी स्वर्गीय श्रेष्ठिवर्य–

नाथारंगजी गांधीके स्मरणार्थ

कलिकाताके

९, विश्वकोष लेन बागबाजार विश्वकोष प्रेसमें,

श्रीराखालचंद्र मित्रके प्रबंधसे छपाकर प्रकाशित किया।

वीर निर्वाण संवत् २४४२.

प्रथमावृत्ति } ईशवीय सन् १९१६. { मूल्य १) रुपया।

वक्तव्य।

महाशय!

इस पुस्तकके लिखे जानेमें दो प्रधान कारण हैं एकतो आजकल अंग्रेजी स्कूलोंमें जो संस्कृत सिखानेवाली पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उनसे अधिक परिश्रम करनेपर भी फल कम होता है विद्यार्थी रात्रिंदिव रूप रटते २ थक जाते हैं पर रूपोंका ज्ञान नहीं होता यदि किसी अपरिचित शब्दके रूप चलाने होते हैं तो पहिले कंठ किये हुये शब्दके रूप चलाते हैं और फिर उस शब्दके। इस तरह एकतो अनुवाद करनेमें अधिक समय लगता है और दूसरे कंठ किये हुये शब्दके रूपमें भ्रम होनेसे उसके समान अन्य शब्दके रूपमें भी भ्रांति हो जाती है इत्यादि कठिनाइयोंके वशीभूत हो हमारे नव युवक संस्कृतको अतिक्लिष्ट और अगम्य समझकर पढ़ना छोड़ बैठते हैं जिससे कि इस पवित्र विद्याका प्रतिदिन ह्रास होता चला जाता है। दूसरा कारण यह है कि हमारे पुरातनः पद्धतिसे पढने वाले महाशय व्याकरणादि विषयोंमें तो अति निष्णात हो जाते हैं परंतु उनको अनुवाद करना विलकुल नहीं आता यदि कभी संस्कृतमें वार्तालापादि करनेका काम पड़ जाता है तो दो चार शब्द भी नहीं बोल सक्ते। जिससे कि परीक्षाओंमें अनुत्तीर्ण हो उत्साह हीन हो जाते हैं और पढ़ना छोड़ बैठते हैं। बस इन्हीं दो कारणोंके वशीभूत हो हम इस पुस्तकके निर्माण और प्रकाशनमें बाध्य हुये हैं। इस पुस्तकके दो भाग हैं जिसमेंसे प्रथम भागमें शब्दोंके प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन विभक्तीके, धातुओंमें भ्वादि और तुदादि गणीय धातुओंके वर्तमान, भूत भविष्यत् और आज्ञा अर्थके रूप बतलाये गये हैं अन्य पुस्तकोंमें इट्, अनिट्,

धातु-प्रत्यय आदि सुगम रीतिसे नहो बतलाये हैं जिससे कि लिट्, लुङ् आदि लकारोंके रूप समझमें नही आते सो इसमें वह कठनाई नहीं है उसके जाननेके लिये धातुमें एक अनुबंध लगा दिया है जिससे विद्यार्थीको पढ़नेमें अति सुगमता होती है छोटेसे लेकर बड़े बूढे सब लोग इसको पढ़ सक्ते हैं। दूसरे भागमें शेष कुल विभक्ती और धातुओंके रूप प्रयोग सहित बतलाये गये हैं। इसलिये इन दोनों भागोंके पढ़ लेनेसे संस्कृतमें अनुवाद, पत्र, लेख आदिका लिखना, वार्तालापका करना, संस्कृत ग्रंथोंका समझना भली भांति आसकता है।

कलकत्ता।
२५ मार्च सन् १९१६।

वशंवद
श्रीश्रीलाल जैन।

विद्यार्थियोंको सूचना

पढते समय पाठके ऊपर दिये गये हेडिंग (शिरनाम) के अनुसार शब्दोंके रूपोंको विचारना चाहिये कि इसमें हिंदीसे क्या विशेषता है। अर्थात् जैसे कि पहिला पाठ पढ़ना है उसके ऊपर हेडिंगमें "भ्वादि और तुदादि गणीय धातुओंके वर्तमान कालके रूप और उनका पुलिंग अकारांत शब्दोंके कर्ता तथा कर्मके रूपोंके साथ प्रयोग" ऐसा लिखा है तो समझना चाहिये कि—इस पाठमें जिन शब्दोंके आखिरमें 'अ' है उस शब्दके कर्ता तथा कर्मके रूप बतलाये हैं इसलिये जिसके ऊपर कर्ता लिखा है वह कर्त्ताका और जिसके

ऊपर कर्म लिखा है वह कर्मका रूप है और जिसके बाईं तरफ १ लिखा है वहांसे आगे एक वचन, २ लिखा है वहांसे आगे द्विवचन और ३ लिखा है वहांसे आगे बहुवचनके कर्ता, कर्म और क्रियाके रूप समझाये गये हैं। संस्कृतमें उदाहरण "जैनः जिनं अर्चति" है और हिंदीमें "जैन जिनको पूजता है" ऐसा है। हिंदीसे संस्कृतमें केवल इतनी ही विशेषता है कि कर्ताके एकवचनमें विसर्ग (:) और कर्मके एकवचनमें अनुस्वार (ं) लग गया है क्रियाका रूप बिलकुल दूसरा है इसी तरह जितने उदाहरण दिये हैं उन सबमें और अपने मनसे विचारे हुये अन्यशब्दोंमें भी यही बात घटा लेनी चाहिये। इस प्रकार करनेसे शब्दोंके रूप भली भांति ध्यानमें आजायेंगे और कालांतरमें भी विस्मृत न होंगे जब इस तरह रूप पक्के हो जांय तब पाठमें दिये गये अशुद्ध शुद्ध भागको विचारें। बादको "नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ" के नीचे लिखे हुये शब्दोंमें यदि कर्त्ताका रूप है तो कर्म, क्रिया, कर्मका रूप है तो कर्ता, क्रिया और क्रियाका रूप है तो कर्ता कर्म किसी न किसी शब्दका जिसका कि अर्थ ठीक बैठता हो बना २ कर लिखें और फिर संस्कृत हिंदीका अनुवाद करना प्रारंभ करें। अनुवादमें कर्ताके अनुसार क्रियाका विशेष ध्यान रहना चाहिये अर्थात् कर्ता एक वचन हो तो क्रिया भी एक वचनकी, कर्ता द्विवचन हो तो क्रिया भी द्विवचनकी, और कर्ता बहुवचनका हो तो क्रिया भी बहु वचनकी रखनी चाहिये। कर्मके लिये कोई नियम नहीं है। कर्म चाहे एक वचन हो चाहें द्विवचन हो और चाहें बहुवचन हो उसके कारणसे कर्ता अथवा क्रियामें कोई विकार नहीं होगा।



नमः श्रीपूज्यपादाय।

सनातनजैनग्रंथमाला।

१२

संस्कृत-प्रवेशिनी।

(प्रथमभाग)

मंगलाचरण।

नत्वाऽखिलज्ञं खिलभूयमाप्तं
खलाखलानामखिलक्रियाणां।
रचामि कृत्याप्तविबोधनाय
प्रवेशिनीं संस्कृतसंस्कृतस्य ॥१॥

(भ्वादि और तुदादिगणकी धातुओंके वर्तमानकालके रूप
और उनका अकारांत पुंलिंग शब्दोंके कर्ता
तथा कर्मके रूपके साथ प्रयोग)

(सूचना—विद्यार्थियोंको चाहिये कि शब्दोंके कर्ता कर्मके रूपोंको भली भांति ध्यानमें रक्खें तथा जितने शब्द उनके समान मिलें उनको उसीतरह कर्ता और कर्म में बना बना कर प्रयोग करें। तत्पश्चात् रूपोंके दृढ हो जानेपर पाठमें दियेहुये अशुद्धभागको शुद्ध करें। इसतरह करनेसे रूपोंके कंठ करनेकी आवश्यकता न होगी।)

प्रथम पाठ ।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया	कर्त्ता (१)	कर्म (२)	क्रिया (३)
१ । जैनः	जिनं	अर्चति ।	जैनी	जिन भगवानको	पूजता है ।
बालकः	ग्रंथं	पठति ।	बालक	ग्रंथ	पढ़ता है ।
छात्रः	ग्रंथं	लिखति ।	विद्यार्थी	ग्रंथ	लिखता है ।
जनः	अर्थं	इच्छति ।	मनुष्य	धन	चाहता है ।
क्षत्रियः	ग्रामं	रक्षति ।	क्षत्रिय	ग्रामकी	रक्षाकरता है ।
दहनः	वृक्षं	दहति ।	अग्नि	वृक्ष	जलाती है ।
शिष्यः	आश्रमं	गच्छति ।	शिष्य	आश्रमको	जाता है ।
अश्वः	घासं	खादति ।	घोड़ा	घास	खाता है ।
पाठकः	छात्रं	पृच्छति ।	अध्यापक	विद्यार्थीको	पूछता है

---

२ । पुरुषौ	जिनौ	अर्चतः ।	दो पुरुष	दो जिन भगवानको	पूजते हैं ।
बालकौ	ग्रंथौ	पठतः ।	दो बालक	दो ग्रंथ	पढ़ते हैं ।
छात्रौ	ग्रंथौ	लिखतः ।	दो विद्यार्थी	दो ग्रंथ	लिखते हैं ।
बालौ	मोदकौ	इच्छतः ।	दो बालक	दो लड्डू	चाहते हैं ।
क्षत्रियौ	ग्रामौ	रक्षतः ।	दो क्षत्रिय	दो ग्रामकी	रक्षा करते हैं ।
अनलौ	वृक्षौ	दहतः ।	दो अग्नि	दो वृक्षोंको	जलाती हैं ।
शिष्यौ	आश्रमौ	गच्छतः ।	दो विद्यार्थी	दो आश्रमोंको	जाते हैं ।
सिंहौ	मानुषौ	खादतः ।	दो सिंह	दो मनुष्योंको	खाते हैं ।
पाठकौ	प्रश्नौ	पृच्छतः ।	दो अध्यापक	दो प्रश्न	पूछते हैं ।

---

१ । जो क्रियाको करै उसे कर्त्ता कहते हैं । २ । कर्त्ता अपनी क्रियासे जिसको करै उसे कर्म कहते हैं । ३ । कर्त्ताके हलनचलनादिरूप व्यापारको क्रिया कहते हैं । अथवा वाक्यके अर्थको पूर्ण कर दे सो क्रिया है ।

३। बालकाः ग्रंथान् पठंति।	अनेक बालक	अनेक ग्रंथ	पढ़ते हैं।
छात्राः ग्रंथान् लिखंति।	अनेक विद्यार्थी	अनेक ग्रंथ	लिखते हैं।
बालाः मोदकान् इच्छंति।	अनेक बालक	अनेक मोदक	चाहते हैं।
क्षत्रियाः ग्रामान् रचंति।	अनेक क्षत्रिय	अनेक ग्रामोंकी रचा करते हैं।	
पावकाः वृक्षान् दहंति।	अनेक अग्नि	अनेक वृक्षोंको	जलाती हैं।
सज्जनाः आश्रमान् गच्छंति।	अनेक सज्जन	अनेक आश्रमोंको	जाते हैं।
सिंहाः मानुषान् खादंति।	अनेक सिंह	अनेक मनुष्योंको	खाते हैं।
पाठकाः प्रश्नान् पृच्छंति।	अनेक अध्यापक	अनेक प्रश्न	पूछते हैं।

धात्वर्थ(१)

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ(२)	पढना	(पठ् + अ + ति३)	पठति	पठतः	पठंति।
लिख	लिखना	(लिख् + अ + ति)	लिखति	लिखतः	लिखंति।
इषु	चाहना	(इच्छ् + अ + ति)	इच्छति	इच्छतः	इच्छंति।
रच	रचाकरना	(रच् + अ + ति)	रचति	रचतः	रचंति।
दहो	जलाना	(दह् + अ + ति)	दहति	दहतः	दहंति।
गम्लृ	जाना	(गच्छ् + अ + ति)	गच्छति	गच्छतः	गच्छंति।
खादृ	खाना	(खाद् + अ + ति)	खादति	खादतः	खादंति।
प्रच्छो	पूछना	(पृच्छ् + अ + ति)	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छंति।

१। धातु जिस तरहकी लिखी है वैसीही याद करना चाहिये। २। धातु तीन प्रकारकी होती हैं परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। जिस धातुमें ञ् लगा हो वह उभयपदी, जिसमें ऐ अथवा ङ् लगा हो वह आत्मनेपदी और जिसमें ञ् ए ङ् ये न लगे होंवे सब परस्मैपदी है। ३। परस्मैपदी धातुके अन्य पुरुषके एकवचनमें ति, द्विवचनमें तः और बहुवचनमें अंति प्रत्यय लगता है।

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
जिनाः	धर्म	दिशति ।	जिनाः	धर्मं	दिशंति ।
बालकाः	ग्रंथं	पठति ।	बालकाः	ग्रंथं	पठन्ति ।
क्रोधः	पुरुषं	दहतः ।	क्रोधः	पुरुषं	दहति ।
सारसौ	तड़ागं	गच्छंति ।	सारसौ	तडागं	गच्छतः ।
पंडितान्	ग्रंथान्	पठंति ।	पंडिताः	ग्रंथान्	पठंति ।
अनलं	ग्रामं	दहति ।	अनलः	ग्रामं	दहति ।
धार्मिकौ	शिवं	इच्छति ।	धार्मिकः	शिवं	इच्छति ।
बालकः	लाजाः	खादति ।	बालकः	लाजान्	खादति ।
अश्वौ	घासः	खादतः ।	अश्वौ	घासं	खादतः ।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

मूर्खौ, कोट्टपालः, दहति, रक्षतः, गच्छति, नमति, ग्रामं, आचार्याः, ग्रंथान्, पृच्छति, खादति, सेवकान्, क्रीडतः, पठति ।

हिंदी बनाओ—

जैनाः जिनं अर्चंति । गजः तड़ागं गच्छति । जनः स्वर्गं इच्छति । सूपकारः ओदनं पचति (पकाता है) । बुधाः धर्मं इच्छंति । पंडिताः न खेलंति । कर्णधारः (मल्लाह) नदं तरति । भव्याः संसारं तरंति ।

संस्कृत बनाओ—

विद्यार्थी हंसते हैं । धन (अर्थः) सुख देता है (यच्छति) लडका कालिजको (विद्यालय) जाता है । किसान (कृषीवल) अनाज बोता (वपति) है । मेघ समुद्रको जाते हैं ।

		एक०	द्वि०	बहु०
कर्ता	(प्र० वि०)	धर्मः	धर्मौ	धर्माः
कर्म	(द्वि० वि०)	धर्मं	,,	धर्मान्

इसी प्रकार कुल (सर्वादि भिन्न) अकारांत शब्दोंके रूप होते हैं ।

द्वितीय पाठ।

इकारांत पुंलिंग।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१। मुनिः	गिरिं	गच्छति।	मुनि	पर्वतको	जाता है।
ऋषिः	नृपतिं	वदति।	ऋषि	राजाको	कहता है।
अहिः	कपिं	दशति।	सांप	बंदरको	काटता है।
२। मुनी	गिरी	गच्छतः।	दो मुनि	दो पर्वतोंको	जाते हैं।
ऋषी	नृपती	वदतः।	दो ऋषि	दो राजाओंको	कहते हैं।
अही	कपी	दशतः।	दो सांप	दो बंदरोंको	काटते हैं।
३। मुनयः	गिरीन्	गच्छंति।	मुनिलोग	पर्वतोंको	जाते हैं
ऋषयः	नृपतीन्	वदंति।	ऋषि	राजाओंको	कहते हैं
अहयः	कपीन्	दशंति।	सांप	बंदरोंको	काटते हैं।

धात्वर्थ

वद	बोलना	(वद्+अ+ति)	वदति	वदतः	वदंति
दंश	काटना	(दश्+अ+ति)	दशति	दशतः	दशंति

अशुद्ध			शुद्ध		
कपयः	गिरिं	गच्छति।	कपयः	गिरिं	गच्छंति।
मुनिः	यतिं	पृच्छतः।	मुनिः	यतिं	पृच्छति।
अही	भेकान्	खादंति।	अही	भेकान्	खादतः।
कविः	ग्रन्थान्	रचन्ति।	कवयः	ग्रंथान्	रचंति।
ऋषयः	शिष्यान् उपदिशति।		ऋषिः	शिष्यान् उपदिशति।	
अग्नयः	वृक्षान्	दहतः।	अग्नी	वृक्षान्	दहतः।
नृपतिः	मुनयः	वदति।	नृपतिः	मुनीन्	वदति
अहयः	कपिः	दशंति।	अहयः	कपीन्	दशंति

शुद्ध करो—

शिष्य: यतय: अनुगच्छति। अग्नि: धूमं वहंति। जन: मोक्षं इच्छत:। मुनी गच्छंति। यति: जीवं रक्षंति। अतिथि: आलयं आगच्छति। श्रावक: अभक्ष्यं न खादत:। छात्र: सन्मतिं अर्चंति।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

अरय:, यतीन्, मुनि:, विधिं, रवि:, गच्छत:, पठति, दशत:, लिखति, पृच्छंति, निंदति।

संस्कृत बनाओ—

विद्यार्थी गुरुके पीछे पीछे चलता है। श्रावक मुनियोंको पूजते हैं। मुनिलोग धर्मका उपदेश देते हैं (उपदिशंति)। हाथी तलावको जाता है। रामदास दुश्मनको निंदा करता है (निंदति)। नौकर बोझा ढोता (वहति) है। विद्यार्थी गुरुको पूछता है।

एक एक शब्द रखकर इन वाक्योंको पूरा करो—

कमठ: पार्श्वनाथं———, रवि: करं————, श्रावक: मूलगुणं————, यति: धम———, ———निपतंति, नर: ———इच्छति, ———सज्जनं निंदंति।

प्रथमा—मुनि: मुनी मुनय:।

द्वितीया—मुनिं ,, मुनीन्।

तृतीय पाठ।

उकारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	गुरु:	शिशुं	पृच्छति।	गुरु	लड़केको	पूछता है।
	साधु:	मेरुं	गच्छति।	साधु	सुमेरुपर्वतको	जाता है।
	भानु:	अंशुं	विकिरति।	सूरज	किरणको	फैलाता है।
	प्रभु:	तरुं	कृंतति।	स्वामी	वृक्षको	काटता है।

२ गुरू	शिशू	वदतः।	दो गुरु	दो लड़कोंको	कहते हैं।
साधू	मेरू	गच्छतः।	दो साधु	दो सुमेरुपर्वतोंको	जाते हैं।
भानू	अंशू	विकिरतः।	दो सूरज	किरणोंको	फैलाते हैं
प्रभू	तरू	कृंततः।	दो मालिक	दो वृक्षोंको	काटते हैं।
३ गुरवः	शिशून्	चुंबंति।	गुरू	विद्यार्थियोंको	चूमते हैं।
साधवः	मेरून्	गच्छंति।	साधु	मेरुओंको	जाते हैं।
भानवः	अंशून्	विकिरंति।	सूरज	किरणोंको	फैलाते हैं।
प्रभवः	तरून्	कृंतंति।	मालिक	वृक्षोंको	काटते हैं।

अशुद्ध			शुद्ध		
गुरवः	छात्रान्	उपदिशति।	गुरवः	छात्रान्	उपदिशंति।
इंदुः	अंशून्	विकिरंति।	इंदुः	अंशून्	विकिरति।
वैद्यः	बाहवः	कृंतति।	वैद्यः	बाहून्	कृंतति।
विष्णुः	पर्वतं	व्रजतः।	विष्णुः	पर्वतं	व्रजति।
परशुं	वृक्षान्	कृंतति।	परशुः	वृक्षान्	कृंतति।
विभावसुः	तरवः	दहति।	विभावसुः	तरून्	दहति।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

बंधुः, प्रभुः, परशुः, अर्चति, अर्दति, व्रजति, तरुं, विभावसुः, शत्रुः, साधुः, पचति, कारुः, तक्षति।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
क्रदि	रोना	(क्रंद्+अ+ति)	क्रंदति	क्रंदतः	क्रंदंति।
खेल	खेलना	(खेल्+अ+ति)	खेलति	खेलतः	खेलंति।
अर्द	पीड़ादेना	(अर्द्+अ+ति)	अर्दति	अर्दतः	अर्दन्ति।
अर्च	पूजाकरना	(अर्च्+अ+ति)	अर्चति	अर्चतः	अर्चंति।
दिश	आज्ञादेना	(दिश्+अ+ति)	दिशति	दिशतः	दिशंति।

व्रज	चलना	(व्रज् + अ + ति)	व्रजति	व्रजतः	व्रजंति।
कृती	छेदना	(कृंत् + अ + ति)	कृंतति	कृंततः	कृंतंति।
चुबि	चूमना	(चुंब् + अ + ति)	चुंबति	चुंबतः	चुंबंति।
इषु (इच्छ)	इच्छाकरना	(इच्छ् + अ + ति)	इच्छति	इच्छतः	इच्छंति।

संस्कृत बनाओ—

लडका रोता है। दुर्जन सज्जनको दुःख देता है। सूरज चलता है। बढ़ई (कारु) वनको जाता है। मनुष्य साधुओंको पूजते हैं। बंधु बच्चेको चूमते हैं।

एक एक शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

——इंदुं इच्छति, कारुः —— कृंतति, बंधवः —— चुंबंति। —— भानुं अर्चन्ति, —— शत्रुं अर्दति।

उकारान्त पुंलिंग शिशु शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया—	शिशुं	,,	शिशून्

चतुर्थ पाठः।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	गृहीता	दातारं	अर्चति।	लेनेवाला	दाताको	पूजता है।
	वक्ता	श्रोतारं	वदति।	वक्ता	श्रोताको	कहता है।
	भर्ता	कर्तारं	पृच्छति।	स्वामी	कर्ताको	पूछता है।
	जेता	योद्धारं	वदति।	जीतनेवाला	योद्धाको	कहता है।
२	गृहीतारौ	दातारौ	अर्चतः।	दो गृहीता	दो दाताओंको	पूजते हैं।
	वक्तारौ	श्रोतारौ	वदतः।	दो वक्ता	दो श्रोताओंको	कहते हैं।
	भर्तारौ	कर्तारौ	पृच्छतः।	दो स्वामी	दो कर्ताओंको	पूछते हैं।
	जेतारौ	योद्धारौ	वदतः।	दो जीतनेवाले	दो योद्धाओंको	कहते हैं

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
३ गृहीतारः	दातॄन्	अर्चंति।	अनेक गृहीता	अनेक दाताओंको	पूजते हैं।
वक्तारः	श्रोतॄन्	वदंति।	अनेक वक्ता	अनेक श्रोताओंको	कहते हैं।
भर्तारः	कर्तॄन्	पृच्छंति।	अनेक स्वामी	अनेक कर्ताओंको	पूछते हैं।
जेतारः	योद्धॄन्	गदंति।	अनेक जीतनेवाले	अनेक योद्धाओंको	कहते हैं।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वद	कहना	(वद्+अ+ति)	वदति	वदतः	वदंति।
गद	,,	(गद्+अ+ति)	गदति	गदतः	गदंति।
हृ	हरना	(हर्+अ+ति)	हरति	हरतः	हरंति।
स्पृशौ	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशंति।
अर्ह	पूजना	(अर्ह्+अ+ति)	अर्हति	अर्हतः	अर्हंति।
रक्ष	रक्षा करना	(रक्ष्+अ+ति)	रक्षति	रक्षतः	रक्षंति।
(उप)दिशौञ्	उपदेशदेना	(दिश्+अ+ति)	दिशति	दिशतः	दिशंति।
कृती	छेदना (काटना)	(कृंत्+अ+ति)	कृंतति	कृंततः	कृंतंति।
अर्द	पीड़ादेना	(अर्द्+अ+ति)	अर्दति	अर्दतः	अर्दंति।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
जेतारः	योद्धॄन्	गदति।	जेतारः	योद्धॄन्	गदंति।
श्रोता	वक्तारं	वदतः।	श्रोता	वक्तारं	वदति।
भर्तारौ	भृत्यं	आदिशंति।	भर्तारौ	भृत्यं	आदिशतः।
गृहीता	दातां	अर्चति।	गृहीता	दातारं	अर्चति।
दोग्धा	कर्तारः	पृच्छति।	दोग्धा	कर्तारं	पृच्छति।
भर्तारः	हर्ता	गदंति।	भर्तारः	हर्तारं	गदंति।
उपदेष्टारः	श्रोतारं	गदति।	उपदेष्टा	श्रोतारं	गदति।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
हर्तारः	ग्रंथान्	हरति।	हर्ता	ग्रंथान्	हरति।
भर्ता	भृत्यान्	रचंति।	भर्तारः	भृत्यान्	रचंति।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

अर्हंति, जेतारः, कर्ता, हर्तारौ, दोग्धॄन्, अंचति, अर्हति, भर्तारं, अर्चंतः, पृच्छंति, जेतॄन्, गदतः, वदति।

शुद्ध करो—

भेत्ता घटं स्पृशंति। बोद्धारः ज्ञातान् पृच्छति। साधुः श्रोतॄन् उपदिशतः। सविता (सूर्य) गिरिं स्पृशंति। प्रभुः हंतां अर्दति। श्रोतारः गुरुं अर्चंतः। जेतारौ वक्तारः पृच्छंति। परशुः तरून् कंतंति।

संस्कृत बनाओ—

दाता गरीबको पूछता है। गरीब दाताको पूजा करता है। मालिक चौर (हर्तृ)को पिछारो करता है। पूछनेवाला (पृष्टृ) गुरुको पूछता है। विद्यार्थी गुरूको पूजा करता है। तोला (मातृ) बाजार (हाट)को जाता है।

		एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	—	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	—	दातारं	,,	दातॄन्

पंचम पाठ।

व्यंजनांत पुंलिंग।

चकारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	जलमुक्	गिरिं	स्पृशति।	मेघ	पर्वतको	छूता है।
	बालकः	जलमुचं	पश्यति।	बालक	मेघको	देखता है।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
पवनः	जलमुचं	विकिरति।	हवा	मेघको	फैलाती है।
पयोमुक्	चातकं	अवति।	मेघ	चातकको	संतुष्ट करता है।
चातकः	पयोमुचं	कांक्षति।	चातक	मेघको	चाहता है।
२ जलमुचौ	गिरी	स्पृशतः।	दो मेघ	दो पर्वतोंको	छूते हैं।
वातः	जलमुचौ	विकिरतः।	हवा	दो मेघोंको	बिखेरती है।
जलमुचौ	चातकं	अवतः।	दो मेघ	चातकको	संतुष्ट करते हैं।
३ वारिमुचः	गिरिं	स्पृशंति।	अनेक मेघ	पर्वतको	छूते हैं।
चातकाः	वारिमुचः	कांक्षंति।	अनेक चातक	अनेक मेघोंको	चाहते हैं।
पवनः	पयोमुचः	विकिरति।	हवा	अनेक मेघोंको	वर्षाती है।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

पयोमुक्, वारिमुचः, पर्वतं, अवतः, कांक्षंति, पश्यति, जलमुचं, अंचतः, विकिरति, स्पृशतः।

शुद्ध करो—

चातकः वारिमुच् कांक्षति। जलमुचः चातकान् अवति। पयोमुचौ पर्वतं स्पृशति। वायुः पयोमुक् अर्दति।

एक एक शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

——पयोमुचं पश्यंति। पयोमुक् —— अवति।—— जलमुचः——। ——जलं विकिरति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा —	जलमुक् (ग्)	जलमुचौ	जलमुचः
द्वितीया —	जलमुचं	„	„

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
काक्षि	चाहना	(कांक्ष्+अ+ति)	कांक्षति	कांक्षतः	कांक्षंति।
अव	संतुष्टकरना	(अव्+अ+ति)	अवति	अवतः	अवंति।

दृशिरौ (पश्य) देखना (पश्य्+अ+ति) पश्यति पश्यतः पश्यंति।
कॄ विखेरना (किर्+अ+ति) किरति किरतः किरंति।

षष्ठ पाठ।

जकारांत।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया	कर्त्ता	कर्म	क्रिया
१ सम्राट्	परिव्राजं	अर्चति।	सम्राट्	संन्यासीको	पूजा करता है।
नृपः	सम्राजं	अवति।	राजा	सम्राट्को	संतुष्ट करता है।
महीपः	रज्जुसृजं	वदति।	राजा	रज्जुनिर्माताको	कहता है।
२ सम्राजौ	हंतारं	अर्दतः।	दो सम्राट्	हंताको	पीड़ा देते हैं।
सम्राट्	परिव्राजौ	अर्चति।	सम्राट्	दो संन्यासियोंको	पूजता है।
३ सम्राजः	परिव्राजं	अर्चंति।	अनेक सम्राट्	संन्यासीको	पूजते हैं।
नृपाः	देवराजः	अर्चंति।	अनेक राजा	अनेक इंद्रोंको	पूजते हैं।
भूपाः	सम्राजः	अवंति।	राजालोग	सम्राटोंको	संतुष्ट करते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

सम्राट्, परिव्राजं, देवराजौ, नृपः, रज्जुसृजः, अवति, कांक्षति, पश्यतः, राजराट्, गच्छंति, अंचंति।

नीचे लिखे वाक्योंको शुद्ध करो—

रज्जुसृट् रज्जं सृजंति। कंसपरिमृजौ नगरं गच्छति। देवेजौ देवान् अर्चंति। विभ्राट् कर्तारं वदतः।

एक एक शब्द रखकर वाक्य बनाओ—

——रज्जुं सृजति। जनाः देवेजं———। राजराट्——— गच्छति। मनुष्याः———अर्चंति। ———धर्मं उपदिशतः।

संस्कृत बनाओ—

जीव कर्मको (देव) बनाता है। दो संन्यासी ग्रामको जाते हैं। चक्रवर्ती (सम्राट्) राज्यकी रक्षा करता है। देव इन्द्रको पूजते हैं।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
सृज	बनाना	(सृज्+अ+ति)	सृजति	सृजतः	सृजंति।
अंच	जाना, पूजना	(अंच्+अ+ति)	अंचति	अंचतः	अंचंति।
अव	रक्षा करना, संतुष्टकरना	(अव्+अ+ति)	अवति	अवतः	अवंति।
व्रज	जाना	(व्रज्+अ+ति)	व्रजति	व्रजतः	व्रजंति।
रिष	हिंसा करना	(रिष्+अ+ति)	रिषति	रिषतः	रिषंति।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा —	सम्राड् (ट्)	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया—	सम्राजं	,,	,,

सप्तम पाठ।

तकारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	भूभृत्	पयोमुचं	पश्यति।	राजा	मेघको	देखता है।
	पापकृत्	पुण्यकृतं	निंदति।	पापी	पुण्यात्माकी	निंदा करता है।
	विपश्चित्	तीर्थकृतं	अर्चति।	विद्वान्	जिनेंद्रको	पूजता है।
२	वारिमुक्	भूभृतौ	कुवति।	मेघ	दो पर्वतोंको	ढकता है।
	विपश्चितौ	वनं	व्रजतः।	दो विद्वान्	वनको	जाते हैं।
	पुण्यकृतौ	स्वर्गं	गच्छतः।	दो पुण्यात्मा	स्वर्गको	जाते हैं।
३	विपश्चितः	बालकान्	पृच्छंति।	विद्वान् लोग	बालकोंको	पूछते हैं।
	जलमुचः	भूभृतः	कुवंति।	मेघ	पर्वतोंको	आच्छादन करते हैं।
	पापकृतः	नरकं	गच्छंति।	पापी	नरक	जाते हैं।

अशुद्ध			शुद्ध		
जलमुचः	भूभृतं	कुर्वति।	जलमुक्	भूभृतं	कुर्वति।
भूभृत्	जनान्	रक्षंति।	भूभृतः	जनान्	रक्षंति।
जनाः	विपश्चित्	पृच्छंति।	जनाः	विपश्चितं	पृच्छंति।
विपश्चित्	भूभृत्	अनुगच्छति।	विपश्चित्	भूभृतं	अनुगच्छति।
गोत्रभित्	पर्वतं	अर्दतः।	गोत्रभित्	पर्वतं	अर्दति।
मूढ़ाः	विपश्चित्	रिषंति।	मूढाः	विपश्चितं	रिषंति।

एक एक शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

———आकाशं कुर्वंति। पवनः—विकिरति। —सुखं कांक्षति। मुनयः भूभृतः———। गृहोता———अर्चति। विपश्चित्———गच्छति। सम्राट्———रिषति। भूभृत्———स्पृशति। देवेट् ——अर्चति।

संस्कृत बनाओ—

मेघ पहाड़ोंको आच्छादन करते हैं। विद्वान् लोग धर्मका उपदेश देते हैं। वृक्ष मेघोंको छूते हैं। हिंसक पशुओंको मारते हैं। पुण्य-करनेवाले स्वर्गको जाते हैं। राजा पापियोंको मारता है। पंडित संसारको संतुष्ट करते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा —	भूभृत् (द्)	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया —	भूभृतं	,,	,,

अष्टम पाठः।

म (व) त् भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	धीमान्	गुणवंतं	अर्चति।	बुद्धिमान्	गुणवानकी	पूजता है।
	विद्यावान्	धनवंतं	गच्छति।	विद्यावाला	धनवान्के पास	जाता है।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
नेत्रवान्(१)	कंटकं	पश्यति।	नेत्रवाला	कांटेको	देखता है।
तडित्वान्	ज्योतिष्मंतं	कुवति।	मेघ	सूर्यको	ढकता है।
धनवान्	बुद्धिमंतं	वदति।	धनाढ्य	बुद्धिमानको	कहता है।
भास्वान्	प्रकाशं	यच्छति।	सूरज	प्रकाशको	देता है।
२ धीमंतौ	यशस्वंतौ	पश्यतः।	दो बुद्धिमान	यशस्वीको	देखते हैं।
महीपः	तडित्वंतौ	पश्यति।	राजा	दो मेघोंको	देखता है।
बलवंतौ	ग्रामं	गच्छतः।	दो बलवान्	गांवको	जाते हैं।
चक्षुष्मंतौ	ग्रंथं	पश्यतः।	दो चक्षुष्मान्	पुस्तकको	देखते हैं।
३ धीमंतः	गुणवतः	अर्चंति।	बुद्धिमान् (अनेक)	गुणवानोंको	पूजते हैं।
धनवंतः	विद्यावतः	गच्छंति।	धनवाले	विद्यावालोंके पास	जाते हैं।
नेत्रवंतः	कंटकान्	पश्यंति।	नेत्रवाले	कांटोंको	देखते हैं।
ज्ञानवंतः	छात्रान्	उपदिशंति।	ज्ञानवाले	छात्रोंको	उपदेश देते हैं।

अशुद्ध			शुद्ध		
बुद्धिमान्	भास्वान्	पश्यति।	बुद्धिमान्	भास्वंतं	पश्यति।
धनवान्	गुणवंतं	अर्चंति।	धनवंतः	गुणवंतं	अर्चंति।
दयावान्	स्वर्गं	गच्छतः।	दयावन्तौ	स्वर्गं	गच्छतः।
धीमतः	ग्रंथान्	पठंति।	धीमंतः	ग्रंथान्	पठंति।
लुब्धकाः	धनवंतः	अर्चंति।	लुब्धकाः	धनवतः	अर्चंति।

---

१ शब्दोंके अन्तमें मत् लगा देनेसे इस प्रत्ययके रूप बनते हैं और उसका (वाला) अर्थ होता है। जैसे गो शब्दके अन्तमें मत् लगाया तो गोमत् हुआ। जिसका कि अर्थ—गाय-वाला होता है। लेकिन जिन शब्दोंके अंतमें अथवा अन्तके अक्षरसे पहले 'अ' अथवा 'म्' होगा तो मत्के मकारके स्थानमें वकार हो जायगा। जैसे—विद्या+मत्=विद्यावत्, भास्+मत्=भास्वत्, अहम्+मत्=अहंवत्, शमी+मत्=शमीवत्।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

धनवतः, अंशुमंतं, (सूरज) वपुष्मान्, कृपावन्तौ, भास्वान्, ज्योतिष्मंतौ, चरतः, पश्यन्ति, ज्ञानवान्, श्मश्रुमंतः (डाढीवाले) तडित्वंतः। (१)

संस्कृत बनाओ—

धनाढ्योंको संसार पूजता है। सूरजको उलूक (घूक) नहीं देखते हैं। ज्योतिष देव चलते हैं। ज्ञानी पुस्तक पढ़ता है। डाढ़ीवाले (श्मश्रुमत्) जाते हैं। मेघ पर्वतोंको ढाकते हैं।

मत् प्रत्ययान्त धीमत् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	धीमान्	धीमंतौ	धीमंतः
द्वितीया—	धीमंतं	,,	धीमतः

नवम पाठ।

अत् (शतृ) प्रत्ययांत। (२)

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	गायन्	रुदंतं	वदति।	गानेवाला	रोतेहुयेको	कहता है।
	नृपः	गायंतं	अर्हति।	राजा	गाते हुये (जन)की	प्रशंसा करता है।

१ जिन शब्दोंके अन्तमें वर्गका पहिला, दूसरा, तीसरा और चौथा अक्षर हो उन शब्दोंके बादके मत्के मकारको भी वकार हो जाता है।

२ भ्वादिगण और तुदादिगणकी धातुओंके प्रथमपुरुष की (वदति आदि) क्रियाके एक वचनमें 'ति'के स्थानमें त् कर देने से इस प्रत्ययके रूप बनते हैं। जैसे कि—पठ धातुका पठति, रूप बनता है उसके 'ति'के स्थानमें 'त' करदेनेसे पठत् रूप बनता है। अब इसके रूप कर्ता आदिमें पठन्, पठंतौ पठंतः, इत्यादि होंगे।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
गच्छन्	आश्रमं	पश्यति।	जाता हुआ (आदमी) आश्रमको देखता है।		
ध्यायन्	ईश्वरं	स्मरति।	ध्यान करता हुआ (जन) ईश्वरको चितारता है।		
पठन्	पुस्तकं	पश्यति।	पढ़ता हुआ (आदमी) पुस्तकको देखता है।		
२ गायंतौ	रुदंतौ	वदतः।	दोगानेवाले (आदमी) दोजनेरोतेहुओंको कहते हैं।		
महीपतिः	गायंतौ	अंचतः।	राजा गातेहुये दो जनोंका सत्कार करता है।		
गच्छंतौ	तृणं	स्पृशतः।	चलते हुये दो जने तृणको छूते हैं।		
ध्यायंतौ	जिनं	स्मरतः।	ध्यान करते हुये दोजने जिनको याद करते हैं		
पठंतौ	ग्रंथान्	पश्यतः।	पढते हुये दोजने ग्रन्थोंको देखते हैं।		
३ गायंतः	रुदतः	वदंति।	गाते हुये बहुतसे जन रोते हुओंको कहते हैं।		
नराधिपः	गायतः	पश्यति।	राजा गाते हुये बहुत जनोंको देखता है।		
अदंतः	कथां	गदंति।	खाते हुये (बहुत जने) कथा कहते हैं।		
ध्यायंतः	जिनं	स्मरंति।	ध्यान करते हुये बहुतजन जिनको याद करते हैं		

अशुद्ध।			शुद्ध।		
नृपः	गायंतः	पृच्छति।	नृपः	गायतः	पृच्छति।
तिष्ठतः	कथां	गदंति।	तिष्ठंतः	कथां	गदंति।
चलन्	वृक्षान्	स्पृशंति।	चलंतः	वृक्षान्	स्पृशंति।
जानंतौ	अशुद्धिं	वदति।	जानन्	अशुद्धिं	वदति।
अदन्	मुधा	हसतः।	अदंतौ	मुधा (व्यर्थ)	हसतः।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

गच्छतः, इच्छन्, स्मरंतौ, अंचति, किरतः, पृच्छतः, वदन्, ध्यायन्, गायतः।

संस्कृत बनाओ—

लड़के गाते गाते जाते हैं। मूर्ख खाते खाते हंसते हैं। पार्श्वदास कहते कहते हंसता है। राम पढते पढते पूंछता है। शृगाल जाते हुये मृगको देखता है। नाई (नापित) रोता हुआ पैसे मांगता है।

वाक्य पूरे करो—

——	विलपंतं	गदति।	देवदत्तः	——	पृच्छति
गुरुः	पठंतं	——।	सेवकः	——	वांछति।

अत् (शतृ) प्रत्ययांत गायत् शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गायन्	गायंतौ	गायंतः
द्वितीया—	गायंतं	,,	गायतः

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लप	कहना	(लप्+अ+ति)	लपति	लपतः	लपंति।
वाछि	चाहना	(वांछ्+अ+ति)	वांछति	वांछतः	वांछंति।
गद	कहना	(गद्+अ+ति)	गदति	गदतः	गदंति।
गै	गाना	(गाय्+अ+ति)	गायति	गायतः	गायंति।
ध्यै	ध्यानकरना	(ध्याय्+अ+ति)	ध्यायति	ध्यायतः	ध्यायंति।
स्मृ	यादकरना	(स्मर्+अ+ति)	स्मरति	स्मरतः	स्मरंति।
अर्ह	पूजाकरना	(अर्ह्+अ+ति)	अर्हति	अर्हतः	अर्हंति।
दृशिरौ	देखना	(पश्य्+अ+ति)	पश्यति	पश्यतः	पश्यंति।
अंच	जाना-पूजना	(अंच्+अ+ति)	अंचति	अंचतः	अंचंति।
स्पृश	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशंति।

दशमपाठ।

द कारांत।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया	कर्त्ता	कर्म	क्रिया
१ दुर्हृद्	उद्भिदं	पश्यति।	शत्रु	उद्भिदको	देखता है।
मानवः	दिविषदं	अंचति।	मनुष्य	देवको	पूजता है।
दिविषत्	जनान्	आदिशति।	देव	मनुष्योंको	आज्ञा देता है।
सभासत्(द्)	सभासदं	गदति।	सभासद	सभासदको	कहता है।
२ उद्भिदौ	वृष्टिं	कांक्षतः।	दो उद्भिद	वृष्टिको	चाहते हैं।
मानवः	दिविषदौ	अंचति।	मनुष्य	दो देवोंको	पूजता है।
सभासदौ	सभासदौ	पृच्छतः।	दो सभासद	दो सभासदोंको	पूछते हैं।
सुहृदौ	सुहृदौ	रक्षतः।	दो मित्र	दो मित्रको	रक्षा करते हैं।
३ उद्भिदः	वृष्टिं	कांक्षंति।	बहुतसे उद्भिद	वर्षाको	चाहते हैं।
मानवाः	दिविषदः	अंचंति।	मनुष्य	देवोंको	पूजा करते हैं।
सभासदः	सभासदः	पृच्छंति।	सभासद	सभासदोंको	पूछते हैं।
सुहृदः	सुहृदः	पश्यन्ति।	मित्र	मित्रोंको	देखते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
सुहृदः	पर्वतं	गच्छति।	सुहृदः	पर्वतं	गच्छंति।
उद्भिदौ	वायुं	कांक्षति।	उद्भिद्	वायुं	कांक्षति।
वृष्टिः	उद्भिदान्	सिंचति।	वृष्टिः	उद्भिदः	सिंचति।
सभासदः	परस्परं	वदतः।	सभासदौ	परस्परं	वदतः।
दुर्हृद	वार्त्तां	वदंति।	दुर्हृदः	वार्तां	वदंति।
दिविषद	जिनान्	अर्चति।	दिविषदः	जिनान्	अर्चंति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

निरापद्, दुर्हृदः, सुहृद्, सभासद, विपद्, दिविषदौ।

नीचे लिखे वाक्योंको शुद्धकरो—

निरापदान् विपन्नान् निंदंति। दुहृत् नरं क्रंतत:।
दिविषद् जिनं अर्चंति। उद्भिद् वृष्टिं कांचत:।

संस्कृत बनाओ—

मित्र मित्रको रक्षा करता है। शत्रु मित्रको निंदा करता है। आपत्तिको मनुष्य नहीं चाहता है। विपत्ति मनुष्योंको सताती है। उद्भिद् मेघको चाहते हैं। सभासद् सभाको जाते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	सुहृत्	सुहृदौ	सुहृद:
द्वितीया—	सुहृदम्	,,	,,

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
दिशीञ्	आज्ञादेना	(दिश् + अ + ति)	दिशति	दिशत:	दिशंति।
काक्षि	चाहना	(कांक्ष् + अ + ति)	कांक्षति	कांक्षत:	कांक्षंति।
षिचीञ्	सींचना	(सिंच् + अ + ति)	सिंचति	सिंचत:	सिंचंति।
णिदि	निंदा करना	(निंद् + अ + ति)	निंदति	निंदत:	निंदंति।
तुदीञ्	पीड़ा देना	(तुद् + अ + ति)	तुदति	तुदत:	तुदंति।
व्रज	जाना	(व्रज् + अ + ति)	व्रजति	व्रजत:	व्रजंति।

एकादश पाठ।

अन् भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	राजा	मूर्धानं	कृंतति।	राजा	शिरको	काटता है।
	सम्राट्	राजानं	अर्दति।	सम्राट्	राजाको	पीड़ा देता है।
	राजा	राजानं	गच्छति।	राजा	राजाके पास	जाता है।
	तक्षा	वृषाणं	पश्यति।	बढ़ई	घोड़ेको	देखता है।
२	राजानौ	मूर्धानौ	कृंततः।	दो राजा	दो शिरको	काटते हैं।
	सम्राट्	राजानौ	अर्दतः।	सम्राट्	दो राजाओंको	पीड़ा देते हैं।
	राजानौ	राजानौ	गच्छतः।	दो राजा	दो राजाओंके पास	जाते हैं।
	तक्षाणौ	वृषाणौ	पश्यतः।	दो बढ़ई	दो घोड़ोंको	देखते हैं।
३	राजानः	सम्राजं	अर्चंति।	राजालोग	सम्राट्को	पूजते हैं।
	सम्राट्	राज्ञः	अर्दति।	सम्राट्	राजाओंको	पीड़ा देता है।
	राजानः	राज्ञः	गच्छंति।	राजा	राजाओंके पास	जाते हैं।
	तक्षाणः	वृष्णः	पश्यंति।	बढ़ई	सांडोंको	देखते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
राजानः	पर्वतं	व्रजतः।	राजानौ	पर्वतं	व्रजतः।
सम्राट्	राजानः	अर्दति।	सम्राट्	राज्ञः	अर्दति।
बालकः	प्रेमौ	इच्छति।	बालकः	प्रेमाणं	इच्छति।
नृपः	गरिमां	कांक्षति।	नृपः	गरिमाणं	कांक्षति।
मुनिः	मूर्धानं	स्पृशतः।	मुनी	मूर्धानं	स्पृशतः।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

गरिमा, मूर्धानं, राज्ञः, तक्षाणौ, प्रेमाणं, देवनंदिनामानं अर्चंति, मुंचतः, प्रेमा।

संस्कृत बनाओ—

राजा प्रजाकी रक्षा करते हैं। मुनि बडप्पनकी निन्दा करते हैं। बालक पुस्तक चाहता है। बढई घोडेको देखता है। प्रेमको मनुष्य चाहते हैं। पूज्यपाद नामके आचार्यकी वैयाकरण प्रशंसा करते हैं (प्रशंसंति)। सुधर्माचार्यको श्रेणिक पूछता है।

शुद्ध करो—

प्रजा राजां अर्चति। सुधर्माचार्यौ महावीरं पृच्छति। प्रेमा जनं इच्छंति। मुनिः गरिमां निन्दति।

अन् भागांत राजन् शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया—	राजानं	,,	राज्ञः

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अर्द	पीड़ादेना	(अर्द्+अ+ति)	अर्दति	अर्दतः	अर्दंति।
मुच्लृ्	छोडना	(मुंच्+अ+ति)	मुंचति	मुंचतः	मुंचंति।
शंस (१)	कहना	(शंस्+अ+ति)	शंसति	शंसतः	शंसंति।

---

१ प्रपूर्वक शंसधातुका अर्थ प्रशंसा करना होता है।

द्वादश पाठ।

अन् भागांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ शर्मा	ब्रह्माणं	अर्चति।	ब्राह्मण	ब्रह्माको	पूजता है।
यज्वा	इंद्रं	अंचति।	पुरोहित	इन्द्रको	पूजता है।
द्विजन्मा	सुधर्माणं	नमति।	ब्राह्मण	सुधर्माको	नमता है।
२ द्विजन्मानौ ग्रंथान्		पठतः।	दो ब्राह्मण	ग्रंथोंको	पढते हैं।
यज्वानौ	द्विजन्मानौ	पृच्छतः।	दो पुरोहित	दोविप्रोंको	पूछते हैं।
इंद्रः	यज्वानौ	रिषति।	इंद्रः	दो पुरोहितोंपर	क्रोध करता है।
३ द्विजन्मानः ग्रंथान्		पठंति।	द्विज	ग्रन्थोंको	पढते हैं।
यज्वानः	द्विजन्मनः	पृच्छंति।	पुरोहित	ब्राह्मणोंको	पूछते हैं।
इंद्रः	यज्वनः	रिषति।	इन्द्र	पुरोहितोंपर	क्रोध करता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे संस्कृत बनाओ—

यज्वा, द्विजन्मानं, अश्मानौ (पत्थर), ब्रह्मा, दुरात्मानः, पापात्मनः, चरंति, अणति, यज्वानः।

संस्कृत बनाओ—

राजा पुरोहितको पूजता है। लोग ब्रह्माको पूजते हैं। द्विज ग्रन्थोंको पढते हैं। ब्राह्मण दाताओंका सम्मान करते हैं। पुरोहित यज्ञ (यजंति) करते हैं। पापोलोग धर्मात्माओंको निन्दा करते हैं। राजा पापियोंको दंड देता है।

शुद्ध करो—

कर्ता यज्वा अर्दति, राजा पापात्मां निन्दति, प्रभुः द्विजन्मः अर्दति, जनाः अश्माना अंचति, साधुः पापात्मनौ उपदिशति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	यज्वा (१)	यज्वानौ	यज्वानः
द्वितीया—	यज्वानं	,,	यज्वनः

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
णमौ	नमस्कारकरना	(नम्+अ+ति)	नमति	नमतः	नमंति।
रिष	क्रोधकरना	(रिष्+अ+ति)	रिषति	रिषतः	रिषंति।
चर	खाना, चलना	(चर्+अ+ति)	चरति	चरतः	चरंति।
अण	देना	(अण्+अ+ति)	अणति	अणतः	अणंति।
यजीञ्	यागकरना	(यज्+अ+ति)	यजति	यजतः	यजंति।
हृ (२)	हरण करना	(हर्+अ+ति)	हरति	हरतः	हरंति।

त्रयोदश पाठ।

इन्-भागांत। (३)

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	धनी	बलिनं	वदति।	धनी	बलीको	कहता है।
	यशस्वी	तपस्विनं	गच्छति।	यशस्वी	तपस्वीके पास	जाता है।

---

१ जिन अन्‌भागांत शब्दोंके अन्तमें 'म' और 'न' संयुक्त होंगे उनके रूप यज्वन् शब्दके समान होंगे जैसे आत्मन्, सुपर्वन् आदि। बाकीके राजन् शब्दके समान। (२) प्र परा आदि उपसर्गोंके लगनेसे प्रायः धातुका अर्थ बदल जाता है जैसे प्र-हृ—मारना, विहृ—विहार करना आदि। (३) अकारांत शब्दोंसे (वाला) अर्थमें 'इन्' प्रत्यय होता है जैसे कि—धनवाला अर्थमें धन+इन=धनिन आदि।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
करी	स्वामिनं	स्पृशति।	हाथी	मालिकको	छूता है।
पक्षी	कोटरं	गच्छति।	पक्षी	खोलारको	जाता है।
ज्ञानी	विषयिणं	निंदति।	ज्ञानी	विषयीकी	निन्दा करता है।
२ मंत्रिणौ	राजानं	अर्चतः।	दो मंत्री	राजाको	पूजते हैं।
राजा	करिणौ	यच्छतः।	राजा	दो हाथी	देता है।
मानवाः	ज्ञानिनौ	अर्चतः।	मनुष्य	दो ज्ञानियोंको	पूजते हैं।
मेधाविनौ	विषयिणौ	निंदतः।	बुद्धिमान	दो विषयियोंकी	निन्दाकरते हैं।
तपस्विनौ	राजानं	उपदिशतः।	दो तपस्वी	राजाको	उपदेश देते हैं।
३ पक्षिणः	अन्नं	खादंति।	बहुत पक्षी	अन्नको	खाते हैं।
विषयिणः	गुणिनः	निंदंति।	विषयीलोग	गुणियोंकी	निन्दाकरते हैं।
तपस्विनः	ध्यानं	इच्छंति।	तपस्वीलोग	ध्यानको	चाहते हैं।
ध्यानिनः	वनं	व्रजन्ति।	ध्यानीलोग	बनको	जाते हैं।
बलिनः	धनिनः	गच्छंति।	बली लोग	धनियोंके पास	जाते हैं।

संस्कृत बनाओ—

ध्यानिनः, वांछंति, गुणिनं, पक्षिणौ, स्वामिनः, यच्छतः, मेधावी, तपस्विनं, मरीचमालिनं, मंत्रिणौ, करिणः।

एक एक शब्द रखकर इन वाक्योंको पूराकरो—

——तंडुलान् खादंति, विषयिणः——निंदंति, ज्ञानिनः ध्यानिनं——, ——अर्थं श्रृणंति, राजा——वदति, स्वामी करिणं——, द्रोहिणः——चरंति, मुनयः मानिनं——, एकाकी——चटति।

शुद्ध करो—

राजा अपराधि रिपति, ज्ञानिनं ध्यानिनं पृच्छति, ध्यानिनौ पापं त्यजन्ति, तपस्वी राजानं उपदिशंति, धनी बली कांक्षति।

संस्कृत बनाओ—

धनाढ्य लोग ज्ञानियोंको निन्दा करते हैं। बलवान् लोग घरको जाते हैं। मंत्री राजाको पूजते हैं। पापी पक्षियोंको खाते हैं। यशस्वी मनुष्योंको निन्दा नहीं करते हैं।

इन्-भागांत तपस्विन् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	तपस्वी	तपस्विनौ	तपस्विनः
द्वितीया—	तपस्विनं	,,	,,

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अट	जाना	(अट्+अ+ति)	अटति	अटतः	अटंति।
दाण्	देना	(यच्छ्+अ+ति)	यच्छति	यच्छतः	यच्छंति।
स्पृशी	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशंति।

त्रयोदश पाठ।

अस्-भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	चंद्रमाः	प्रकाशं	यच्छति।	चन्द्रमा	उजाला	देता है।
	मानवः	दिवौकसं	अर्चति।	मनुष्य	देवको	पूजता है।
	व्याधः	विहायसं	कांक्षति।	व्याधा	पक्षीको	चाहता है।
	बालः	चंद्रमसं	पश्यति।	लड़का	चंद्रमाको	देखता है।
	वेधाः	ग्रामं	गच्छति।	पंडित	ग्रामको	जाता है।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म्म	क्रिया।
२	जनः	दिवौकसौ	अर्चति।	मनुष्य	दो देवोंको	पूजता है।
	वनौकसौ	वनं	व्रजतः।	दो जङ्गली	जङ्गलको	जाते हैं।
	विहायसौ	नीडं	अटतः।	दो पक्षी	घोंसलाको	जाते हैं।
	व्याधः	विहायसौ	कांक्षतः।	व्याध	दो पक्षीयोंको	चाहता है।
	भिक्षुकाः	उदारचेतसौ	यजतः	भिखारी	दो उदारचेताओंको	पूजते हैं।
३	उदारचेतसः	अर्थं	यच्छंति।	उदारचित्तवाले	धन	देते हैं।
	व्याधः	विहायसः	कांक्षति।	व्याध	पक्षियोंको	चाहता है।
	महामनसः	सज्जनान्	प्रशंसंति।	महामनवाले	सज्जनोंकी	प्रशंसाकरते हैं।
	जनाः	दिवौकसः	अर्चंति।	मनुष्य	देवोंको	पूजते हैं।
	भिक्षुकाः	उदारचेतसः	गच्छंति	भिखारी	उदारोंके पास	जाते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
इन्द्रः	प्रचेतः	निंदति।	इन्द्रः	प्रचेतसं	निंदति।
बालः	चन्द्रमां	पश्यति।	बालः	चंद्रमसं	पश्यति।
दिवौकाः	जिनं	अर्चति।	दिवौकसः	जिनं	अर्चंति।
वनौकौ	वनं	गच्छति।	वनौकाः	वनं	गच्छति।
महामनाः	तपस्विनं	अर्हतः।	महामनसौ	तपस्विनं	अर्हतः।
जनाः	दिवौकाः	अर्चंति।	जनाः	दिवौकसः	अर्चंति।
विहायाः	आकाशं	गच्छंति।	विहायसः	आकाशं	गच्छंति।
उन्मनसौ	सुखं	त्यजंति।	उन्मनसः	सुखं	त्यजंति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

वनौकाः, दिवौकसः, त्यजंति, प्रशंसंति, प्रचेतसं, विहायाः, वेधाः, महमनसं, उन्मनसौ, उदारचेतसः, कांक्षतः, अणति।

शुद्ध करो—

नृपः वेधां पृच्छति, विहायसौ निवसन्ति, इन्द्रः प्रचेताः रिषति, चंद्रमौ प्रकाशं यच्छति, महामनः ध्यानिनं पृच्छति।

संस्कृत बनाओ—

उदारचित्तवाले धन देते हैं। ब्रह्माको ब्राह्मण पूजते हैं। वरुण स्वर्गको जाता है। जङ्गली जङ्गलको छोड़ता है। पक्षी आकाशको जाते हैं। मेह चन्द्रमाको ढाकता है (आच्छादयति) लड़के चन्द्र-माको देखते हैं। दुर्वासा शकुन्तलाको शाप देता है (शपति)।

वेधस् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
द्वितीया—	वेधसं	,,	,,

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
याचृञ्	मांगना	(याच्+अ+ति)	याचति	याचतः	याचंति।
शपीञ्	शापदेना	(शप्+अ+ति)	शपति	शपतः	शपंति।
वसो	निवासकरना	(वस्+अ+ति)	वसति	वसतः	वसंति।

चतुर्दश पाठ।

वस् भागांत।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१ विद्वान्	ग्रंथं	मनति।	विद्वान्	ग्रंथको	मनन करता है।
मेधावी	विद्वांसं	अनुव्रजति।	बुद्धिमान्	विद्वान्के	पीछे चलता है।
गच्छंतः	तस्थिवांसं	पश्यंति।	जातेहुये	बैठेहुयोंको	देखते हैं।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया
जग्मिवान्	पुष्पं	जिघ्रति।	जानेवाला	फूलको	सूंघता है।
तस्थिवान्	जग्मिवांसं	पृच्छति।	बैठा हुआ	जाते हुयेको	पूछता है।
२ विद्वांसौ	ग्रंथान्	मनतः।	दो विद्वान्	ग्रन्थोंको	मनन करते हैं।
राजा	विद्वांसौ	पृच्छति।	राजा	दो विद्वानोंको	पूछता है।
जग्मिवांसौ	तस्थिवांसौ	पश्यतः।	जानेवाले	दो बैठे हुयोंको	देखते हैं।
तस्थिवांसौ	पुष्पं	जिघ्रतः।	दो बैठे हुये	फूल	सूंघते हैं।
मेधावी	पेचिवांसौ	पृच्छति।	बुद्धिमान्	दो पकाते हुयोंको	पूछता है।
३ विद्वांसः	धर्मं	उपदिशंति।	विद्वान् लोग	धर्मका	उपदेश देते हैं।
नृपः	विदुषः	पृच्छति।	राजा	विद्वानोंको	पूछता है।
जग्मिवांसः	तस्थुषः	पश्यंति।	जानेवाले	बैठे हुयोंको	देखते हैं।
तस्थिवांसः	जग्मुषः	पृच्छंति।	बैठे हुये लोग	जाते हुयोंको	पूछते हैं।
शुश्रुवांसः	ग्रामं	गच्छंति।	सुननेवाले	ग्रामको	जाते हैं।
छात्राः	पेचुषः	गदंति।	विद्यार्थी	पकानेवालोंको	कहते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

शुश्रुवान्, मनंति, विदुषः, तस्थुषः, जग्मुषः, पेचिवांसौ, जिघ्रंति, श्रणतः, त्यजति।

नीचे लिखे वाक्योंको शुद्ध करो—

विद्वानः धर्मं उपदिशति, राजा पेचिवानौ पृच्छति, जग्मिवानौ पुष्पं जिघ्रतः, भृत्याः तस्थिवान् पृच्छंति।

वस्-भागांत विद्वस् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया—	विद्वांसं	,,	विदुषः

पंचदश पाठ।

ईयस्-भागांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ गरीयान्	लघीयांसं	आदिशति	बडा	छोटेको	आज्ञा देता है।
कनीयान्	श्रेयांसं	कांक्षति।	छोटा	श्रेष्ठको	चाहता है।
ज्यायान्	यवीयांसं	उपदिशति	अतिवृद्ध	छोटेको	उपदेश देता है।
द्रढीयान्	क्षुद्रं	तुदति।	प्रबल	क्षुद्रको	पीड़ा देता है।
२ गरीयांसौ	महिमानं	कांक्षतः।	दो बडे जने	महिमाको	चाहते हैं।
साधुः	कनीयांसौ	चुंबति।	साधु	दो छोटोंको	चूमता है।
लघीयांसौ	श्रेयांसौ	इच्छतः।	दो छोटे	दो श्रेष्ठ(पदार्थों)की	इच्छा करते हैं।
ज्यायांसौ	यवीयांसौ	उपदिशतः।	दो वृद्धजने	दो छोटोंको	उपदेश देते हैं।
३ गरीयांसः	लघीयसः	आदिशंति।	बडे लोग	छोटोंको	आज्ञा देते हैं।
कनीयांसः	श्रेयसः	कांक्षंति।	छोटे लोग	श्रेष्ठ वस्तुओंको	चाहते हैं।
ज्यायांसः	यवीयसः	उपदिशंति।	वृद्धलोग	कनिष्ठोंको	उपदेश देते हैं।
साधुः	कनीयसः	चुंबति।	साधु	छोटोंको	चूमता है।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

गरीयान्, लघीयांसौ, ज्यायसः, श्रेयांसौ, चुंबति, तुदंति, मनतः, यवीयसः, जिघ्रति।

संस्कृत बनाओ—

छोटे लोग बडे जनोंका अनुगमन करते हैं। बडे लोग छोटोंको उपदेश देते हैं। कनिष्ठ श्रेष्ठवस्तु चाहते हैं। बलवान् कमजोरको पीड़ा देता है। साधुलोग गौरववालोंको निंदा करते हैं। श्रेष्ठलोग राजाको कहते हैं। संन्यासी श्रेष्ठको उपदेश देते हैं। कनिष्ठ प्रेम चाहते हैं।

शुद्ध करो—

ज्यायान् धर्मं उपदिशतः। लघीयान् ज्यायान् नमति। कनीयानी आज्ञां दिशति। गरीयान् वलीयसी गच्छतः। विद्वान् गरिमां निंदति।

इस भागांत गरीयस् शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गरीयान्	गरीयांसौ	गरीयांसः
द्वितीया—	गरीयांसं	,,	गरीयसः

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
तुदीञ्	पोड़ादेना	(तुद्+अ+ति)	तुदति	तुदतः	तुदंति।
कुवि	ढाकना	(कुंव्+अ+ति)	कुंवति	कुंवतः	कुंवंति।
सृ	चलना	(सर्+अ+ति)	सरति	सरतः	सरंति।
कूज	शब्दकरना	(कूज्+अ+ति)	कूजति	कूजतः	कूजंति।
भ्रमु	घूमना	(भ्रम्+अ+ति)	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमंति।
घ्रा (जिघ्र)	सूंघना	(जिघ्र्+अ+ति)	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रंति।
ध्मा (धम)	फूंकना वजाना	(धम्+अ+ति)	धमति	धमतः	धमंति।
णोञ्	लेजाना	(नय्+अ+ति)	नयति	नयतः	नयंति।
सृ (धाव्)	दौड़ना	(धाव्+अ+ति)	धावति	धावतः	धावंति।
पत्लृ	गिरना	(पत्+अ+ति)	पतति	पततः	पतंति।
स्था (तिष्ठ)	बैठना	(तिष्ठ्+अ+ति)	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठंति।
म्ना (मन)	अभ्यासकरना	(मन्+अ+ति)	मनति	मनतः	मनंति।

षोड़श पाठः।

पुंलिंग विशेष्य (१) शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग।

१ क्रुद्धः इभः जलभरितं तड़ागं गच्छति।	क्रुद्ध हाथी जलसे भरेहुये तलावको जाता है।
मृतः मत्कुणः दुःसहं दुर्गंधं त्यजति।	मरा हुआ खटमल बडी भारी बदबूको छोड़ता है।
सुंदरः बालकः शिक्षापूर्णं ग्रंथं पठति।	सुन्दर बालक शिक्षासेपूर्ण ग्रंथको पढ़ता है।
लुब्धकः व्याधः सरलान् विहंगमान् इच्छति।	लोभी व्याधा सीधे पक्षियोंको चाहता है।
सुपक्वः रसालः मिष्टं रसं यच्छति।	पका हुआ आम मीठा रस देता है।
२ धवलौ हंसौ जलपूर्णौ आवापौ व्रजतः।	श्वेत दो हंस जलसे पूर्ण तड़ागको जाते हैं।
लोलुपौ कृषीवलौ विशालौ बलीवर्दौ कांक्षतः।	लोलुपी दो किसान बडे दो बैलोंको चाहते हैं।
भक्तौ छात्रौ शिष्टौ पाठकौ अनुगच्छतः।	भक्त दो विद्यार्थी शिष्ट दो गुरुओंके पीछे पीछे चलते हैं।

---

१ विशेष्यका जो लिंग और वचन होता है वही विशेषणका होता है। गुणवाचक शब्द प्रायः विशेषण होते हैं।

२ भक्ताः श्रावकाः वीतरागान् जिनान् अर्चंति।	भक्त श्रावक वीतराग जिन भगवान् की पूजते हैं।
वीतरागाः जिनाः सुखकरं धर्मं उपदिशंति।	वीतराग जिनदेव सुखदायी धर्म का उपदेश देते है।
जैनाः बालाः आप्तनिर्दिष्टान् ग्रंथान् पठंति।	जैनी लड़के सच्चे देव से उपदिष्ट शास्त्रों को पढ़ते हैं।
चतुरमतयः बालाः सारगर्भान् उपदेशान् कांक्षंति।	चतुरबुद्धिवाले लड़के सारपूर्ण उपदेश चाहते हैं।
उदारचेतसः मुनयः हितकरान् उपदेशान् वदंति।	उदारचित्तवाले मुनि हितकारी उपदेश कहते हैं।
भीषणाः अग्नयः विशालान् वृक्षान् दहंति।	भयंकर अग्नियां बड़े बड़े पेड़ों को जलाती है।
गृहशून्याः साधवः सुंदरान् जिनालयान् व्रजंति।	घररहित साधुलोग सुन्दरजिनालयों को जाते हैं।

अशुद्ध।	शुद्ध।
क्रुद्धः गजाः सजलान् तडागं गच्छंति।	क्रुद्धाः गजाः सजलं तडागं गच्छंति।
अनगारिणो मुनिः वीतरागान् जिनं नमति।	अनगारी मुनिः वीतरागं जिनं नमति।
विशाली शाल्मलितरवः कृष्णी मेघान् कुर्वंति।	विशालाः शाल्मलितरवः कृष्णान् मेघान् कुर्वंति।
गुणवंताः जनाः धनिनी जनान् पृच्छंति।	गुणवंतः जनाः धनिनः जनान् पृच्छंति।
बुभुक्षिताः पक्षिणः उच्चान् पर्वतौ गच्छतः।	बुभुक्षितौ पक्षिणौ उच्चान् पर्वतान् गच्छतः।

नीचे लिखे विशेषणों का प्रयोग कर वाक्य बनाओ—

(क) सुंदर, मलीमस, मेध्य, भिक्षुक, लुब्धक, शंकित, गंभीर, शुभ्र, क्रूर, अचल, नेदिष्ठ (अति समीप), दविष्ठ (अति-दूर), मूढ, वीर, श्वेत, सुतीक्ष्ण।

(ख) मनोहारिन्, धनिन्, ज्ञानिन्, तेजस्विन्, बलिन्, ओजस्विन्।

(ग) उदारचेतस्, महामनस्, चंद्रमस्, उन्मनस्, सुमनस्।

(घ) बलवत्, धनवत्, विद्यावत्, एतावत्, तावत्, कर्मवत्।

(ङ) मूर्तिमत्, आयुष्मत्, बुद्धिमत्, वपुष्मत्, धनुष्मत्।

(च) चारु, गुरु, लघु, तनु, ऋजु, मृदु, दयालु, शयालु, प्रांशु, साधु।

(छ) दवीयस्, कनीयस्, श्रेयस्, अल्पीयस्, लघीयस्, बलीयस्, ज्यायस्।

(ज) अनन्यवृत्ति, उदारमति, सरलबुद्धि, चंचलमति।

(झ) स्पृशत्, तिष्ठत्, गच्छत्, गायत्, चलत्, हसत्, रुदत्, शृण्वत्, वदत्, श्रुत, क्षुधित, व्यथित, पीड़ित, चलित, दृष्ट, सृष्ट, कर्तव्य, पालनीय, म्रियमाण।

(ञ) विद्वस्, पेचिवस्, शुश्रुवस्, जग्मिवस्।

शुद्ध करो—

स्थास्नु: गिरय: चलंतं मेघान् स्पृशंति। चंचलं अर्थ: गुणहीनं जनान् त्यजति। ऋजु: नदा: पर्वतपादान् स्पृशंति। सरलमतीन् कृषका: मूर्त्तिमतं अश्मन: पूजंति। राजनीतिकुशलौ सम्राज: बुद्धि—मतं मंत्रिण: पृच्छंति। संयतचेता: साधव: दवीयसं जनान् न गच्छंति। तनू चंद्र: अल्पीयांसं किरणान् विकिरति। उदारमतौ विपश्चित: मनोहारिणं उपदेशान् लिखति। स्थविष्ठ: पशव: नेदिष्ठान् लोकालयं न त्यजंति। क्षुधितौ व्याघ्रा: निद्रितान् नरं खादंति। ऋजु: भक्षका मृतान् जनौ न खादंति।

संस्कृत बनाओ—

अच्छे आदमी दुखी आदमियों को नहीं सताते हैं। सच्चे पुरुष चोरी नहीं करते हैं। जैन लोग मांस नहीं खाते हैं। उद्दंड लड़के अच्छी किताबें नहीं पढ़ते हैं। नम्र विद्यार्थी अपने (स्वकीय) गुरुओं को पूजते हैं। प्रजाप्रिय राजा प्रजाको सुख देता है।

हिंदी बनाओ—

विहंगमा: मेघाच्छन्नं गगनं गच्छंति। क्षुद्रा: मधुकरा: अपि स्वकार्यं न त्यजंति। शीतल: समीरण: (वायु) इतस्तत: (इधर उधर) प्रसरति। लोहित: अग्नि: हरितं वृक्षं दहति। ब्रम्हचारिण: पाठालयं व्रजंति पठंति च। चंचला: प्राणा: सर्वान् जनान् त्यजंति। प्रचंड: निदाघ: (धूप) दिवसं उष्णं करोति।

एक एक विशेषण रखकर वाक्य बनाओ—

———शिक्षक:———विद्यार्थिनं प्रहरति। ———गर्दभ: ——यवान् खादति। ———विहंगमा:——समुद्रतीरं गता:। ——अहि:——बकशिशून् खादति। व्याध:——तंडुलकणान् विकिरति। ——शृगाल:——करिणं पश्यति। ——मेघ:—— सूर्यं कुंवति। ——पादपा: जलं इच्छंति। ——चातक:—— मेघं कांक्षति। ——दावानल:——वनं दहति।

उपयुक्त स्थान पर कर्ता और कर्म का प्रयोग करो—

——अकुलीनं अपि शास्त्रज्ञं———अर्हति। ——मतिमंतं ——अर्चति। मधुरभाषिण:——न विश्वसनीया:। फलच्छाया-समन्वित:——न कर्त्तनीय: (काटना चाहिये)। मंथरादय:—— स्वकीयं——गता:। पाशहस्ता:——वन्यान् (वनके)——कांक्षंति। सभया:——निरापदं——गच्छंति। पर्यटन्—पलायमानान्——

पश्यति। मृगमांसार्थी——हस्तगतं——त्यजति। प्रहृष्टमनसौ——मत्स्यपूर्णं——गच्छतः। ——वस्त्रक्रयार्थी——वस्त्रपूर्णं—गच्छति। ——विपन्नाः——रक्षकं इच्छंति। ——संपन्नाः——दुःखितं न रक्षंति।——पक्षिणः——कूजंति। शीतलः —सर्वत्र प्रसरति। ——निरुद्वेगाः अटंति। ——अयत्नरमणीयः भ्रमति।——अतिथयः——आगच्छंति।

नीचे लिखे वाक्योंमें एकवचनके स्थानमें बहुवचन और बहुवचनके स्थानमें एकवचन करो—

काननगताः नृपाः उपविष्टाः दुःखशोकपरायणाः मनोभावं वदंति। दुरात्मा नृशंसः पापकृत् उपकारिणः शुद्धमतीन् रिषति। दुर्मतिः दुष्कृतकर्मा धर्मपरं जनं न अंचति। कृष्णवासाः भरतनंदनः निष्क्रामति। जनाः चंदनलिप्तं महातेजस्विनं भरतं अर्हंति। पुरुषवीराः परिचिंतयंतः उपायं जल्पंति। नरपुंगवः समीपवर्तिनं प्रासादं पश्यति। विपुलः प्रांशुः प्रासादः मेघं उल्लिखति। महाबाहुः सुग्रीवः रामानुजं अनुगच्छति। एतावान् लोभविरहः न दृष्टः। सुशीलः छात्रः स्वयं एव शंखं धमति अतः समागच्छंति ब्रह्मचारिणः। सत्यवक्ता जनः शत्रुमपि जनं स्ववशं नयति।

इन ऊपर लिखे हुये वाक्योंकी हिंदी बनाओ—

संस्कृत बनाओ—

विद्यार्थी कमलोंसे भरे हुये तालाब को जाते हैं। लड़के झूठ नहीं बोलते हैं। सुशील आदमी बुरा काम (दुष्कार्य) नहीं चाहते हैं। वहां (तत्र) पूज्य आधर आचार्य रहते हैं और बालकों को पढ़ाते (पाठयति) हैं। ब्रह्मचारी लोग आश्रम को जाते हैं और वहां खेलते हैं तथा संस्कृत पढ़ते हैं। एक दौड़ता है दूसरा उसके पीछे दौड़ता है। एक गिरता है दूसरा हंसता है। एक चलता है दूसरा बैठता है। जगन्मोहन घूमता है रामदास बढ़िया गीत गाता है। इस तरह (एवं) दो मित्र परस्पर में कहते हैं। हरिणोंके

बच्चे (मृगशिशु) निर्भय होकर देखते हैं दौड़ते हैं खेलते हैं। तोतों के बच्चे (शुकशिशु) तथा अनेक पक्षी कूजते हैं। पुष्पवाले मनोहारि महाद्रुम गिरिशिखिर को अच्छादन करते हैं। लक्ष्मण बहुत सुंदर वृक्ष देखता है। भ्रमण करते २ धूर्त शृगाल हृष्ट पुष्टांग हरिण को देखता है। क्षुद्रबुद्धि जंबुक बंधुहीन होकर (सन्) एकाकी रहता है। मृगबंधु सुबुद्धि नामक कौआ आगन्तुक को मारता है।

हिंदी बनाओ—

इतस्ततः ब्रह्मचारिणः परिभ्रमंति। साधवः छात्राः आचार्यान् परिचरंति न तु(न कि)दुर्जनान्, सदाचारान् आचरंति न तु म्लेच्छाचारान्, परिहरंति (दूर करते हैं) अविनयं न तु विनयं, त्यजंति हिंसां न तु दयां, वदंति सत्यं न तु अनृतं, संयच्छंति (वशमें करना) इंद्रियाणि नतु निरपराधान् जंतून्। आचार्यः नगरं गच्छन् पाठालयं पश्यति, तत्र च बहून् छात्रान्।

सर्वदा परहितकारी एकः सूर्यः एव प्रशंस्यः। रूपयौवनसंपन्नाः विशालकुलसंभवाः अपि विद्याहीनाः जनाः गंधरहिताः किंशुकाः (टेसूके फूल) इव (तरह) न शोभंते। नद्यः वृक्षाः मेघाः च परोपकारिणः यतः (क्योंकि) नद्यः स्वयं (खुद) जलं न पिबंति, वृक्षाः फलानि स्वयं न खादंति, मेघाः स्वयं सस्यं (धान) न आहरंति। अगुणी गुणिनं न अवगच्छति (जानता है) गुणी गुणिनः स्पर्द्धते (स्पर्द्धा करता है) अतः (इस लिये) गुणी गुणरागी च जनः विरलः वर्तते (है)। परः अपि हितवान् जनः बंधुः, अपकारी बंधुः अपि परः भवति (होता है) यथा (जैसे) देहजः व्याधिः अहितः आरण्यं (वनको) च औषधं हितकरं। सततं (सर्वदा) प्रियवादिनः पुरुषाः सुलभाः।

परिशिष्ट।

सखि (मित्र) शब्द

प्र०	सखा	सखायौ	सखाय:
द्वि०	सखायं	,,	सखीन्

दीर्घ-ईकारांत ग्रामणीशब्द (१)

प्र०	ग्रामणी:	ग्रामण्यौ	ग्रामण्य:
द्वि०	ग्रामण्यं	,,	,,

सुधी (अच्छी बुद्धिवाला) नी आदि

प्र०	सुधी:	सुधियौ	सुधिय:
द्वि०	सुधियं	,,	,,

क्रोष्टु (श्याल, जंबुक) शब्द

प्र०	क्रोष्टा	क्रोष्टारौ	क्रोष्टार:
द्वि०	क्रोष्टारं	,,	क्रोष्टून्

दीर्घ ऊकारांत खलपू शब्द

प्र०	खलपू:	खलप्वौ	खलप्व:
द्वि०	खलप्वं	,,	,,

लू (काटने वाला) (२)

प्र०	लू:	लुवौ	लुव:
द्वि०	लुवं	,,	,,

(३) पितृ (पिता, बाप)

प्र०	पिता	पितरौ	पितर:
द्वि०	पितरं	,,	पितॄन्

ओकारांत गो (गाय, बैल) शब्द

प्र०	गौ:	गावौ	गाव:
द्वि०	गां	,,	गा:

ऐकारांत—रै (धन) शब्द

प्र०	रा:	रायौ	राय:
द्वि०	रायं	,,	राय:

औकारांत ग्लौ (चंद्र) शब्द

प्र०	ग्लौ:	ग्लावौ	ग्लाव:
द्वि०	ग्लावं	,,	,,

(४) जकारांत भिषज् (वैद्य) शब्द

प्र०	भिषक् (ग्)	भिषजौ	भिषज:
द्वि०	भिषजं	,,	,,

नकारांत श्वन्, (कुत्ता) युवन् शब्द

प्र०	श्वा	श्वानौ	श्वान:
द्वि०	श्वानं	,,	शुन:

पथिन् (मार्ग) शब्द

प्र०	पंथा:	पंथानौ	पंथान:
द्वि०	पंथानं	,,	पथ:

महत् (बड़ा) शब्द

प्र०	महान्	महांतौ	महांत:
द्वि०	महांतं	,,	महत:

(५) ददत् (देता हुआ) शब्द

प्र०	ददत्	ददतौ	ददत:
द्वि०	ददतं	,,	,,

पुमस् (पुरुष) शब्द

प्र०	पुमान्	पुमांसौ	पुमांस:
द्वि०	पुमांसं	,,	पुंस:

१—'सुधी' 'नी' को छोड़ कर शेष ईकारांतों के रूप इसके समान होंगे। २ दृम्भू, करभू, पुनर्भू, वर्षाभू को छोड़ कर शेष शब्द जिनके अन्त में 'भू' है उनके रूप 'लू' के समान होते हैं। और उन चारोंके तथा शेष ऊकारांतोंके खलपूके समान। ३ भ्रातृ, जामातृ, देवृ, नृ, सव्येष्टृके रूप पितृके समान, शेष ऋकारांतोंके 'दातृ'के समान। ४ जिन शब्दोंके अन्तमें भ्रज्, सृज्, मृज्, यज् राज्, भ्राज्, हैं उनसे तथा परिव्राज्, यज्, इनसे भिन्न शब्दोंके रूप इसके समान होंगे। ५ इसी प्रकार दधत्, जक्षत्, भक्षत्, जाग्रत्, दरिद्रत्, शासत्, चकासत् शब्दोंके रूप होंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

सखाय:, ग्रामणो:, (गांवका मुखिया) क्रोष्टार:, सुधो:, जामातरौ, श्वान:, पंथानं, भिषक्, पुमान, गा:, यून:।

हिंदी बनाओ—

महान् कोलाहल: वर्तते। पुमांस: परस्परं विवदंते (विवाद करते हैं)। सुधिय: शोघ्रं एव शास्त्रज्ञातार: भवंति। खलप्व: (खलियान साफ करने वाला) खलं (खलियान) गच्छंति। गाव: क्षेत्रं व्रजंति। कृषका: गा: इच्छंति। लुव: धान्यं कृंतंति। राजा रायं वितरति। दोना: पुमांस: आशीर्वादान् पठंति। मूर्खा: शिशव: ग्लावं इच्छंति। राम: रुग्ण: जात: अत: एक: भिषग् आनेय:। सर्पा: तथा खला: च कुत्सितं पंथानं अयंति। त्यागो श्रेष्ठो उपकारार्थं महत: राय: ददत् पुण्यं अर्जति। ग्रामीणा: (गांवके) पुमांस: ग्रामण्यं मानंति। ग्लौ: आकाशं द्योतते। देवरं विलोक्य (देख कर) भ्रातृजाया हसति। विद्वांस: नर: जिनं अर्चंति।

संस्कृत बनाओ—

लड़का चंद्रमाको देखता है और रोता है। रातको (नक्तं) श्याल बोलते हैं। सेनापति (सेनानी) सेनाको आज्ञा देता है। पिता पुत्रको कहता है। पुत्र पिताका सम्मान करता है। लोग बहुत धन कमाते हैं पर लोभ नहीं छोड़ता है। जो(ये)सीधे मार्ग पर चलते हैं वे (ते) बुद्धिमान् हैं। कुत्ता जानवर है तो भी (तथापि) स्वामिभक्त होता है। रातको धनकी रक्षा करता है। इस लिये लोग कुत्तोंकी भी रक्षा करते हैं। बैल बड़ा उपकारी जीव है घास खाता है पर बड़ा परिश्रम करता है। दामादको (जामातृ) श्वशुर उपदेश देता है। धनको धारता हुआ (दधत्) भी कृपण कुछ (किमपि) दान नहीं देता है। कंजूस आदमी बड़ा उपकारी है क्योंकि मरणानंतर सब धन यहीं (अत्र एव) छोड़ जाता है। सारथि (सव्येष्टृ) रथके पास जाता है। युवा लोग बलवान् होते हैं।

द्वितीय अध्याय।

स्वरांतस्त्रीलिंग।

प्रथम पाठ।

आ—(१)—कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	बालिका (२)	लतां	उच्चति।	लड़की	लता (बेल) को	सींचती है।
	मनोरमा	कथां	गदति।	मनोरमा	कथा	कहती है।
	कन्या	विद्यां	मनति।	कन्या	विद्या	सीखती है।
	कलिका	शोभां	वितरति।	कली	शोभा	देती है।
	पिपीलिका	विपादिकां	क्रडति।	चींवटी	बिवाईको	काटती है।
२	अंबे	कन्ये	तर्जतः।	दो मातायें	दो कन्याओंको	डांटती है।
	लते	प्रासादं	भूषतः।	दो लतायें	घरको	शोभित करती हैं।
	बालिके	लते	सिंचतः।	दो लड़की	दो लतायें	सींचती है।
	बालकौ	शाखे	त्रुटतः।	दो लड़का	दो डाली	काटते हैं।
	मुनिः	विद्ये	ध्यायति।	मुनि	दो विद्याओंका	ध्यान करता है।
३	बालिकाः	लताः	जेषंति।	बालिकायें	लताओंको	सींचती हैं।
	अम्बाः	कन्याः	तर्जंति।	मातायें	कन्याओंको	ताड़ना देती हैं।
	भृत्यः	शाखाः	लुंपति।	नौकर	डालियोंको	काटता है।
	मुनिः	विद्याः	ध्यायति।	मुनि	विद्याओंको	ध्याता है।

१—पुंलिंग ह्रस्व अकारांत शब्दोंको दीर्घ—(आकारांत) कर देनेसे वे प्रायः स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे—बाल—बाला, भृत्या, आकारांत शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। २—जिन पुंलिंग अकारांत शब्दोंके अंतमें 'क' होगा उनको स्त्रीलिङ्ग बनानेसे 'क' के पहिले 'अ' को 'इ' हो जायगा—जैसे—बालकका स्त्रीलिंग बनाया तो—'बालका' पहिले नियमसे हुआ अब इसके 'क' के पहिले 'ल' में के 'अ' को 'इ' हो जायगा तो—बालिका होगा।

निम्नलिखित शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

उच्छतः, चुटंति, लुंपति, सिंचतः, मनंति, तर्जतः, गदंति, कन्याः, बाले, भाषां, छायाः, कथाः, विद्ये, दयां, तृष्णा, रमा, रामे, हिंसां।

शुद्ध करो—

बालिकाः विद्यां इच्छति। कन्ये भृत्यं तर्जति। बालाः पक्षिणः कांक्षति। कृपा प्रेमाणं अनुगच्छतः। विद्या बालिकान् भूषति। बालिके साधून् पृच्छंति। भृत्याः लतान् जेषंति। पाठिकौ कन्ये तर्जतः। विद्या शोभं वितरतः।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उच्छ	सोचना	(उच्छ्+अ+ति)	उच्छति,	उच्छतः,	उच्छंति।
गद	कहना	(गद्+अ+ति)	गदति,	गदतः,	गदंति।
मना	सीखना	(मन्+अ+ति)	मनति,	मनतः,	मनंति।
तृ (१)	तिरना	(तर्+अ+ति)	तरति,	तरतः,	तरंति।
क्षुड	काटना	(क्षुड्+अ+ति)	क्षुडति	क्षुडतः,	क्षुडंति।
तर्ज	डांटना	(तर्ज्+अ+ति)	तर्जति,	तर्जतः,	तर्जंति।
भूष	शोभितकरना	(भूष्+अ+ति)	भूषति,	भूषतः,	भूषंति।
रुह	उगना	(रोह्+अ+ति)	रोहति,	रोहतः,	रोहंति।
चुट	काटना	(चुट्+अ+ति)	चुटति,	चुटतः,	चुटंति।
ध्यै	ध्यानकरना	(ध्याय्+अ+ति)	ध्यायति,	ध्यायतः,	ध्यायंति।
शंसु	स्तुतिकरना	(शंस्+अ+ति)	शंसति,	शंसतः,	शंसंति।
जेष	सोचना	(जेष्+अ+ति)	जेषति,	जेषतः,	जेषंति।
लुप लृञ्	काटना	(लुंप्+अ+ति)	लुंपति,	लुंपतः,	लुंपंति।

१—'वि' उपसर्ग लगानेसे "देना" अर्थ हो जाता है।

	एकवचन	द्विव	बहुवचन
प्रथमा—	विद्या	विद्ये	विद्याः ।
द्वितीया—	विद्यां	विद्ये	विद्याः ।

इस प्रकार सब 'आ' कारांत शब्दोंके रूप जानना ।

संस्कृत बनाओ—

बकरी (अजा) घास खाती है। घोड़ी (अश्वा) तलाब को जाती है। चटिका खोलार को जाती है। कोयल (कोकिला) बोलती है। मूषिका छेद में घुसती है।

द्वितीय पाठ ।

इकारांत (१) ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१	बुद्धिः	मानुषं	भूषति ।	बुद्धि	मनुष्यको	भूषित करती है।
	रात्रिः	दीप्तिं	विलति ।	रात	उजालेको	छिपा लेती है।
	वृष्टिः	ओषधिं	वेषति ।	वृष्टि	ओषधिको	सींचती है।
	कांतिः	बालिकां	भूषति ।	कांति	लड़कीको	भूषित करती है।
	वातः	ऊर्मिं	मंथति ।	वायु	लहरोंको	मथती है।
२	ओषधी	रात्रिं	भूषतः ।	दो ओषधि	रात्रिको	भूषित करती हैं।
	बालिका	ऊर्मी	पश्यति ।	लड़की	दो लहरें	देखती है।
	कन्ये	ओषधी	सिंचतः ।	दो कन्यायें	दो ओषधी	सींचती हैं
३	ओषधयः	रात्रीः	भूषंति ।	ओषधियां	रात्रियों को	भूषित करती है।
	वृष्टयः	ओषधीः	सिंचंति ।	वृष्टि समुदाय	ओषधियोंको	सींचता है।
	निद्रा	प्रमत्तीः	पोषति ।	निद्रा	प्रमादी को	पुष्ट करती है
	तरयः	नदं	तरंति ।	नावें	नालेको	पार करती हैं

१—जिन शब्दों के अन्त में 'ति' होती है वे शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
दीप्तय:	मानवान्	लुभति ।	दीप्तय:	मानवान्	लुभंति ।
मूर्खा:	गतय:	न पश्यंति ।	मूर्खा:	गतिं न	पश्यंति ।
स्मृति:	बालकं	भूषंति ।	स्मृति:	बालकं	भूषति ।
वृष्टी:	धूलिं	वेषंति ।	वृष्टय:	धूलिं	वेषंति ।
व्रततय:	पादपं	श्रयति ।	व्रतति: (लता)	पादपं	श्रयति ।

निम्नलिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(क) विलत:, वेषंति, मंथन्ति, पोषत:, कुचति, सिंचत: ओषधय:, वृत्तिं (व्यापार), गती:, पंक्तय:, धूली:, मृति: (मरण), क्षतय:, बुद्धी, श्रुति:, गति:, व्रततय: (पंक्ति, लता) ऊर्मि:, तिथी, तरी, (नाव) कटिं (कमर) नाडी, श्रेणय:, रात्रय:, अंगुली ।

हिंदी बनाओ—

तारका: रात्री: भूषंति । पयोमुच: ऊर्मिं पोषंति । साधव: कांतिं न कांक्षंति । शिशव: विहंगम (पक्षी) पंक्ती: पश्यंति । वृक्षश्रेणि: शोभते ।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विल	छिपाना	(विल्+अ+ति)	विलति,	विलत:,	विलंति ।
विषु	सींचना	(वेष्+अ+ति)	वेषति,	वेषत:,	वेषंति ।
लुभ	मुग्धकरना	(लुभ्+अ+ति)	लुभति,	लुभत:,	लुभंति ।
मंथ	मथनानष्टकरना	(मंथ्+अ+ति)	मंथति,	मंथत:,	मंथंति ।
पुष	पुष्टकरना	(पोष्+अ+ति)	पोषति,	पोषत:,	पोषंति ।
कुच	संकोचकरना	(कुच्+अ+ति)	कुचति,	कुचत:,	कुचंति ।
मृषु	सहनकरना	(मर्ष्+अ+ति)	मर्षति,	मर्षत:,	मर्षंति ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	बुद्धिः	बुद्धी	बुद्धयः।
द्वितीया—	बुद्धिं	,,	बुद्धीः।

—*—

तृतीय पाठ।

ई—कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	कुमारी	नदीं	व्रजति।	कुमारी	नदीको	जाती है।
	मृगी	अटवीं	व्रजति।	मृगी	वनको	जाती है।
	जननी	कुमारीं	तर्दति।	माता	कुमारीको	मारती है।
	ओषधी	रजनीं	भूषति।	ओषधी	रात्रिको	भूषित करती है।
२	भगिन्यौ	तरण्यौ	प्रविशतः।	दो बहनें	दो नावोंमें	बैठती हैं।
	जनन्यौ	कदल्यौ	चामतः।	दो मातायें	दो केले	खाती है।
	धीवर्यौ	धुन्यौ	गच्छतः।	दो धीवरी	दो नदियोंको	जाती हैं।
	कुमार्यौ	जनन्यौ	महतः।	दो कुमारी	दो माताओंको	पूजती हैं।
३	जनन्यः	अपराधान्	मर्षंति।	मातायें	अपराध	क्षमा करती हैं।
	कुमार्यः	मृगीः	आमृशंति।	कुमारी	हरिणियोंको	कूती हैं।
	नद्यः	अब्धिं	प्रतिगच्छंति।	नदियां	समुद्रके	प्रति जाती है।
	चंद्रमाः	रजनीः	लांछति।	चंद्रमा	रात्रियोंको	चिन्हित करता है।

नीचे लिखे शब्दोंका प्रयोग कर वाक्य बनाओ—

(क) विदुष्यौ(१), गुणवतीः(२), मानिन्यः, सुंदरी, अटव्यौ, श्रीमती, गायंत्यः, (३) गच्छंती, बिभ्रत्यौ, जाग्रत्यः, तप-

१ दीर्घ ईकारांत शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। (२) मत् (वत्) ईयस्, तथा 'इन्' भागांत शब्द अंतमें 'ई' लगादेनेसे स्त्रीलिंग हो जाता है। जैसे—गुणवत् (पुंलिंग)का स्त्रीलिंग 'गुणवती' और मानिन्‌का 'मानिनी' कनीयस्‌का 'कनीयसी' होगा। (३) अत

स्विनी, वराकिन्यः (दीन), गरीयस्यः, ज्यायस्यौ, कनीयस्यः, लज्जावती, मनोहारिणी, मृण्मयी (मट्टीकी), भक्तिमती, गुर्वी, पटीयसी (अति चतुर)।

(ख) लांछंति, मर्षतः, मृशंति, चामंति, तर्दतः, क्रामति (उल्लंघन करना), भजतः, क्रुडंति, महतः, तर्दंति, चामतः।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
तिष्ठंती	गच्छंती	वदंति।	तिष्ठंत्यः	गच्छंती	वदंति।
विदुष्यौ	रुदंत्यः	नर्जतः।	विदुष्यौ	रुदतोः	नर्जतः।
मानिन्यः	गरीयसीः	तर्दतः।	मानिन्यौ	गरीयसीः	तर्दतः।
कनीयसी	करिण्यः	पश्यति।	कनीयसी	करिणीः	पश्यति।
वराकिन्यः	शाखाः	लुंपतः।	वराकिन्यः	शाखाः	लुंपंति।
राजपुत्र्यः	वनं	क्रामति।	राजपुत्र्यः	वनं	क्रामंति।
पापीयसी	धर्मं	निंदंति।	पापीयसी	धर्मं	निंदति।
जैनवाणी	मतिं	भूषतः।	जैनवाणी	मतिं	भूषति।
भक्तिमत्ये	जिनं	अर्चतः।	भक्तिमत्यौ	जिनं	अर्चतः।
हंसी	हंसं	तर्दतः।	हंस्यौ	हंसं	तर्दतः।

संस्कृत बनाओ—

मानिनी स्त्रियां बडप्पन (गौरव) चाहती हैं। दो संदरी दो हरिणियों को छूती हैं। अतिवृद्धा (ज्यायसी) छोटी छोटी स्त्रियों (कनीयसी) को उपदेश देती हैं। रूपवती गुणवतीको मारता है। पापिन दुःख पाती है। लज्जावाली स्त्री विनय करती है (विन-

---

(शतृ) भागांत शब्द भी 'ई' लगा देनेसे स्त्रीलिंग हो जाते हैं पर उनके 'ती'से पहिले 'न्' भी प्रायः आता है—जैसे गायत्+ई=गायती हुआ अब 'ती'से पहिले 'न्' आया तो गायन्ती हुआ। ऐसे शब्दोंको गायंती इसप्रकार अनुस्वारसे भी लिखते हैं।

यति)। ब्राह्मणी शूद्राको ताड़ना देती है। पाठिका (उपाध्यायी) लड़कियोंको कहती है। बहिन (भगिनी) बहिनको छूती है। कुमार (कुलाल) मट्टीको (मृन्मयी) मूर्ति बनाता है। मातायें जैनवाणीको पूजती हैं। नदियां समुद्रको जाती हैं। गानेवाली (गायिका) गीत गाती हैं।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
क्रमु	उल्लंघना	(क्राम्+अ+ति)	क्रामति,	क्रामतः,	क्रामंति।
अज	जाना	(अज्+अ+ति)	अजति,	अजतः,	अजंति।
तर्द	मारना	(तर्द्+अ+ति)	तर्दति,	तर्दतः,	तर्दंति।
विशौ	भीतरजाना	(विश्+अ+ति)	विशति,	विशतः,	विशंति।
चमू	खाना	(चाम्+अ+ति)	चामति,	चामतः,	चामंति।
सर्ज	बनाना	(सर्ज्+अ+ति)	सर्जति,	सर्जतः,	सर्जंति।
मह	पूजना	(मह्+अ+ति)	महति,	महतः,	महंति।
मृशौ	छूना	(मृश्+अ+ति)	मृशति,	मृशतः,	मृशंति
लाछि	चिन्हितकरना	(लांछ्+अ+ति)	लांछति,	लांछतः,	लांछंति।
जर्ज	डांटना	(जर्ज्+अ+ति)	जर्जति,	जर्जतः,	जर्जंति।
(वि) णीञ्	विनयकरना	(नय्+अ+ति)	नयति,	नयतः,	नयंति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया—	नदीं	नद्यौ	नदीः

चतुर्थ पाठ।

उ कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	धेनुः	वत्सान्	त्यजति।	गाय	बछड़ोंको	छोड़ती है।
	गोपः	धेनुं	मुंचति।	ग्वाला	गायको	छोड़ता है।
	मूषिकः	पाशस्नायुं	छ्रडति।	मूसा	जालकी तांतको	काटता है।
	रेणुः	पृथिवीं	विलति।	रेणु	पृथिवीको	ढांकती है।
२	धेनू	छायां	इच्छतः।	दोगायें	छाया	चाहती हैं।
	गोपालः	धेनू	मुंचति।	गोपाल (ग्वाला)	दो गायको	छोड़ता है।
	पिपीलिका	चंचू	दशति।	चिंवटी	दो चोंचको	काटती है।
	मूषिकः	पाशस्नायू	छ्रडति।	मूसा	दो जालकी तांतको	काटता है।
३	धेनवः	गोशालां	गच्छंति।	गायें	गोशालाको	जाती हैं।
	मूषिकः	पाशस्नायूः	कृंतति।	मूसा	पाशस्नायुओंको	काटता है।
	वृष्टिः	रेणूः	सिंचति।	वर्षा	धूलिको	सींचती है।
	रेणवः	आकाशं	कुंधंति।	धूलिके कण	आकाशको	ढांकते हैं।

निम्न लिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(क) क्रामंति, मनंति, चामतः, गदंति, मर्षति, मुंचतः, म͏ंति, रोहति, लांछंति, कुंवतः।

(ख) चंचवः, धेनूः, स्नायवः, रज्जूः (रस्सी), तनवः (शरीर), धेनुं, करेणवः, (हस्तिनी)।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
रज्जूः	धेनुं	लांछति।	रज्जुः	धेनुं	लांछति।
धेनूः	नदीं	गच्छंति।	धेनवः	नदीं	गच्छंति।
रेणूः	धेनवः	भूषति।	रेणुः	धेनूः	भूषति।
हनूः (पूंछ)	वानरी	लांछतः।	हनू	वानरी	लांछतः।
आहारः	तनवः	पोषति।	आहारः	तनूः	पोषति।

संस्कृत बनाओ—

दो भाई दो गायोंको देखते हैं। हिंदुलोग गायोंकी रक्षा करते हैं। ब्राह्मण स्नायुको नहीं छूते हैं। वृष्टि चोंचको भिगोती है। भ्रमर दो पूंछों (हनु) को काटते हैं। पुष्प रेणुयें राजमार्गको चिन्हित करती हैं। लड़की रस्सीको लाती है (आनयति) और लड़की अकेली (केवला) घरको नहीं जाती है। नारी बाजार (हाट)को जाती है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया—	धेनुं	,,	धेनूः

पंचम पाठ।

ऊ-कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	वधूः	स्वामिनं	पृच्छति।	बहू	पतिको	पूछती है।
	स्वामी	वधूं	वदति।	स्वामी	बहूको	कहता है।
	श्वश्रूः	वधूं	मृशति।	सासु	बहूको	छूती है।
	चमूः	शत्रुसैनिकान्	जयति।	सेना	शत्रुओंकी सेनाको	जीतती है।
	सेनापतिः	चमूं	गूहति।	सेनापति	सेनाको	छिपाता है।
२	वध्वौ	श्वश्रूपादान्	स्पृशतः।	दो बहू	सासुके पैरोंको	छूती हैं।
	देवरः	वध्वौ	प्रणमंति।	देवर	दो बहुओंको	प्रणाम करते हैं।
	वधूः	श्वश्र्वौ	पृच्छति।	बहू	दो सासुको	पूछती है।
	चम्वौ	विश्रामं	कांक्षतः।	दो सेनायें	विश्राम	चाहती हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।		कर्म	क्रिया ।
३ वध्वः	श्वश्रूं	प्रणमंति ।	बहुयें	सासुको	प्रणाम करती हैं ।
सीता	श्वश्रूः	वदति ।	सीता	सासुओंको	कहती है ।
श्वश्र्वः	वधूः	तर्जंति ।	सासु	बहुओंको	ताड़ना देती हैं ।
चम्वः	शत्रुचमूः	जयंति ।	सेनायें	शत्रु सेनाओंको	जीतती हैं ।

संस्कृत बनाओ—

बहुयें पतियोंको संतुष्ट करती हैं। दो बहुयें राजसेनाको देखती हैं। सासु बहुओंको पूछती है। सेना विदेशको जाती है। पानी (जलं) शरीरको भिगोता है। शरीर व्यायामको चाहता है। बढ़ई (कारू) लकड़ीको छीलती है (तक्षति)। सेनापति सेनाको छोड़ता है। सासु बहुओंको उपदेश देती हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

वध्वः, तर्जंति, गूहतः, श्वश्वौ, चम्वः, चमूं, कारूः, तनुः ।

शुद्ध करो—

स्वामिनः वध्वः पृच्छंति । वधुः ह्रीच्छंति । चम्वः शत्रं न जयति । कर्मकराः कारू वदंति ।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
ह्रीच्छ	लज्जाकरना	(ह्रीच्छ्+अ+ति)	ह्रीच्छति,	ह्रीच्छतः,	ह्रीच्छंति।
जि	जीतना	(जय्+अ+ति)	जयति,	जयतः,	जयंति।
गुहीञ्	छिपाना	(गुह्+अ+ति)	गूहति,	गूहतः,	गूहंति।
स्पृशी	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति,	स्पृशतः,	स्पृशंति।
णम	नमस्कारकरना	(नम्+अ+ति)	नमति,	नमतः,	नमंति।

			बहु०
प्रथमा—	धूः	वध्वौ	वध्वः।
द्वितीया—	वधूं	,,	वधूः।

षष्ठ पाठ।

ऋ—कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	माता	दुहितरं	पृच्छति।	मा	लड़कीको	पूछती है।
	ननांदा	वधूं	तर्जति।	ननंदी	बहूको	डाटती है।
	वधूः	ननांदरं	तर्दति।	बहू	ननंदीको	मारती है।
२	दुहितरौ	मातरं	अर्चतः।	दो लड़की	माको	पूजती हैं।
	कन्ये	मातरौ	प्रणमतः।	दो कन्यायें दो माताओंको प्रणाम करती हैं।		
	ननांदरौ	वधूं	तर्जतः।	दो ननंदी	बहूको	डाटती हैं।
	वधूः	ननांदरौ	रिषति।	बहू	दो ननंदीको	गुस्सा होती है।
३	दुहितरः	मातृः	अर्चंति।	लड़कियां	माताओंको	पूजती हैं।
	ननांदरः	वधूः	तर्दंति।	ननंदी	बहूको	डाटती हैं।
	वधूः	ननांदृः	रिषति।	बहू	ननंदीयोंको	गुस्सा होती है।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
माता	दुहितारं	वदति।	माता	दुहितरं	वदति।
दुहितारः	मातॄः	महंति।	दुहितरः	मातृः	महंति।
वध्वः	ननांदॄन्	रिषंति।	वध्वः	ननांदृः	रिषंति।

निम्न लिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

महतः, ननांदा, ननांदरौ, रिषंति, तर्दतः, मातरं, मातृः, दुहितरं, तर्जंति, महति, यातरः (पतिके भाईकी स्त्री)

४	एकवचन	द्विव	बहुवचन।
प्रथमा—	दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः।
द्वितीया—	दुहितरं	,,	दुहितृः।

सप्तम पाठ।

व्यंजनांत—स्त्रीलिंग।

च्—कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	जिनवाक्	तत्त्वं	भाषते।	जिनवाणी	तत्त्वोंका	वर्णनकरती है।
	बालकः	वाचं	भाषते।	बाल	वाणी	बोलता है।
	त्वग्	पशुं	वेष्टते।	खाल	पशुको	वेष्टित करती है।
	परिव्राट्	त्वचं	ईहते।	संन्यासी	वृक्षके वक्कलको	चाहता है।
	नरः	देवरुचं	लोचते।	मनुष्य	देवकीकांति	देखता है।
	रुक्	आकृतिं	कवते।	दीप्ति	आकारको	ढकती है।
	कविवाक्	देवान्	कत्थते।	कविकी वाणी	देवोंकी	प्रशंसा करती है।
	जनः	त्वचं	ईक्षते।	मनुष्य	खालको	देखता है।
२	श्रावकौ	जिनरुचौ	श्लाघेते।	दो श्रावक	दो जिनकी कांतिकी	प्रशंसाकरते हैं।
	कन्यावाचौ	मातरं	कत्थेते।	कन्याओंकी दो वाणी	माताकी	प्रशंसा करती हैं।
	बालकौ	वाचौ	भाषेते।	दो लड़के	दो वाणी (वचन)	बोलते हैं।
	नरौ	देवरुचौ	लोचेते।	दो जन	दो देवकांति	देखते हैं।
	कवौ	वाचौ	ईहेते।	दो कवि	दो (प्रकारकी) वाणी	चाहते हैं।
३	रुचः	देवान्	वेष्टंते।	कांतिया	देवोंको	वेष्टित करती हैं।
	नराः	देवरुचः	लोचंते।	मनुष्य	देवकांतियोंको	देखते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
वाचः	जिनान्	कत्थंते।	वाणी	जिनकी	प्रशंसा करती हैं।
कवयः	वाचः	ईहंते।	कवि वाणीयों (नाना प्रकारकी) को चाहते हैं।		
बालकाः	वाचः	भाषंते।	बालक	वाणी	बोलते हैं।
रुचः	आकृतिं	कवंते।	कांतियां	आकृतिको	ढांकती हैं।

अशुद्ध			शुद्ध		
वटुः	ऋचं (वेदशाखा)	ईहति।	वटुः	ऋचं	ईहते।
पथिकौ	वनस्थलीं	ईहतः।	पथिकौ	वनस्थलीं	ईहेते।
गिरयः		शोभंति।	गिरयः		शोभंते।
लते	वृक्षं	वेष्टतः।	लते	वृक्षं	वेष्टेते।
बालिका	वाचं	भाषति।	बालिका	वाचं	भाषते।
मुनयः	राज्ञः	श्लाघंति।	मुनयः	राज्ञः	श्लाघंते।
विदुषौ	गुणवंतं	कत्थतः।	विदुषौ	गुणवंतं	कत्थेते।
चंद्रकांतिः	प्रासादं	कवति।	चंद्रकांतिः	प्रासादं	कवते।
मानवाः		मरंति।	मानवाः		म्रियंते।
वाक्		प्यायति।	वाक्		प्यायते।

शुद्ध करो—

वाक् प्यायेते। कविवाचः देवाम् अर्चंति। मानवाः देवरुचाः ईहंते। श्रावकाः त्वक् न स्पृशंति। रुचः शोभते। बालकाः त्वक् श्लाघंते। जैनाः जिनरुचः ईहते।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

कत्थते, श्लाघेते, कवंते, भाषते, ईहंते, वेष्टेते, लोचते, ईहेते, ईहते, रुचः, त्वग्, ऋचौ, वाक्, वाचं।

संस्कृत बनाओ—

लड़के दालचीनी (त्वच्) चाहते हैं। सूर्यकांति आकाशको

भूषित करती है। नौकर दो बातें बोलता है। कविकी वाणी लोगोंको संतुष्ट करती हैं। विद्यार्थी ऋचायें पढ़ते हैं। कवि ऋचायें बनाते हैं। वैद्य जाविनी (त्वच्) चाहता है।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
कत्थै (१)	श्लाघाकरना	(कत्थ्+अ+ते)	कत्थते,	कत्थेते,	कत्थंते।
ईक्षै	देखना	(ईक्ष्+अ+ते)	ईक्षते,	ईक्षेते,	ईक्षंते।
भाषै	बोलना	(भाष्+अ+ते)	भाषते,	भाषेते,	भाषंते।
श्लाघृङ्	प्रशंसाकरना	(श्लाघ्+अ+ते)	श्लाघते,	श्लाघेते,	श्लाघंते।
वेष्टै	चारोतरफसेघेरना	(वेष्ट्+अ+ते)	वेष्टते,	वेष्टेते,	वेष्टंते।
मृङ्	मरना	(म्रिय्+अ+ते)	म्रियते,	म्रियेते,	म्रियंते।
ईहै	यत्नकरना, चाहना	(ईह्+अ+ते)	ईहते,	ईहेते,	ईहंते।
लोचृङ्	देखना	(लोच्+अ+ते)	लोचते,	लोचेते,	लोचंते।
कवृङ्	ढांकना	(कव्+अ+ते)	कवते,	कवेते,	कवंते।
वृतुङ्	उपस्थितरहना	(वर्त्+अ+ते)	वर्तते,	वर्तेते,	वर्तंते।
भिक्षै	भीखमांगना	(भिक्ष्+अ+ते)	भिक्षते,	भिक्षेते,	भिक्षंते।
प्यङ्	वढना	(प्याय्+अ+ते)	प्यायते,	प्यायेते,	प्यायंते।
एधै	वढना	(एध्+अ+ते)	एधते,	एधेते,	एधंते।
शुभै	शोभना	(शोभ्+अ+ते)	शोभते,	शोभेते,	शोभंते।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	वाक्	वाचौ	वाचः।
द्वितीया—	वाचं	वाचौ	वाचः।

१—जिन धातुओंमें 'ङ्' अथवा 'ऐ' लगा है वे धातु आत्मनेपदी हैं उनसे एकवचनमें 'ते' द्विवचनमें 'एते' बहुवचनमें 'अंते' जोड़ देना चाहिये।

अष्टम पाठ।

द्—कारांत।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१	विपत्	मानवं	आपतति।	विपत्ति	मनुष्य पर	पड़ती है।
	लोकाः	परिषदं	गच्छंति।	लोग	सभाको	जाते हैं।
	शरत्	पथिकान्	लुभति।	शरद ऋतु पथिकों(रास्तागीर)को लुभाती है।		
	चातकाः	शरदं	निंदंति।	चातक (पपीया) शरद ऋतुकी निंदा करते हैं।		
	पुण्यकृत्	संपदं	लभते।	पुण्यात्मा (स्त्री), संपत्ति		पाती है।
२	परिषदौ	विद्यां	वितरतः।	दो सभायें	विद्याको	देती हैं।
	बालकः	ककुदौ	पश्यति।	लड़का	दो सींग	देखता है।
	बालाः	परिषदौ	गच्छंति।	लड़के	दो सभाओंको	जाते हैं।
	पंडितः	संविदौ	चरति।	पंडित	दो प्रतिज्ञायें	करता है।
३	विपदः	मानवं	आपतंति।	विपत्तियां	मनुष्योंपर	गिरती हैं।
	मानवः	संपदः	कांक्षंति।	मनुष्य	संपत्तियां	चाहते हैं।
	परिषदः	विद्याः	वितरंति।	सभायें	विद्यायें	देती हैं।
	जनाः	आपदः निष्क्रामंति।		लोग	आपत्तियोंको	लांघते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

शरद्, संपद्, आपदं, विपद्, परिषद्, परिषदः, उपनिषद्, (पड़ोसका मकान), संविद्।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	विपत् (द्),	विपदौ	विपदः।
द्वितीया—	विपदं,	विपदौ	विपदः।

नवम पाठ।

ध्—कारांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ वीरुत्	वृक्षं	वेष्टते।	लता	पेड़को	लपेटती है।
बालकः	वीरुधं	ईक्षते।	बालक	लताको	देखता है।
क्षुत्	मानवं	तुदति(ते)।	भूख	मनुष्यको	पीड़ा देती है।
युत्	चमूं	ग्रसति।	युद्ध	सेनाको	नष्ट करता है।
पावकः	समिधं	दहति।	आग	यज्ञके काष्ठको	जलाती है।
२ वीरुधौ	वृक्षं	वेष्टेते।	दो लतायें	पेड़को	लपेटती हैं।
चमूः	युधौ	जयति।	सेना	दो युद्धोंको	जीतती है।
३ युधः	चमूं	ग्रसंति।	युद्ध	सेनाको	नष्ट करते हैं।
निर्भयाः	युधः	पश्यंति।	निडर लोग	युद्ध	देखते हैं।
वीरुधः	वृक्षं	वेष्टंते।	लतायें	वृक्षको	वेष्टित करती हैं।
समिधः	अग्निं	कांक्षंति।	समिध् (लकड़ी)	अग्निको	चाहती हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे संस्कृत बनाओ—

.ईक्षेते, वीरुधं, समिधौ, युधं, क्षुधः, क्षुधं।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
ईक्षे	देखना	(ईक्ष्+अ+ते)	ईक्षते,	ईक्षेते,	ईक्षंते।
तुदीञ्	पीडादेना	(तुद्+अ+ते)	तुदते,	तुदेते,	तुदंते।
वेष्टे	घेरना	(वेष्ट्+अ+ते)	वेष्टते,	वेष्टेते,	वेष्टंते।
ग्रस	हिंसाकरना	(ग्रस्+अ+ति)	ग्रसति,	ग्रसतः,	ग्रसंति।
दहो	जलाना	(दह्+अ+ति)	दहति,	दहतः,	दहंति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	वीरुत्	वीरुधौ	वीरुधः।
द्वितीया—	वीरुधं	वीरुधौ	वीरुधः।

दशम पाठ।

त्—कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	योषित्	तडितं	पश्यति।	औरत	बिजलीको	देखती है।
	सरित्	समुद्रं	गच्छति।	नदी	समुद्रको	जाती है।
	वृष्टिः	सरितं	पोषति।	वर्षा	नदीको	बढ़ाती है।
	विद्युत्	मेघं	अनुगच्छति।	बिजली	मेहके	पीछे रहती है।
२	योषितौ	सरितौ	पश्यति।	दो स्त्रियां	दो नदीको	देखती हैं।
	सरितौ	पर्वतपादान्	स्पृशतः।	दो नदियां	पहाड़ोंके पासके पर्वतोंको	छूती हैं।
	विद्युतौ	योषितौ	लुभति।	दो बिजली	दो स्त्रियोंको	मुग्ध करती हैं।
	कविः	तडितौ	ईक्षते।	कवि	दो बिजुली	देखता है।
३	योषितः	तडितः	पश्यंति।	नारियां	बिजली	देखती हैं।
	वृष्टिः	सरितः	पोषति।	वर्षा	नदियोंको	पुष्ट करती है।
	हरितः	विद्युतः	वहंति।	दिशाएं	बिजलीयोंको	धारण करती हैं।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

सरितः, विद्युतं, योषितं, तडितः, योषितः, संवितौ (युद्धभूमि, प्रतिज्ञा) एधंते, एधेते, शोभते, वर्तंते, दहति, लुभतः।

संस्कृत बनाओ—

नदियां पहाड़ोंको वेष्टित करती हैं। बिजली मेघके साथ २ रहती है। स्त्रियां पतियोंको लुभाती हैं। विद्या स्त्रियोंको भूषित

करती है। बिजली मकानोंको जलाती है। यहां (अत्र) बहुत स्त्रियां हैं (वर्तंते)। स्त्रियां प्रयत्न करती हैं (ईहंते)।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
वृतुङ्	वर्तना (रहना)	(वर्त+अ+ते)	वर्तते,	वर्तेते,	वर्तंते।
ईहै	यत्नकरना	(ईह्+अ+ते)	ईहते,	ईहेते,	ईहंते।
द्युतै	दीप्तहोना	(द्योत्+अ+ते)	द्योतते,	द्योतेते,	द्योतंते।
स्मिङ्	मुस्कराना	(स्मय्+अ+ते)	स्मयते,	स्मयेते,	स्मयंते।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	सरित्	सरितौ	सरितः।
द्वितीया—	सरितं	,,	,,

एकादश पाठ।

स्त्रीलिंग शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
सुंदरी बाला	मनोज्ञां लतां	पश्यति	सुंदर लड़की	सुंदर लताको	देखती है।
सुंदर्यौ बाले	मनोज्ञे लते	पश्यतः	सुंदर दो लड़की	दो मनोज्ञलतायें	देखती हैं।
सुंदर्यः बालाः	मनोज्ञाः लताः	पश्यंति।	सुंदर लड़कियां	मनोज्ञलतायें	देखती हैं।
चंचलाः ऊर्मयः		एधंते।	चंचल लहरें		बढ़ती हैं।

विदुष्यौ रमण्यौ संयताः साध्वीः अर्हतः ।	विदुषी दो स्त्रियां संयमवाली साध्वियोंको पूजती हैं ।
जेतारः अश्वाः पलायमानाः चमूः अनुगच्छंति ।	जयशील अश्व भागती हुई सेनाका पीछा करते हैं ।
मानिन्यः ननांदरः सरलां वधूं तर्जंति ।	मानिनी ननंदियां सीधी बहूको डांटती हैं ।
श्वेतरोमांकं बिभ्रती धेनुः आश्रमं व्रजति ।	सफेद रोमोंको धारने वाली गाय आश्रमको जाती है ।
ज्यायस्यः योषितः रुदतीः वधूः उपदिशंति ।	बड़ीस्त्रियां रोती हुई बहुओंको उपदेश देती हैं ।
विदुष्यः साध्व्यः संयतां वाचं भाषंते ।	विदुषी साध्वियां परिमित वाणीको बोलती हैं ।
पीडिताः पत्न्यः गुर्वीं वेदनां अनुभवंति ।	पीड़ित पत्नियां बहुत बड़ी वेदनाको भोगती हैं ।
भृत्याः महानुभावां कर्त्रीं सेवंते ।	नौकर महानुभाव स्वामिनीको सेवते हैं ।
दात्री योषित् मूल्यवतीः दृषदः वितरति ।	दाता स्त्री मूल्यवाले पत्थरोंको बांटती है ।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
शुद्धवसनाः ब्राह्मण्यौ दात्री योषतः अंचतः ।	शुद्धवसने ब्राह्मण्यौ दात्रीः योषितः अंचतः ।
रामचंद्रं मेध्यां दृषदः वांछति ।	रामचंद्रः मेध्याः दृषदः वांछति ।
रुदंती बालिकाः अस्पष्टां वाचः भाषंते ।	रुदत्यः बालिकाः अस्पष्टाः वाचः भाषंते ।
उज्ज्वला ओषधी द्योतिते ।	उज्ज्वले ओषधी द्योतेते ।

अशुद्ध।	शुद्ध।
कुमार्यः श्यामलां वनस्थलीः लोचंते।	कुमार्यः श्यामलाः वनस्थलीः लोचंते।
मेघवती पर्वतमालाः विराजंते।	मेघवत्यः पर्वतमालाः विराजंते।
शिष्याः पवित्रां समिधः आहरंति।	शिष्याः पवित्राः समिधः आहरंति।
तीव्राः पिपासाः शुष्कां चंचूः तुदंति।	तीव्राः पिपासाः शुष्काः चंचूः तुदंति।
क्लेशदायिनी क्षुत् संजाताः।	क्लेशदायिनी क्षुत् संजाता।
बुद्धिमती कवयः लज्जमानां वध्वौ पृच्छंति।	बुद्धिमत्यः कवयः लज्जमाने वध्वौ पृच्छंति।
प्रखरा बुद्धयः एधंते।	प्रखराः बुद्धयः एधंते।

शुद्ध करो—

सर्पाकारः रज्जु वर्तते। श्वेता धेनवः शोभंते। विदुषी योषितः मनोहारिणीं वाचः भाषंते। क्षुधिता बालिके वाचं न वदतः। भृत्यः उदारमती कर्त्रीः सेवते। मनस्विनीः कवयः कठोरं वाचं न भाषंते। पलायमानाः चमूः दृष्टा। गंधयुक्ता पुष्परेणवः गच्छंतीं पत्न्यौ स्पृशंति। प्रहृष्टा सरितः समुद्रं गच्छंति। म्लानां पुष्पमालाः गंधं न वितरंति। गच्छंत्यौ बाला इतस्ततः (इधर उधर) पश्यति। शुक्तिकाः रजताकारा वर्तते।

नीचे लिखे विशेषणोंको रखकर वाक्य बनाओ—

(क) रुचिरा (सुन्दर), मलीमसा (मलिन), पवित्रा, मनोज्ञा, पीडिता, श्रुता, प्रवीणा, पलायमाना (भागती हुई), म्रियमाणा (मरती हुई), म्लाना, ध्यानपरा, संयता, मधुरा, स्पृष्टा, जनप्रिया, मनोरमा, शिक्षिका, उपदेशिका।

(ख) मनोहारिणी, गुणवती, बुद्धिमती, श्रोतस्वती (बहने वाली), कल्लोलिनी (तरंगवाली), सुंदरी, गरीयसी, बिभ्रती, गच्छंती,

श्यामायमाना:———पश्यंति। कृतस्रोतापरित्याग:———समुद्र-वेष्टितां——रक्षति। निराशा:———प्रति (१) निवर्त्तते। मनोरमा———जराग्रस्तं——न कांक्षति। पानमत्ता:———प्रफुल्लं———न त्यजंति। स्वयंवरा———नृपकुलशोभितां——विशति। पति-लाभाकांक्षिण्य:————परिष्कृतविवाहवेशान्———परीक्षंते। विदुष्य:———गुणवत:———अभिलषंति। पयस्विनी———स्ववत्ससमीपं गच्छति। सौभाग्यशालिन्य:——रत्नभूषितं———गच्छंति। गुणग्राहिण्य:——कर्मकृत:———न तर्जंति। भर्तृभक्ता———मदपायिनी:———न सहते। धर्मार्थी——क्लेशकरां—इच्छति। कनीयान्———ज्यायसीं———अनुगच्छति। कृष्णा———मधुरां———कूजति। साध्वी———स्वभावसरलं———न तर्जति। सुशीला———विनयनम्रां———उपदिशति।

नीचे लिखे वाक्योंमें एकवचनके स्थानमें बहुवचन और बहुवचनके स्थानमें एकवचन करो—

विद्वांस: स्वामिन: शिक्षिता: पत्नी: अभिलषंति। पंडितबुद्धय: नरा: अर्थहीनां वाचं न भाषंते। पुत्रार्थिन्य: जनन्य: पुत्रार्थं धर्मं आचरंति। कृतविवाह: सज्जन: नवोढा: कन्या: उपदिशति। कन्या-द्रष्टुकामा जननी स्फटिकमयीं प्रासादमालां व्रजति। कृतासन-परिग्रह: साधु: पुन: पुन: रुदती: कन्या: उपदिशति। धर्मप्राणा योषित् ज्योत्स्नासहितां यामिनीं (रात्रि) तथा द्रुमपंक्तिशोभितां जन्म-भूमिं ईक्षते। संतानहितैषिणी श्वश्रू: नवीनां वधूप्रसूतिं स्पृशति। आधुनिका: लोका: अर्थकरीं विद्यां शंसंति। सहोदरा: भगिन्य: पद्मसमाकुलां पुष्करिणीं (छोटातलाब) गच्छंति। स्वगृहं आश्रयंतीं श्रियं जन: न त्यजति। पातितां नीतं आत्मानं संपद: स्वयं व्रजंति। देवा: अपि धार्मिकान् अर्चंति। सज्जनकृता: वांछा: सफला: एव भवंति। धर्मरक्षिणी यक्षी धर्ममूर्त्तिं जीवंधरं अर्चति।

१—प्रति—नि—पूर्वक वृतुङ् धातुका अर्थ 'लौटना' होता है।

ऊपर लिखे वाक्योंकी हिंदी लिखो ।

स्त्रीलिंग शब्दको पुंलिंग और पुंलिंगको स्त्रीलिंग बनाकर नीचेलिखे वाक्य शुद्ध करके लिखो—

निपुणः नायकः गुणवतीं नटीं उपदिशति । चपला बालिका सुंदरी कुमारी ईक्षते । वेगवंतः नदाः विशालं हिमवंतं गच्छंति । मांसलुब्धाः व्याघ्र्यः मानवान् कांक्षंति । (१) प्रसवित्र्यः नार्यः पुत्रं पश्यंति । जनयितारः पुत्रीः अभिलषंति । विलासिनी नारी संतं (सज्जन) भर्त्तारं तर्जति । प्रियवादिनः नराः निर्बोधं सम्राजं लुभंति । गरीयान् मानवः श्रेयांसं लभते । वपुष्मती नारी बलवतीः परिचारिकाः इच्छति । जानती बालिका पृच्छंतं बालकं वदति । कनीयसी पुत्री ज्यायांसं नरं लोचते । गायंत्यः नार्यः श्रोतॄन् वदंति । मैथिलः पुत्रः मागधीं पुत्रीं कांक्षति । गुंजंतः भ्रमराः पौत्रीं (नातिनी) दर्शंति । साध्वी पत्नी पतिं अनुगच्छति । भाग्यसमन्वितः योग्यः वरः (दूल्हा) दुर्लभः । परार्थतत्पराः संतः आपदं न पश्यंति । समदुःखसुखा भार्या श्रेष्ठा । अभिनवप्रियाः मानवाः नवां वसंतजलक्रीडां पश्यंति । धर्मपराङ्मुखाः क्रूराः पापफलं दुखं सहंते । पर-

---

१—जिन शब्दोंके अंतमें 'ऋ' है उनको स्त्रीलिंग बनानेके लिये 'ऋ' के स्थानमें 'री' कर देते हैं। जैसे—प्रसवितृ (उत्पन्नकरनेवाला) शब्दका स्त्रीलिंग बनाना है तो उसके 'तृ' के अंतमें जो 'ऋ' है उसको 'री' कर देना चाहिये प्रसवित्+री=प्रसवित्री । २—जब कि पुरुषके नामसे स्त्रीका नाम लेते हैं। जैसे कि—गोप (ग्वाला) की स्त्री, गणक (ज्योतिषी) की स्त्री आदि, तब अकारांत पुलिंग शब्दोंको अकारांत की जगह ईकारांत कर देते हैं। जैसे गोप—गोपी, गणक—गणकी, महामात्र—महामात्री । ३—जिनसे कि किसी एक तरहके बहुतसे पदार्थोंका ज्ञान होता है ऐसे सिंह आदि जातिवाचक अकारांत शब्दोंको स्त्रीलिंग बनानेके लिये ईकारांत कर देते हैं। जैसे—मयूर—मयूरी, व्याघ्र—व्याघ्री, मानव—मानवी, सिंह—सिंही आदि ।

व्यथां वीक्षमाणा कुमारी शोकविह्वला जाता। न्यायपरः पार्थिवः स्वप्रियां पट्टराज्ञीं वदति। आत्मानं घ्नंतः (हनते हुये) क्रुद्धाः किं (कौनसा) अहितं न आचरंति। श्रेष्ठा गुरुभक्तिः मुक्तिं वितरति। जैनी तपस्या स्वैराचारविरोधिनी, सुस्वभावः गुरुः निजसमीपं तिष्ठंतं शिष्यं गदति। वैश्यपतिः पुत्रं पोषति। सतोषा सा वनं गच्छति।

संस्कृत बनाओ—

मंदोदरी, रोती हुई सीताको समझाती है (उपदिशति)। लक्ष्मण सुस्थता पाते हैं। उत्साहवान् आदमी दुःखित नहीं होता है। उद्विग्न चित्त माता धीर धारती है। पहाड़ोंके समान (पर्वतसदृश) मेघ आकाशको आछन्न करते हैं। सुगंधित पवन दुर्गंधिको दूर करता है। काले२ बादलोंमें (नीलमेघाश्रिता) विजुली चमकती है। यात्री लोग स्वदेशको जाते हैं। हनुमान् उपवासकृश निरानंद जानकीको पूछते हैं। रावण नीलकेशी कमलमुखी सीताको देख कर (दृष्ट्वा) सोचता है (विचारयति)। सेना समुद्रको पार करती है। रोना सुनकर पीछे चलते२ (रोदनानुसरणकारी) हनुमान् रोती हुई सीताको देखता है। संयतवाक् लक्ष्मण अंतर्गतवाष्प होकर (सन्) भ्राताम्रा कहता है। धर्मात्मा हिंसाको नहीं करता है। भ्रमर पुष्परसको पीते हैं (पिबंति)। नदियां स्वादिष्ट जल-वाली (सुस्वादुतोया) होती हैं पर (परंतु) समुद्रको पहुंच कर (लब्ध्वा) अपेय हो जाती हैं। विद्या बहुत कल्याण बढाती है (पोषति) शांत मुनि सुख पाते हैं। दानी ब्राह्मणको लोग प्रशंसा करते हैं। राम स्वरस्वती देवीको नमस्कार करता है। गुरु लड़केको धर्म बतलाता है।

परिशिष्ट।

	जरा (बुढ़ापा) शब्द।			त्रि (तीन) शब्द।		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथ०—	जरा	जरसौ, जरे	जरसः, जराः	०	०	तिस्रः।
द्वि०—	जरसं, जरां	जरसौ, जरे	जरसः, जराः	०	०	तिस्रः।

	(१) श्री (लक्ष्मी शोभा) शब्द।			चतुर् (चार) शब्द।		
प्रथ०—	श्रीः	श्रियौ	श्रियः	०	०	चतस्रः।
द्वि०—	श्रियं	,,	,,	०	०	चतस्रः।

	दीर्घ ऊकारान्त भ्रू (२) शब्द।			(३) स्वसृ (बहिन) शब्द।		
प्रथ०—	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वि०—	भ्रुवं	भ्रुवौ	भ्रुवः	स्वसारं	स्वसारौ	स्वसॄः

ओकारान्त, ऐकारान्त और औकारान्त शब्दोंके रूप पुंलिंगके समान होंगे।

	इर् भागांत गिर् (वाणी) शब्द।			उर् भागान्त पुर् (नगर) शब्द।		
प्रथ०—	गीः	गिरौ	गिरः	पूः	पुरौ	पुरः।
द्वि०—	गिरं	गिरौ	गिरः	पुरं	पुरौ	पुरः।

	भकारांत—ककुभ् (दिशा) शब्द।			अप् (जल) शब्द।		
प्र०—	ककुप्, (ब्)	ककुभौ	ककुभः	०	०	आपः।
द्वि०—	ककुभं	,,	,,	०	०	अपः।

शेष इस् भागांत, उस् भागांत आदि व्यंजनांत स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप पुलिंगके समान समझना।

---

१ स्त्री शब्दके रूप भी इसके समान होते हैं परंतु प्रथमाके एकवचनमें स्त्री, और द्वितीया विभक्तिके एकवचनमें 'स्त्रीम्, स्त्रियं और बहुवचनमें 'स्त्रियः, स्त्रीः' ऐसे दो दो रूप होते हैं। लक्ष्मी शब्दके प्रथमाविभक्तीके एकवचनमें विसर्ग होते हैं और शेषरूप नदी शब्दके समान चलते हैं। २ दृन्भू, करभू, पुनर्भू, वर्षाभू शब्दोंसे भिन्न जिनके अंतमें भू है उनके, तथा पू, आदि एक स्वरवाले दीर्घ ऊकारांत शब्दोंके रूप इसी प्रकार होते हैं। ३ षष्ठ पाठमें दिये गये ऋकारांत शब्दोंसे भिन्न शब्दोंके रूप इसके समान होते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

जरा, श्रियं, लक्ष्मीः, तिस्रः, पुरं, गिरं, ककुप्, भ्रुवौ, खलपूः, गां, स्वसारौ, अपः, चतस्रः, अर्चिषौ, स्त्री।

हिंदी बनाओ—

यदा (जब) शरीरी जरसं गच्छति तदा (तब) शरीरश्रियं त्यजति तृष्णां श्रयति बुद्धिशून्यः च भवति (होता है)। शिशवः अस्पष्टां गिरं गदंति। लक्ष्मीः पुण्यशालिनं श्रयति। जन्मिनः चतस्रः गतीः भ्रमंतः दुःखं अनुभवंति। रामः स्वसारं प्रणमति। दुहितरः मातरं विलोक्य (देखकर) प्रसन्नाः भवंति। एवं मातरः अपि दुहितॄः विलोक्य प्रमोदंति। स्त्रियः अपः आनेतुं (लानेके लिये) तडागं गच्छंति। वाराणसी पूः अतिशोभते। सर्वाः ककुभः अधुना प्रसन्नाः वर्तंते। कुत्र अपि (कहीं भी) मेघाः न। उज्ज्वलां भासं (कांति) विलोक्य शत्रवः दूरं धावंति। मेघाच्छन्नाः ककुभः जाताः।

संस्कृत बनाओ—

लड़के नगरमें प्रवेश करते हैं। विद्वान लोग सरस्वती (गिर्) को प्रणाम करते हैं। चार स्त्रियां परस्परमें विवाद करती हैं। बुढ़ापा दुःखदायी होता है। मूर्ख लोग शीतल निर्मल जलको छोड़कर (त्यक्त्वा) कीचड़ (पंक) वाले जलोंको पीते हैं। विद्वान लोग जब तक (यावत्) शास्त्रपठनप्रवीण वाणी स्खलित नहीं होती है (न स्खलति), जब तक बुढ़ापा तनुकुटीरका आश्रय नहीं लेता है और जब तक दोनों पैर अपना (स्वकीय) काम नहीं छोड़ते हैं तब तक (तावत्) सांसारिकवेदनाभिभूत आत्माको सुखी करनेका (सुखयितुं) प्रयत्न करते हैं भौंहें क्रोध और प्रसन्नताको कहती हैं। राम तीन बातें (वार्ता) कहता है। गाय दूध देती है। धनाढ्य (सुरै) नारी दान देती है। ग्वालिन तीन गायोंको छोड़ती है। खलियान साफ करनेवाली (खलपू) खलि-

यानको जाती है। यवोंको काटनेवाली (यवलू) यवक्षेत्रमें घुसती है। गांवकी मुखिया स्त्री गांवकी रक्षा करती है। तीन पुत्री अपनी (स्वा) अपनी माताओंको प्रणाम करती हैं। लड़के बूआ (पितृ-ष्वसृ) को पूछते हैं।

स्त्रीलिंग शब्दोंके पहिचाननेका उपाय—

स्त्रीलिंगं योनिमद्, वस्त्री-सेना-वल्लि-तडित्-निशा।
वीचि-तंद्रा-ऽवट-ग्रीवा-जिह्वा-शस्त्री-दया-दिशा ॥ १ ॥
शिंशिपाद्या नदी-वीणा-ज्योत्स्ना-चारी-तिथी-धियां।
अंगुली-कलशी-वंगु-हिंगुपत्री-सुरा-नसां ॥ २ ॥
लाला-शिंबोष्णिका-श्रीणां सरघा-रोचना-भुवां।
इत् तु प्राण्यंगवाचि स्यादीदूदेकस्वरं क्षतः ॥ ३ ॥

अर्थ—स्त्री, नारी, बकरी, मत्सी, सिंही आदि—मनुष्योंकी अथवा जानवरोंकी स्त्रियोंके तथा वस्त्री, (एक तरहका कीडा) सेना (चमू, पृतना, वाहिनी आदि) वल्लि (लता, प्रतानिनी, वल्लरी आदि) बिजुली (तडित् शंपा, चपला, चरा आदि) रात (निशा तमिस्रा, रजनी, तमी, तुंगी आदि) लहर (वीचि, उत्कलिका, लहरी, भंगि आदि) निद्रा (तंद्रा आदि) गड्ढा (अवटु, घाटा, कृकाटिका आदि) गर्दन (ग्रीवा, आदि) जीभ (जिह्वा रसना आदि) छुरी (छुरिका, शस्त्री, असिपुत्री आदि) दया (दया, करुणा, कृपा आदि) दिशा (आशा, काष्ठा, ककुभ् आदि) नदी (धुनी, निम्नगा, आदि) वीणा (घोषवती, विपंची, आदि) चांदनी (ज्योत्स्ना, चंद्रिका, कौमुदी, आदि) मिती (प्रतिपद, द्वितीया, तृतीया, पूर्णिमातक) बुद्धि (धी, धिषणा, मनीषा, पंडा आदि, अंगुली (अंगुलि, करशाखा आदि) गागर (कलशी, गगरी, आदि) मदिरा (सुरा, वारुणी, आदि) नाक (नासा, नासिका आदि) लार (लाला, सृणीका, आदि) फली (शिंबा, बीजकोशी, आदि) लपसी (उष्णिका, यवागू आदि) लक्ष्मी (श्री, कमला, पद्मा, पद्मवासा, हरिप्रिया, क्षीरोदतनया, मा, रमा, इंदिरा, आदि) शहदकी मक्खी (सरघा, क्षुद्रा, मधुमक्षिका आदि) रोचना (गोरोचना, वंशरोचना, आदि) पृथिवी (भू, भूमि, मही, आदि) इन शब्दोंके अर्थको कहने वाले शब्द, प्राणियोंके अंगके अर्थको कहनेवाले ह्रस्व इकारांत शब्द, (श्रोणि, कटि, पालि आदि) और एकस्वर वाले दीर्घ ईकारांत (ह्री, धी, श्री, आदि) ऊकारांत (भ्रू, भू, द्रू, जू आदि) शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

तृतीय अध्याय।

स्वरांत नपुंसकलिंग।

प्रथम पाठ।

अ—कारांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ ज्ञानं	सुखं	वितरति।	ज्ञान	सुखको	देता है।
शस्त्रं	वृक्षान्	कृंतति।	हथियार	पेडको	काटता है।
वृक्षः	पुष्पं	विकिरति।	पेड	फूलको	वर्षाता है।
२ पद्मे	हृदयं	लुभतः।	दो पुष्प	हृदयको	लुभाते हैं।
सलिलं	कमले	सिंचति।	पानी	दो कमलोंको	सींचता है।
पौत्रः	फले	खादति।	नाती	दो फल	खाता है।
३ फलानि	मानवान्	लुभंति।	फल	मनुष्योंको	लुभाते हैं।
राजा	काननानि	पश्यति।	राजा	वनोंको	देखता है।
जीवाः	शरीराणि(१)	लभंते।	जीव	शरीरोंको	पाते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

अंगं, शरीरं, पत्रे, भूषणानि, कमलं, फलानि, शष्पाणि (घास), कुसुमे।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
वनाः		शोभंते।	वनानि		शोभंते।
पुष्पौ	हृदयं	लुभतः।	पुष्पे	हृदयं	लुभतः।
बालकः	कमलौ	कांक्षति।	बालकः	कमले	कांक्षति।
बालिका	फलान्	खादति।	बालिका	फलानि	खादति।

१—जिन शब्दोंमें 'र' अथवा 'ष' होंगे तो उनके नकारको णकार हो जायगा। लेकिन उन 'र' 'ष' और नकारके बीचमें—अ, चवर्ग, ल, टवर्ग, तवर्ग और सकार न हो। जैसे—रचना, अर्चन आदि में नहीं होता।

बालकः	पुस्तकान्	पठति।	बालकः	पुस्तकानि	पठति।
पशवः	पत्रान्	खादंति।	पशवः	पत्राणि	खादंति।
चंदनाः	सुगंधं	वितरति।	चंदनं	सुगंधं	वितरति।

शुद्ध करो—

रामः दयावहे चरित्रौ वदति। हृदयः धर्मं कांक्षति। पुण्यं सुखाः वितरति। जनाः ज्ञानाम् इच्छंति।

अकारांत नपुंसकलिंग दान शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	दानं	दाने	दानानि।
द्वितीया—	दानं	दाने	दानानि।

द्वितीय पाठ।

इकारांत(१) नपुंसक लिंग।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	वारि	जीवनं	वितरति।	जल	जीवन	देता है।
	मेघः	वारि	मुंचति।	मेघ	जल	छोड़ता है।
	बालः	दधि	कांक्षति।	लड़का	दही	चाहता है।
२	अक्षिणी	सक्थिनी	पश्यतः।	दो आंखें	दो जंघाओंको	देखती हैं।
	सक्थिनी	शकटे	वहतः।	दो धुरा	दो गाड़ियोंको	धारण करते हैं।
३	मेघाः	वारीणि	त्यजंति।	मेघ	जलोंको	छोड़ते हैं।
	अक्षीणि	जनान्	अवंति।	आखें	मनुष्योंको	रक्षा करती हैं।

१—नपुंसक लिंग शब्दोंके अंतका दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—ग्रामणी शब्द दीर्घ ईकारांत है तो वह नपुंसक लिंगमें ह्रस्व 'ग्रामणि' हो जायगा और उसके रूप 'वारि' के समान चलेंगे। इसी तरह दीर्घ ऊकारांतको ह्रस्व उकारांत दीर्घ ऋकारांतको ह्रस्व ऋकारांत, ऐकारांत, तथा एकारांतको ह्रस्व इकारांत, और ओकारांत, तथा औकारांत को ह्रस्व उकारांत समझना चाहिये।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अस्थि, दधीनि, अक्षीणि, सक्थि, वारीणि, अक्षि।

नपुंसकलिंग इकारांत वारि शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	वारि	वारिणी	वारीणि।
द्वितीया—	वारि	वारिणी	वारीणि।

तृतीय पाठ।

उ-कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	मधु	भ्रमरान्	लुभति।	शहद	भ्रमरोंको	लुभाता है।
	मृगाः	पर्वतसानु	श्रयंते।	हरिणी	पर्वतशिखरका	आश्रयण करती है।
	बालिका	अश्रु	गूहति (ते)।	लडकी	आंसू	छिपाती है।
२	हनुनी	शोभां	वितरतः।	दो हथियार	शोभा	देते हैं।
	शिशिरं	जानुनी	तुदति (ते)।	पाला (ठंड)	दो घोटुओंको	तकलीफ देता है।
	अगुरुणी	फलानि	विकिरतः।	दो शीशमके पेड़	फलोंको	वर्षाते हैं।
	हरिण्यः	सानुनी	श्रयंते।	हरिणी	दो सानुओंका	आश्रयण करती हैं।
३	सानूनि	अंबूनि	वितरंति।	शिखरें	जल	देती हैं।
	भ्रमराः	मधूनि	पिबंति।	भ्रमर	मधु	पीते हैं।
	अगुरूणि	फलानि	विकिरंति।	शीशम वृक्ष	फल	वर्षाते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
बालकाः	मधून्	पिबंति।	बालकाः	मधूनि	पिबंति।
अश्वः	जतुं	खादति।	अश्वः	जतु (यव)	खादति।
हरिण्यः	सानुः	श्रयंति।	हरिण्यः	सानूनि	श्रयंते।

सानु	विहंगमान्	लुभतः।	सानुनी	विहंगमान्	लुभतः।
अगुरुः	फलानि	विकिरति।	अगुरु	फलानि	विकिरति।
अग्नि	दारु	दहति।	अग्निः	दारुणी	दहति।
दारवः	अग्निं	गूहंति।	दारूणि	अग्निं	गूहंति।

निम्नलिखित शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

दारु, अश्रूणि, जानुनी, जतूनि, मधु, मधूनि, सानूनि, वस्तु, ज्ञानं, दानं, पिबतः।

शुद्ध करो—

अंबवः पृथिवीं सिंचंति। बालकः मधुं इच्छति। सानूनि पर्वतं भूषतः। बालकः अश्रून् मुंचति। शिष्यः दारुं आहरति। वस्तु चौरान् लुभतः। शिशिरः जानु तुदति।

उकारांत नपुंसकलिंग मधु शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	मधु	मधुनी	मधूनि।
द्वितीया—	मधु	मधुनी	मधूनि।

चतुर्थ पाठ।

व्यञ्जनांत नपुंसक लिंग।

मत् (वत्) भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	
१	गुणवत्	बलवत्	इच्छति।	गुणवान् (मित्र) बलवान् (मित्र) को चाहता है
	श्रीमत्	विद्यावत्	स्पृशति।	श्रीमान् (मित्र) विद्यावान् (मित्र) को छूता है
२	श्रीमती	विद्यावती	स्पृशतः।	दो श्रीमान् (मित्र) विद्यावान् (मित्र) को छूते हैं
	विद्यावती	रूपवती	इच्छतः।	दो विद्यावान् दो रूपवान् को चाहते हैं।
३	श्रीमंति	बलवंति	इच्छंति।	श्रीमान् (मित्र) बलवान् (मित्रों) को चाहते हैं
	बलवंति	श्रीमंति	स्पृशंति।	बलवान् (मित्र) श्रीमान् (मित्रों) को छूते हैं

(Right column header: कर्ता कर्म क्रिया।)

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

बलवंति, श्रीमती, रूपवत्, धनुष्मती, गुणवंति ।

नपुंसकलिंग मत् (वत्) भागांतके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गुणवत्	गुणवती	गुणवंति ।
द्वितीया—	गुणवत्	गुणवती	गुणवंति ।

पंचम पाठ ।

नकारांत ।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।
१	वेश्म	शर्म	वितरति ।	घर	सुखको	देता है ।
	साधवः	अघं (कर्म)	त्यजंति ।	साधु लोग	कुत्सित (कर्म) को	छोड़ते हैं ।
	भस्म	धाम	कुर्वंति ।	राख	घर वा शरीरको	ढकती है ।
२	बालकाः	वेश्मनी	पश्यंति ।	लड़के	दो घरको	देखते हैं ।
	धन्वनी	योद्धारं	लुभतः ।	दो धनुष	योद्धाको	लुभाते हैं ।
	भृत्यः	कर्मणी	स्मरति ।	नौकर	दो कामको	याद करता है ।
३	दुर्नामानि	जनान्	तुदंति ।	बवासीरें (सब प्रकारकी)	पुरुषको	दुःख देती हैं ।
	जनाः	शर्माणि	इच्छंति ।	लोग	कल्याणोंको	चाहते हैं ।
	आर्यिकाः	वेश्मानि	त्यजंति ।	आर्यिकायें	घरोंको	छोड़ती हैं ।
	चर्माणि	वर्माणि	कुर्वंति ।	खालें	शरीरको	ढकती हैं ।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

वर्त्मनी, (मार्ग) शर्म, कर्माणि, भस्म, चर्मणी, दुर्नाम, वर्म, अर्वाणि ।

	अशुद्ध			शुद्ध	
धामा	साधून्	भूषति।	धाम (तेज)	साधून्	भूषति।
शिशुः	जन्मं	लभति।	शिशुः	जन्म	लभते।
ब्राह्मणः	चर्मौ	स्पृशति।	ब्राह्मणः	चर्मणी	स्पृशति।
पद्मो		शोभेते।	पद्मनी		शोभेते।
भृत्यः	कर्मणः	त्यजति।	भृत्यः	कर्माणि	त्यजति।
राजा	वर्त्मानं	पश्यति।	राजा	वर्त्म	पश्यति।
मानवः	शर्मा	इच्छति।	मानवः	शर्म	इच्छति।
चर्माणी	भटं	लोभतः।	चर्मणी(दो ढालें)	भटं	लुभतः।

संस्कृत बनाओ—

योद्धा लोग ढालें चाहते हैं। कर्म जीवोंको दुःख देता है। विद्यार्थी घरको जाते हैं। बवासीर पीड़ा देती है। शरीर दुर्बल है।

नकारांत वेश्मन् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	वेश्म	वेश्मनी	वेश्मानि।
द्वितीया—	वेश्म	वेश्मनी	वेश्मानि।

षष्ठ पाठ।

अस्—भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	महः	मनः	लुभति।	उत्सव	मनको	लुभाता है।
	चेतः	एनः	भजते।	मन	पाप	करता है।
	रजः	नभः	कुंवति।	धूलि	आकाशको	ढकती है।
	पयः	रजः	उक्षति।	जल	धूलिको	भिगोता है।

२ सरसी	नयने	लुभतः।	दो तालाब	आंखोंको	लुभाते हैं।
बालकः	सरसी	पश्यति।	लड़का	दो तालाबको	देखता है।
३ चेतांसि	दुःखं	अनुभवंति।	बहुतसे चित्त	दुःखका	अनुभव करते हैं।
बालकाः	पयांसि	पिबंति।	लडके	दूध	पीते हैं।
साधवः	तपांसि	चरंति।	साधुलोग	तपोंको	करते हैं।
सरांसि	अंबूनि	वितरंति।	तालाब	जल	देते हैं।
तमांसि	आकाशं	कुर्वंति।	अंधकार	आकाशको	ढांकते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

तमसी, सरांसि, अंभः, तपसी, मनांसि, चेतसी, रजांसि, पयः।

अशुद्ध			शुद्ध		
मनाः	सुखं	अनुभवति।	मनः	सुखं	अनुभवति।
कविः	छंदानि	सृजति।	कविः	छंदांसि	सृजति।
साधवः	यशं	लभंते।	साधवः	यशः	लभंते।
अंभांनि	पिपासां	संहरंते।	अंभांसि	पिपासां	संहरंते।
मुनिः	वासं	त्यजति।	मुनिः	वासः	त्यजति।
वासाः	शरीरं	कुर्वंति।	वासांसि (कपडे)	शरीरं	कुर्वंति।
शोकः	चेतं	दहति।	शोकः	चेतः	दहति।

शुद्ध करो—

तमांसि वर्तते। रजः आकाशं कुर्वंति। सरसी हंसान् लुभति। चेतः दुखं अनुभवतः। वेश्मं शोभते। भस्माः अंगं भूषंति। शिशवः जन्मनः लभंते। राजा शर्मं इच्छति। कर्माणः फलानि वितरंति। चर्मौ भटं रक्षतः।

अस् भागांत 'महस्' शब्द।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	महः	महसी	महांसि।
द्वितीया—	महः	महसी	महांसि।

सप्तम पाठ।

इस्—भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	हविः	रेतः	पोषति।	घी	वीर्यको	बढ़ाता है।
	अग्निः	हविः	इच्छति।	आग	घीको	चाहती है।
	चंद्रः	ज्योतिः	वितरति।	चंद्रमा	ज्योतिको	देता है।
	ज्योतिः	साधुं	भूषति।	तेज	साधुको	भूषितकरता है।
२	अर्चिषी	नयनानि	लुभतः।	दो प्रभायें	आखोंको	लुभाती हैं।
	ग्रहौ	ज्योतिषी	विकिरतः।	दो ग्रह	दो ज्योति	देते हैं।
	अग्निः	हविषी	दहति।	अग्नि (दो प्रकारके)	घीको	जलाती है।
३	सर्पींषि	औदरिकान्	लुभंति।	घी (बहुव०)	भूखोंको	मुग्ध करते हैं।
	छात्राः	सर्पींषि	इच्छंति।	विद्यार्थी लोग	घी	चाहते हैं।
	अग्निः	हवींषि	दहति।	अग्नि	घीको	जलाती है।

अशुद्ध			शुद्ध		
हवींषि	बलं	वितरति।	हवींषि	बलं	वितरंति।
ज्योतिषी	नयनं	तुदते।	ज्योतिषी	नयने	तुदतः।
छात्राः	सर्पिषो	भिच्चंते।	छात्राः	सर्पिषो	भिच्चंते।
ग्रहाः	रोचिषः	वितरंति।	ग्रहाः	रोचींषि	वितरंति।
सर्पिषः	जिह्वां	लुभंति।	सर्पींषि	जिह्वां	लुभंति।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

सर्पिः, हवींषि, रोचींषि, ज्योतींषि, सर्पिषी, ज्योतिः।

२—इ, उ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, ह, य, र, ल, के बादमें यदि 'स' होगा तो उसको 'ष' आदेश हो जायगा। जैसे—ज्योतिस् शब्दमें 'त्' के 'इ' से पर 'स्' है इसलिये उसको 'ष' हो जानेसे 'ज्योतिषी' बनता है।

शुद्ध करो—

ज्योतिष: चंद्रं भूषंति। बालक: रोचिं पश्यति। मेघा: अर्चीन् कुंवंति। सर्पींषि छात्रान् लुभति। हविषो अग्निं स्पृशति।

इस् भागांत "जोतिस्" शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
प्रथमा—	ज्योति:	ज्योतिषो	ज्योतींषि।
द्वितीया—	ज्योति:	ज्योतिषो	ज्योतींषि।

अष्टम पाठ।

उस् भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	वपु:	मानवं	तुदति।	शरीर	मनुष्यको	कष्ट देता है।
	बालक:	वपु:	स्पृशति।	बालक	शरीर	छूता है।
	धनुष्मान्	धनु:	मुंचति।	धनुषधारी	धनुषको	छोड़ता है।
	धनु:	वीरं	भूषति।	धनुष	वीरको	भूषित करता है।
२	चक्षुषो	आनंदं	लभेते।	दो आंखें	आनंद	पाती हैं।
	वीर:	धनुषी	वहति।	वीर	दो धनुषको	धारणकरता है।
३	धनूंषि	वीरान्	भूषंति।	धनुष (ब०व०)	वीरोंको	भूषित करते हैं।
	वीरा:	धनूंषि	इच्छंति।	वीर	धनुषोंको	चाहते हैं।
	चक्षूंषि	अश्रूणि	मुंचंति।	आंखें	आंसू	छोड़ती हैं।
	प्रासाद:	चक्षूंषि	लुभति।	मकान	आखोंको	लुभाता है।

अशुद्ध			शुद्ध		
धनुष:		शोभंते।	धनूंषि		शोभंते।
वीरा:	धनन्	इच्छंति।	वीरा:	धनूंषि	इच्छंति।

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
चक्षवः	पदार्थान्	पश्यंति।	चक्षूंषि	पदार्थान्	पश्यंति।
चक्षु	अश्रूणि	मुंचतः।	चक्षुषी	अश्रूणि	मुंचतः।
धनुषी	वीरं	भूषति।	धनुषी	वीरं	भूषतः।
चक्षूंषि	आनंदं	लभते।	चक्षूंषि	आनंदं	लभंते।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

धनुषी, वपूंषि, चक्षुषी, धनुः, आयूंषि, वपुषी।

शुद्ध करो--

योद्धा धनुं वहति। धनुषी योद्धारं भूषति। चक्षुः अश्रूणि मुंचंति। वपुषी दुखं अनुभवतः।

उस् भागांत वपुस् शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	वपुः	वपुषी	वपूंषि।
द्वितीया—	वपुः	वपुषी	वपूंषि।

हिंदी बनाओ—

ध्रुवाणि (चिरस्थायी) परित्यज्य (छोड़कर) न वरं अध्रुवसेवनं (१)। दुष्करं ग्रंथनिर्माणं। सततं (हमेशा) दुग्धधौतः (धायागया) अपि वायसः (काक) खलु वायसः। मर्मच्छेदि वचः शस्त्रं इव तीक्ष्णं भवति। जनाः नक्तं (रातमें) कुकर्माणि आचरंति। कालः भूतानि (जीव) पचति। (पकाता है) ऋणसमं कष्टं न वर्तते। आलस्यं विनाशहेतुः। सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः। सकलं (सर्व) दूरतः (दूरसे) रमणीयं।

१ जिस वाक्यमें कोई क्रिया न हो उसमें वर्तते, भवति (है, होता है) ये दो क्रियायें समझना और उनका हिंदी करते समय लिखना। संस्कृतमें कर्ता कर्म क्रिया आदिको क्रमसे रखनेका नियम नहीं है इसलिये विभक्तीके चिन्होंसे उनको पहचानकर हिंदी बनाना।

पर्वताः दूरतः रम्याः। सर्वदा कर्म आचरणीयं। आकाशकमलं मूर्खाः इच्छंति। धन्यः गृहस्थाश्रमः। ऐश्वर्यं न हि शाश्वतं (नित्य)। महत् अपि ऐश्वर्यं नाशं गच्छति। दुर्गं (किला) तुल्यं निजगृहं। दुःखसहितं सर्वं सुखं। दैवाधीनं सर्वं सुत-पत्नी-धनादिकं।

संस्कृत बनाओ—

निर्गुण लावण्य शोचनीय होता है। संतोष बड़ा धन है। छोटे लोग बड़े लोगोंके पीछे चलते हैं। जितेंद्रिय मनुष्य धन्य हैं। पण्डित परिमित बोलते हैं। ज्ञानी लोग निरहंकार होते हैं। पापचारी दुःखसागरमें प्रवेश करते हैं। पापी नीचे (अधः) जाते हैं। संतुष्ट मनुष्य सर्वदा सुखी होता है। निराशा परम दुःख देती है। दुःख सुख पहियेके समान (चक्रवत्) घूमते हैं। जीवन सुखदुःखमय है। भूखा (बुभुक्षित) क्या (किं) पाप नहीं करता है। अन्यायोपार्जित द्रव्य शीघ्र ही नष्ट हो जाता है (नश्यति)। मन सुख चाहता है। राजशासन अनुल्लंघनीय होता है। विद्या सर्वत्र गौरव है। अनृत-भाषी लोग शपथ करनेके लिये (कर्तुं) सर्वदा उद्यत रहते हैं। जीवित बुद्बुद तुल्य है। ज्ञानरहित जीवन शून्य है। सूर्य अंधकार (तमस्) को नष्ट करता है।

नवम पाठ।

(नपुंसकलिंग विशेष्यशब्दोंके साथ विशेषणका व्यवहार)

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
सजलं अभ्रं	निर्मलं	अंभः वितरति।	सजल मेघ	निर्मल जल	बरसाता है।
सजले अभ्रे	श्यामलं वनं	उक्षतः।	सजल दो मेघ	हरे वनको	सींचते हैं।

कर्ता कर्म क्रिया।	कर्ता कर्म क्रिया।
तीक्ष्णे चक्षुषी श्यामायमाने वने पश्यतः।	तीक्ष्ण आंखें हरे दो वनोंको देखती हैं।
प्रस्फुटिते कमले तोरणद्वारं भूषतः।	प्रफुल्लित दो कमल तोरण द्वारको भूषित करते हैं।
मनोहराणि सरांसि नयनानि लुभंति।	मनोहर तालाब नयनोंको लुभाते हैं।
बालकः उपदेशपूर्णानि पुस्तकानि पठति।	बालक उपदेशसे पूर्ण पुस्तकोंको पढता है।
भ्रमराः साधु मधु पिबंति।	भ्रमर अच्छे मधुको पीते हैं।
गच्छत् अभ्रं चंद्रं कुर्वति।	चलता हुआ मेघ चंद्रमाको ढांकता है।
(१) गच्छंतो अभ्रे पर्वतं कुर्वतः।	चलते हुये दो मेघ पर्वतको ढांकते हैं।
गच्छंति अभ्राणि पर्वतानि भूषंति।	चलते हुये मेघ पर्वतोंको भूषित करते हैं।
गच्छंति अभ्राणि पयांसि वितरंति।	जाते हुये मेघ जल बरसाते हैं।
बालकाः श्रीमत् अंबरं पश्यंति।	लड़के सुंदर बादल देखते हैं।
श्रीमती अगुरुणी शोभेते।	सुंदर दो अगुरु शोभते हैं।
ज्योतिष्मंति नक्षत्राणि रात्रिं भूषंति।	उज्ज्वल नक्षत्र रात्रिको शोभित करते हैं।
राजानः रत्नवंति सद्मानि इच्छंति।	राजा लोग रत्नवाले घरोंको चाहते हैं।
जनाः बलवंति वपूंषि शंसंति।	लोग बलिष्ठ शरीरोंको चाहते हैं।

१—नपुंसक लिंगमें शतृ प्रत्ययांत शब्दोंके द्विवचनमेंभी 'तो' से पहिले 'न्' आता है। जैसे—गच्छंती।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
विशालं अगुरुणी शोभेते।	विशाले अगुरुणी शोभेते।
बालकः मधुरं फलानि खादति।	बालकः मधुराणि फलानि खादति
नीरसः दारु तिष्ठति।	नीरसं दारु तिष्ठति।
स्वादुनी फलानि शोभंते।	स्वादूनि फलानि शोभंते।
कारुः भग्नानि दारुणी कांक्षति।	कारुः भग्ने दारुणी कांक्षति।
बलवती वपुषी दृष्टा।	बलवती वपुषी दृष्टे।
वक्राकारः धनुः सुंदरं।	वक्राकारं धनुः सुंदरं।
सुंदरो चक्षुषी अश्रु मुंचति।	सुंदरे चक्षुषी अश्रु मुंचतः।
शीतलः पयः न पेयः।	शीतलं पयः न पेयं।
उज्ज्वला तेजसी नयने तुदति।	उज्ज्वले तेजसी नयने तुदतः।
गंधयुक्ता हविः रोचते।	गंधयुक्तं हविः रोचते।
अग्निः निक्षिप्तान् सर्पींषि दहति।	अग्निः निक्षिप्तानि सर्पींषि दहति।
पथिकाः प्रासादशोभितानि वर्त्मनी पश्यंति।	पथिकाः प्रासादशोभिते वर्त्मनी पश्यंति।
चंद्रमाः रत्नवंतं सद्म कवते।	चंद्रमा रत्नवत् सद्म कवते।
नीलः नभः हिमाद्रिं स्पृशति।	नीलं नभः हिमाद्रिं स्पृशति।
उद्विग्ना मनसी वर्तेते।	उद्विग्ने मनसी वर्तेते।
धुसरः रजः धेनुं भूषति।	धूसरं रजः धेनुं भूषति।
मनोरमा सरसी नयनानि लुभति।	मनोरमे सरसी नयनानि लुभतः।

शुद्ध करो—

मलीमसः चेतांसि दुःखं अनुभवति। राजनिर्मिताः वर्त्मानि प्रशस्तानि। श्वेतं भस्मं देहं भूषति। नीलः नभः हिमाद्रिं स्पृशति। हिमाद्रिः नीलः नभः चुंबति। संसारिणः सुसज्जितान् वेश्मानि इच्छंति। पीडिता चक्षुषा वर्त्म न पश्यति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

रत्नवंति, मनोरमे, दृष्टानि, वर्त्म, स्पृशंति, स्वादूनि, सद्मनी, गृहाणि, नयने।

एक एक विशेषण रखकर वाक्य पूरे करो—

——काननानि——नयनानि लुभंति। ——बालकौ——सरसी पश्यंतौ व्रजतः। आश्रमसेवकाः——दारुणि आहरंति। ——सिंधुजलं शोभते। ——साधुः कल्याणानि वितरति।

उपयुक्त कर्ता और कर्मको व्यवहारमें ला वाक्य पूरे करो—

श्रीमंति——शोभंते। तपस्विनः——कठोराणि——चरंति। विशाले——स्वादूनि——विकिरतः। अग्निः निच्छिमानि——दहति। नद्यः मधुराणि————वहंति। शांतः——अधिकं————अनुभवति। पंडिताः उन्मत्तानि——निंदंति। महती——शोभेते। बलवंति——श्रीमंति——इच्छंति।

नीचे लिखे वाक्योंमें एकवचनके स्थानमें बहुवचन और बहुवचनके स्थानमें एकवचन रक्खो—

मतिमान् अर्थनाशं मनस्तापं दुश्चरितानि न वदति। मनस्वी दरिद्रः जनः वनं व्रजति। अनलः निरिंधनः निर्वाणं गच्छति। संसारिणः भिक्षुजीवनं गर्हितं इति वदंति। मानवः अदृष्टविरह-व्यथं जीवितं अभिलषंति। प्रियवाक्सहितं दानं दुर्लभं। घोराकृतिः शूकरः दृष्टः। संचयशीलः जंबुकः निस्वादु स्नायुबंधनं खादति। अचिंतितानि दुःखानि मानवं उपतिष्ठंते। पराधीन-जीवनं मरणं इव। अमलं वासः शोभते। नूतनानि आभरणानि सुंदरीं भूषंति। काणं नेत्रं न पश्यति। ज्वरपीडितं गात्रं उत्तप्तं भवति। ऊषरभूमिस्थं बीजं न प्ररोहति। पुण्यात्मानः ऐहिकं सुखं लभंते। एकांतं आश्रितं चित्तं शांतिं लभते। उत्तमं औषधं ज्वरं प्रहरति। बालकाः सरसानि फलानि खादंति। नदीसलिलं

तरलं (चंचल) भवति। तप्तं जलं पेयं। नवानि पत्राणि हरितानि। सज्जनहृदयं सदयं भवति।

संस्कृत बनाओ—

पंडित लोग असंभव पदार्थकी इच्छा नहीं करते हैं। जीव उपस्थित दुःख भोगता है। धन सुलभ नहीं है। अर्थी लोग और शरणागत लोग विमुख होकर (संतः) जाते हैं। कहावत (किंवदंती) प्रसिद्ध है। मेघ जलवासी जंतुओंकी रक्षा करते हैं। दुर्ग (किला) दुर्गवासियोंको बचाता है। विद्वान् मंत्रीलोग राजाओंकी रक्षा करते हैं। वन वनवासियोंकी रक्षाकरते हैं। मंथर तालाब छोड़ता है। हिरण्यकादिक विपत्‌की शंका करते हैं (शंकंते)। व्याध वनमें घूमते घूमते मंथरको देखता है। तीक्ष्ण शस्त्र शत्रुशिरको काटता है। हरे पत्ते मनको लुभाते हैं। श्वेत कपड़ा अच्छा-लगता है। शत्रु हृदय भग्न हो गया (जातं)। शीतल जल पेय होता है। चुराया (अपहृत) धन सुखकर नहीं है। पुरानी पुस्तकें प्रायः शुद्ध होती हैं। पढ़ाहुआ (पठित) पुराण हृदयको ज्ञान देता है। दुष्कृत दुखकर होते हैं। निंदासम पाप नहीं है। मोहसम भय नहीं है। अच्छे वचनको विद्वान् बोलता है। यमुनाजल काला है। विंध्याचलवन भीषण है। गोदुग्ध मीठा और पुष्टिकर होता है। विद्यार्थी घीको चाहते हैं। नवीन पुस्तक सुंदर होती है। पढ़नेवाले सर्वदा नवीन पुस्तक चाहते हैं। लोग नवीन चीज चाहते हैं। लड़का लाल कोकनद देखता है। प्राणी शुभाशुभ कर्मोंको भोगते हैं। ज्ञान अधिक सुखकारी है।

हिंदी बनाओ—

संत्रस्ताः मृगयः इतस्ततः (इधर उधर) धावंति। नदी सागरं गच्छति। बलवती सिंही निर्बलां हस्तिनीं तुदति। विकसिताः

(खिली हुई) कमलिन्यः सुगंधं वितरंति। साध्वी नारी गृहं गच्छति। भगिनी (बहिन) भ्रातरं अवति। सुपरिष्कृताः वाचः जनान् अवंति। सकलाः संपदः नश्वराः वर्तंते। मनोहरं सरः सपंकजं (कमलसहित) वर्तते। विद्याहीनाः जनाः न शोभंते। धावन् अश्वः पतति। मुंडितः परिव्राड् इह (यहां) आगच्छति। पठन् पुत्रः मोदं यच्छति। फलिनः वृक्षाः नमंति। गुणिनः जनाः नमंति। परं (लेकिन) शुष्काः तरवः मूर्खाः नराः च (और) न नमंति। सरलस्वभावी जनः दुर्लभः। सततं (सर्वदा) प्रियवादिनः जनाः सुलभाः। अप्रियाः तथा पथ्याः (हित करने वाली) वाचः दुर्लभाः। शोभंति जिनभवनानि सर्वदा शोभंते। व्याकुलः पांथः तरुमूलं आश्रयति। बहवः छात्राः इह पठंति। महत् हिमं शरीरं तुदति। कोमलं चरणं क्षतं। ज्ञानं इव सुखकरं, मधु इव पापदायकं द्वितीयं न वर्तते। त्रीणि रत्नानि-जलं, अन्नं सुभाषितं (अच्छे वचन)। भावि कार्यं अन्यथा (विपरीत) न भवति। चिंतासमं न अस्ति (है) शरीरशोषकं। स्वल्पं नरायुः बहुलं च शास्त्रं। धर्मतत्त्वं अहिंसनं। न उचितं मृतमारणं। वरं मृत्युः न पुनः अपमानः। पंडितसेवनं एव श्रेयः। पुण्यार्थं स्वकीयं अर्थं प्रयच्छंतं जनं मुक्तिः इच्छति, लक्ष्मीः व्रजति, कीर्त्तिः ईक्षते, प्रीतिः चुंबति सौभाग्यं सेवते, नीरोगता आश्रयति। यथा (जैसे) वनाग्निः वनं दहति, तथा सत् तपः कर्माणि दहति,। एकं वैराग्यं एव समस्तं कर्म अंतं नयति। ईश्वरपूजा पापं लुंपति, श्रियं वितरति, नीरोगतां पोषति, स्वर्गं यच्छति, मुक्तिं रचति। धर्मसेवकं जनं—कदाचिद् (कभी) अपि रोगः क्रुद्धः इव न पश्यति, दारिद्र्यं भयभीतं इव : त्यजति। मूर्खाः पुरुषाः देवं, कुदेवं, सुगुरुं, कुगुरुं, धर्मं, अधर्मं, गुणिनं न लोचंते।

परिशिष्ट।

ऋकारांत 'कर्तृ' शब्दके रूप।			नकारांत अहन् (दिन) शब्द।		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथ०—कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि।	अहः	अहनी, अह्नी	अहानि।
द्वि०—कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि।	अहः	अहनी, अह्नी	अहानि।

(१) अत् (शत्) भागांत गच्छत् शब्द।			चतुर् (चार) शब्द।		
प्रथ०—गच्छत्	गच्छंती	गच्छंति।	०	०	चत्वारि।
द्वि०—गच्छत्	गच्छंती	गच्छंति।	०	०	चत्वारि।

हिंदी बनाओ—

परिणतं (पूरा हुआ) अहः। सूर्यः लोहितः (लाल) जातः। तमः जगत् वेष्टते। ककुभः पक्षिशब्दसमाकुलाः जाताः। नक्तं पाप· कर्माणि वर्द्धंते। स्वकीयं वचः सर्वदा कार्यं। स्वभावं गच्छत् (प्राप्त होती हुई) वस्तु सर्वदा आनंदं वितरति। स्तेयं (चोरी) न आचरणीयं। वेलामयं (समयस्वरूप) जीवितं। अल्पा विद्या निरर्थिका। मतिमंतः क्रमशः कणशः च (थोड़ा थोड़ा करके) महत् धनं अर्जंति। गतानि अहानि न पुनः आगच्छंति। कामातुराः भयं लज्जां च न आचरंति। चित्तचेष्टितानि (मनके काम) विचित्राणि भवंति। विनश्वरं अखिलं जगत्। क्रोधाविष्टः (क्रोधी)

१—जिस शब्दके अंतमें वर्गका पहिला, दूसरा, तीसरा अथवा चौथा अक्षर होता है उसके रूप नपुंसकलिंगमें प्रथमा, द्वितीया विभक्ती के बनाना हों तो एकवचनमें वैसाका वैसा ही रहने देना चाहिये. द्विवचनमें शब्दके अंतमें दीर्घ 'ई' जोड़ देना और बहुवचनमें शब्दके अंतमें ह्रस्व 'इ' जोड़कर अंतके शब्दसे पहले अनुस्वार और बढ़ा देना चाहिये। जैसे—बलवत्, तकारांत शब्द है उसके एकवचनमें 'बलवत्' ही रहा। द्विवचनमें दीर्घ 'ई' लगानेसे 'बलवती' हुआ और बहुवचनमें ह्रस्व 'इ' लगा दिया तो बलवति हुआ अंतका अक्षर जो 'त्' था उससे पहिले अनुस्वार किया तो बलवंति हुआ।

पुमान् प्रायः (अक्सर) रिपति स्वहितैषिणः। विद्वांसः प्रायः धनहीनाः। शीलं (ब्रह्मचर्य) परमः गुणः। निर्धनः शतं (सौ) शती, दशशतं, दशशती लक्षं (लाख), लक्षी कोटिं (करोड़) वांछति परं तृष्णा समाप्ता न भवति। गुणाः पूजास्थानं, न च लिंगं (स्त्री आदि) न च वयः (आयु)। हितकर्तृणि वस्तूनि दुर्लभानि। पंडिताः निष्फलं कर्म न आचरंति। विद्वान् एव बोधति विद्वज्जनपरिश्रमं। न वर्तते प्राणसमं प्रियं। वरं मित्रं पुरातनं (पुराना)। वियोगः दुःसहः भवति। कर्तव्यं आचरन् नरः सुयशः लभते। स्पष्टवादी जनः वंचकः (ठग) न भवति। जनः यादृशं (जैसा) बीजं वपति तादृशं (वैसा) एव फलं लभते।

नपुंसक लिंग शब्दोंके जाननेका उपाय—

न, ल, स्तु, त, त्त, संयुक्तार, रु, यांतं नपुंसकं॥ १॥
धन-रत्न-नभोऽन्न-हृषीक-तमो-घुसृणांऽगण-शुल्क-शुभांबुरुहां।
अघ-गूथ-जलांऽशुक-दारु-मनो-विल-पिच्छ-धनु-र्दल-तालु-हृदां २।

अर्थ—जिन शब्दोंके अंतमें, न, ल, स्तु, त, त्त और मिले हुये र, रु, य, इतने अक्षरों मेंसे कोई एक अक्षर हैं वे शब्द जैसे—ज्ञान, दान, मान, अजिन, चक्रवाल (समूह), दल (टुकड़ा) बल, वस्तु, मस्तु (दहीका निचोड़), शीत, अद्भुत (आश्चर्य), भित्त (टुकड़ा, खंड) निमित्त, अग्र (सामने, ज्यादा), गोत्र (कुल), चैत्र, शुक्र (सातवीं शरीरकी धातु, वीर्य), श्मश्रु (डाढ़ी, कूर्च), शरव्य (बाणका निशाना), लक्ष्य, वेध्य, सान्नाय्य (होमकी सामग्री) आदि, तथा धन (द्रविण, द्रव्य, वस्तु आदि), रत्न (माणिक आदि), आकाश (नभस्, वियत्, अंबर, अंतरीक्ष, ख, आदि), अन्न (सिक्थ, भक्त आदि), इंद्रिय (हृषीक, अक्ष, करण आदि), अंधकार (तमस्, अवतमस आदि), केसर (कुंकुम, घुसृण, काश्मीरज आदि), आंगण (अंगण, प्रांगण, अजिर आदि), मूल्य (शुल्क, आरनाल, तुषोदक आदि), कल्याण (शुभ, मंगल, श्रेयस् आदि), कमल (अंबुरुह, अब्ज, कुशेशय, अंभोज, पंकज आदि), पाप (अघ, किल्बिष, कल्मष आदि), विष्ठा (गूथ, वर्चस् आदि), पानी (जल, सलिल, कीलाल, क्षीर, वारि, अंभस् आदि), कपड़ा (अंशुक, वस्त्र, वसन, वासस् आदि), लकड़ी (काष्ठ, दारु, आदि), पंख, (पिच्छ, पत्र, तनूरुह, गरुत्, बर्हस्, आदि), धनुष (कार्मुक, शरासन, पिनाक आदि), दल (किसलय, पल्लव आदि), तालु (काकुद आदि), छाती (हृद, वक्षस्, उरस् आदि) शब्दोंके अर्थको कहनेवाले शब्द प्रायः नपुंसक लिंग समझना।

चतुर्थ अध्याय।

भ्वादि और तुदादिगणकी अकर्मक धातुओं का व्यवहार।

प्रथम पाठ।

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
१ राजा	जीवति।	राजा	जीता है।
चमूः	जवति।	सेना	जाती है।
अश्वाः	जवंति।	घोड़े	दौड़ते हैं।
नद्यः	अतंति।	नदियां	सर्वदा बहती हैं।
धेनुः	अंचति।	गाय	जाती है।
धनहीनः	कठति।	निर्धन (आदमी)	कष्टसे जीवन बिताता है।
रौप्यमुद्रा	कनति।	चांदीकी मुद्रा (रुपया)	चमकती है।
मूढाः	कर्वंति।	मूर्ख	घमंड करते हैं।
पक्षिणः	कूजंति।	पक्षी	कूजते हैं।
वीरः	क्रामति।	वीर	पैरोंसे चलता है।
बालकाः	क्रीडंति।	लड़के	खेलते हैं।
शरीराणि	क्षयंति।	शरीर	नष्ट होजाते हैं।
हस्तिनः	नर्दंति।	हाथी	चिंघाड़ते हैं।
सिंहः	गर्जति।	सिंह	गर्जता है।
शरीरं	ग्लायति।	शरीर	ग्लान होता है।
मृगाः	चरंति।	हरिण	घूमते हैं।
शाखाः	चलंति।	डालियां	हिलती हैं।
सेनापतिः	जयति।	सेनापति	जीतता है।
शिशुः	ज्वरति।	लड़केको	ज्वर आता है।

कर्ता	क्रिया	कर्ता	क्रिया
ओषधयः	ज्वलंति।	ओषधियां	दीप्त होती हैं।
मनः	भ्रमति।	मन	भ्रमता है।
दैवं	फलति।	भाग्य	फलदेता है।
पुष्पाणि	फुल्लंति।	फूल	फूलते हैं।
देवदत्तः	शठति।	देवदत्त	शठता करता है।
सीता	मूर्च्छति।	सीता	मूर्च्छित होती है।
छात्राः	वसंति।	विद्यार्थी	निवास करते हैं।
सर्पाः	सरंति।	सांप	सरकते हैं।
वज्रः	स्फूर्जति।	वज्र	शब्द करता है।
बालिका	स्फोच्छति।	लड़की	लज्जित होती है।
शिशुः	गुवति।	लड़का	मल त्याग करता है।
दांभिकः	मिषति।	कपटी	स्पर्द्धा करता है।
पुष्पाणि	स्फुटंति।	फूल	खिलते हैं।

अकर्मक धातुओंके पहिचाननेका उपाय—

उन्मादे च पलायनभ्रमणयोः खेदे क्षवार्थे तथा,
मोहे धावन-युद्ध-शुद्धि-दहने शांतौ प्लुतौ मज्जने।
दीप्तौ जागर-शोष-वक्रगमनोत्साहे मृतौ संशये,
कंपोद्वेग-निमेष-संग-पवन-स्वेदे धवोऽकर्मकाः॥

मत्तहोना, भागना, घूमना, खेद करना, छींक लेना, मुग्धहोना, दौड़ना, युद्ध करना, शुद्धहोना, जलना, शांतहोना, कूदना, डूबना, चमकना, दीप्तहोना, जागना, सूकना, टेडाचलना, उत्साहित होना, मरना, संशयकरना, कांपना, उद्विग्नहोना, पलकमारना, पवित्रहोना, पसीनाआना, इन अर्थोंमें जो धातुयें हैं वे सब अकर्मक होती हैं।

द्वितीय पाठ।

आत्मनेपदी धातुओंका व्यवहार।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
सीता	सरयूं	ईक्षते।	सीता	सरयू नदीको	देखती है।
निंदकाः	लोकान्	ईजंते।	निंदक लोग	लोगोंकी	निंदा करते हैं।
बालकाः		ईषंते।	बालक		जाते हैं।
परिश्रमिणः		ईहंते।	दो परिश्रमी		चेष्टा करते हैं।
संपत्		एधते।	संपत्ति		बढ़ती है।
अबला	केशं	कचते।	स्त्री	केश	बांधती है।
गुणग्राहिणः	बुद्धिमतः	कत्थंते।	गुणग्राहि लोग	बुद्धिमानोंकी	प्रशंसा करते हैं।
मनः		क्षोभते।	मन		विचलित होता है।
स्वामी	भृत्यं	गर्हते।	स्वामी	नौकरको	निंदा करता है।
पंडिताः	शास्त्राणि	गाहंते।	पंडित लोग	शास्त्रोंका	मनन करते हैं।
बालकः	अन्नं	ग्रसते।	लड़का	अन्न	खाता है।
अध्यवसायिनः		चेष्टंते।	व्यापारी लोग		चेष्टा करते हैं।
समर्थाः	दुर्बलान्	तिजंते।	समर्थ लोग	दुर्बलोंको	क्षमा करते हैं।
श्रावकः		दीक्षते।	श्रावक		दीक्षा लेता है।
रत्नानि		द्योतंते।	रत्न		दीप्त होते हैं।
नद्यः		वर्धंते।	नदियां		बढ़ती हैं।
भारतवर्षः		प्रथते।	भारत देश		प्रसिद्ध होता है।
साम्राज्यं		प्रसते।	साम्राज्य		फैलता है।
भिक्षुकः	अन्नं	भिक्षते।	भिखारी	अन्न	मांगता है।
शिष्यः	अध्यापकं	मानते।	विद्यार्थी	गुरुका	सन्मान करता है।
चित्तं		मोदते।	चित्त		आनंदित होता है।
छात्राः		मयंते।	विद्यार्थी लोग		जाते हैं।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया	कर्त्ता	कर्म	क्रिया
मोदकं		रोचते।	लाडु		अच्छा लगता है।
प्रदीप:		वर्चते।	दीपक		झलता है।
भृत्य:	खाद्यं	वल्भते।	नौकर	खाद्य पदार्थ	खाता है।
राम:	जानकीं	उद्वहते।	रामचंद्र	जानकीको	विवाहते हैं।
प्रणय:		प्यायते।	प्रेम		बढ़ता है।
हृदयं		व्यथते।	मन		दुःखित होता है।
शीतार्त: शिशु:		वेपते।	शीतसे पीड़ित लड़का		कांपता है।
कापुरुषा:	मृत्युं	शंकंते।	कायर आदमी	मौतकी	शंका करते हैं।
ब्रह्मचारी	बालं	शिक्षते।	ब्रह्मचारी	बालकको	पढ़ाता है।
प्रासाद:		शोभते।	महल		शोभता है।
कवय:	वीरान्	श्लाघंते।	कवि लोग	वीरोंकी	प्रशंसा करते हैं।
पुष्पाणि		श्वेतंते।	कमल		श्वेत होते हैं।
वधू:		स्मयते।	वह		मुस्कराती है।
रोगी	औषधं	स्वादते।	रोगी	दवाईको	चाखता है।
पुष्पाणि		स्फुटंते।	फूल		विकसित होते हैं।
दुग्धं		स्यंदते।	दुध		बहता है।
लोका:	असत्यवादिनं न	विश्रंभंते।	लोग	झूठ बोलनेवालेका	विश्वास नहीं करते हैं
पिता	पुत्रं	स्वंजते।	पिता	पुत्रको	आलिंगन करता है।
लोका:	शिशून्	आद्रियंते।	लोग	बच्चोंका	आदर करते हैं।
मानवा:		म्रियंते।	मनुष्य		मरते हैं।
मन:		उद्विजते।	मन		उद्विग्न होता है।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर एक २ वाक्य बनाओ—

जवत:, ग्लायंति, सरति, अतंति, चयत:, नर्दंति, कठत:, क्रोच्छत:, मिषंति एधेते, कर्षंते, शोभंते, रोचते, द्योतंते, प्रसेते, मोदेते, वर्चंते, दीक्षेते, शिक्षते, शिक्षेते, कूचेते, श्वेतते, चयंति,

सरतः, ग्लायतः, कठंति, असेते, वल्भंते, मानेते, मानंते, मयंते, मयेते, ईहंते, वेपंते, कत्थते, स्वंजेते, तिजेते, प्रथंते, प्रसंते।

एक एक शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

दुर्बलाः —— ज्वरंति। —— हस्तिन्यौ जवतः। सहायहीनाः ——कठंति। ——जनः व्यथते। तुषारपीडिताः——अतंति। वृष्टिजलप्राप्ताः———एधंते। विद्यानुरागिणः——— विशालानि ——गाहंते। ——जेतारौ क्षमाप्रार्थिनः——तिजेते। रामायणवर्णिताः——प्रथंते। परस्परं——मयेते। भयविह्वलाः——वेपंते।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१। जीव	जीना	(जीव्+अ+ति)	जीवति,	जीवतः,	जीवंति।
जव	जल्दीसे चलना	(जव्+अ+ति)	जवति,	जवतः,	जवंति।
अत	नित्यचलना	(अत्+अ+ति)	अतति,	अततः,	अतंति।
अंच	जाना	(अंच्+अ+ति)	अंचति,	अंचतः,	अंचंति।
कठ	कष्टसेजीवनकाटना	(कठ्+अ+ति)	कठति,	कठतः,	कठंति।
कनी	चमकना	(कन्+अ+ति)	कनति,	कनतः,	कनंति।
कर्व	घमंडकरना	(कर्व्+अ+ति)	कर्वति,	कर्वतः,	कर्वंति।
कूज	कूजना	(कूज्+अ+ति)	कूजति,	कूजतः,	कूजंति।
क्रमु	पैदलचलना	(क्राम्+अ+ति)	क्रामति,	क्रामतः,	क्रामंति।
क्रीड़	खेलना	(क्रीड्+अ+ति)	क्रीडति,	क्रीडतः,	क्रीडंति।
क्षि	नष्टहोना	(क्षय्+अ+ति)	क्षयति,	क्षयतः,	क्षयंति।
नर्द	शब्दकरना	(नर्द्+अ+ति)	नर्दति,	नर्दतः,	नर्दंति।
गर्ज	गर्जना	(गर्ज्+अ+ति)	गर्जति,	गर्जतः,	गर्जंति।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
ग्लै	विषादकरना	(ग्लाय्+अ+ति)	ग्लायति,	ग्लायतः,	ग्लायंति
चर	खाना, घूमना	(चर्+अ+ति)	चरति,	चरतः,	चरंति।
चल	चलना	(चल्+अ+ति)	चलति,	चलतः,	चलंति।
जि	जीतना	(जय्+अ+ति)	जयति,	जयतः,	जयंति।
ज्वर	ज्वरआना	(ज्वर्+अ+ति)	ज्वरति,	ज्वरतः,	ज्वरंति।
ज्वल	दीप्तहोना	(ज्वल्+अ+ति)	ज्वलति,	ज्वलतः,	ज्वलंति।
तप	तपना	(तप्+अ+ति)	तपति,	तपतः,	तपंति।
फल	फलना	(फल्+अ+ति)	फलति,	फलतः,	फलंति।
फुल्ल	फूलना	(फुल्ल्+अ+ति)	फुल्लति,	फुल्लतः,	फुल्लंति।
वस	रहना	(वस्+अ+ति)	वसति,	वसतः,	वसंति।
सृ	सरकना	(सर्+अ+ति)	सरति,	सरतः,	सरंति।
स्फूर्ज	ध्वनिकरना	(स्फूर्ज्+अ+ति)	स्फूर्जति,	स्फूर्जतः,	स्फूर्जंति।
क्ष्वेल्लु	धर्मकरना	(क्ष्वेल्ल्+अ+ति)	क्ष्वेल्लति,	क्ष्वेल्लतः,	क्ष्वेल्लंति।
गु	मलत्यागना	(गुव्+अ+ति)	गुवति,	गुवतः,	गुवंति।
मिष	स्पर्द्धाकरना	(मिष्+अ+ति)	मिषति,	मिषतः,	मिषंति।
स्फुट	विकसितहोना	(स्फुट्+अ+ति)	स्फुटति,	स्फुटतः,	स्फुटंति।
मूर्च्छ	वेहोशहोना	(मूर्च्छ्+अ+ति)	मूर्च्छति,	मूर्च्छतः,	मूर्च्छंति।
२ ईक्षै	देखना	(ईक्ष्+अ+ते)	ईक्षते,	ईक्षेते,	ईक्षंते।
ईजै	निंदाकरना	(ईज्+अ+ते)	ईजते,	ईजेते,	ईजंते।
ईषै	जाना	(ईष्+अ+ते)	ईषते,	ईषेते,	ईषंते।
ईहै	चेष्टाकरना	(ईह्+अ+ते)	ईहते,	ईहेते,	ईहंते।
कचिङ्	चमकना	(कच्+अ+ते)	कचते,	कचेते,	कचंते।
क्षुभै	क्षुब्धहोना	(क्षुभ्+अ+ते)	क्षोभते,	क्षोभेते,	क्षोभंते।
गर्है	निंदाकरना	(गर्ह्+अ+ते)	गर्हते,	गर्हेते,	गर्हंते।
गाहृङ्	आलोचनाकरना	(गाह्+अ+ते)	गाहते,	गाहेते,	गाहंते।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
चेष्टे	चेष्टाकरना	(चेष्ट्+अ+ते)	चेष्टते,	चेष्टेते,	चेष्टंते।
तिजौङ्	क्षमाकरना	(तिज्+अ+ते)	तिजते,	तिजेते,	तिजंते।
दीक्षै	दीक्षालेना	(दीक्ष्+अ+ते)	दीक्षते,	दीक्षेते,	दीक्षंते।
द्युतै	दीप्तहोना	(द्योत्+अ+ते)	द्योतते,	द्योतेते,	द्योतंते।
प्रथैष्	प्रसिद्धहोना	(प्रथ्+अ+ते)	प्रथते,	प्रथेते,	प्रथंते।
प्रसैष्	विस्तृतहोना	(प्रस्+अ+ते)	प्रसते,	प्रसेते,	प्रसंते।
भिक्षै	मांगना	(भिक्ष्+अ+ते)	भिक्षते,	भिक्षेते,	भिक्षंते।
मानै	पूजाकरना	(मान्+अ+ते)	मानते,	मानेते,	मानंते।
मुदैष्	हर्षितहोना	(मोद्+अ+ते)	मोदते,	मोदेते,	मोदंते।
मयै	जाना	(मय्+अ+ते)	मयते,	मयेते,	मयंते।
रुचै	अच्छालगना	(रोच्+अ+ते)	रोचते,	रोचेते,	रोचंते।
वर्चै	जलना	(वर्च्+अ+ते)	वर्चते,	वर्चेते,	वर्चंते।
वल्भ	खाना	(वल्भ्+अ+ते)	वल्भते,	वल्भेते,	वल्भंते।
उद्वहौञ्	विवाहना	(उद्वह्+अ+ते)	उद्वहते,	उद्वहेते,	उद्वहंते।
वृधुङ्	बढ़ना	(वर्ध्+अ+ते)	वर्धते,	वर्धेते,	वर्धंते।
व्यथैष्	पीडितहोना	(व्यथ्+अ+ते)	व्यथते,	व्यथेते.	व्यथंते।
टुवेपृङ्	कांपना	(वेप्+अ+ते)	वेपते,	वेपेते,	वेपंते।
शकिङ्	शंकाकरना	(शंक्+अ+ते)	शंकते,	शंकेते,	शंकंते।
शिक्षै	पढाना	(शिक्ष्+अ+ते)	शिक्षते,	शिक्षेते,	शिक्षंते।
शुभै	शोभना	(शोभ्+अ+ते)	शोभते,	शोभेते,	शोभंते।
श्विताङ्	श्वेतहोना	(श्वेत्+अ+ते)	श्वेतते,	श्वेतेते,	श्वेतंते।
स्मिङ्	मुस्कराना	(स्मय्+अ+ते)	स्मयते,	स्मयेते,	स्मयंते।
स्वादै	चाखना	(स्वाद्+अ+ते)	स्वादते,	स्वादेते,	स्वादंते।
स्फुटै	फूलना	(स्फुट्+अ+ते)	स्फुटते,	स्फुटेते.	स्फुटंते।
स्यंदूङ्	बहना	(स्यंद्+अ+ते)	स्यंदते,	स्यंदेते,	स्यंदंते।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
स्रंभुङ्	विश्वासकरना	(स्रंभ्+अ+ते)	स्रंभते,	स्रंभेते,	स्रंभंते।
ष्वंजीङ्	आलिंगनकरना	(स्वंज्+अ+ते)	स्वंजते,	स्वंजेते,	स्वंजंते।
आदृङ्	आदरकरना	(आद्रिय्+अ+ते)	आद्रियते,	आद्रियेते,	आद्रियंते।
मृ (१)	मरना	(म्रिय्+अ+ते)	म्रियते,	म्रियेते,	म्रियंते।
विजीङो	उद्विग्नहोना	(विज्+अ+ते)	विजते,	विजेते,	विजंते।
ओप्यायीङ्	वढना	(प्याय्+अ+ते)	प्यायते,	प्यायेते,	प्यायंते।

तृतीय पाठ।

(२) उभयपदी (तुदादि और भ्वादिगणीय) धातुओंका व्यवहार।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
कर्षकः	गर्तं	खनति (ते)	किसान	गड्डा	खोदता है।
चौरः	हृतं धनं	गूहति (ते)	चौर	चुराये धनको	छिपाता है।
बालकः	खादनीयं	चषति (ते)	बालक	भक्ष्य पदार्थको	खाता है।
बालकः	बालकं	छषति (ते)	बालक	बालकको	मारता है।
चंद्रः		त्वेषति (ते)	चंद्रमा		दीप्त होता है।
असहायः	धनवंतं	भजति (ते)	निस्सहाय	धनीकी	शरणमें जाता है।
धनी जनः	निःस्वं	भरति (ते)	धनी आदमी	निर्धनका	पोषण करता है।
श्रावकाः	जिनं	यजंति (ते)	श्रावक	जिनकी	पूजा करते हैं।
अतिथिः	धनं	याचति (ते)	अतिथि	धनको	मांगता है।
रजकः	वस्त्राणि	रजति (ते)	धोबी (रंगरेज)	कपड़े	रंगता है।
नृपः		राजति (ते)	राजा		शोभता है।
क्षेत्रस्वामी	वीजं	वपति (ते)	खेतका मालिक	बीज	बोता है।

१—इस धातुमें 'ङ्' अथवा 'ए', कुछभी इत् नहीं है तबभी वर्तमानकालमें विशेषनियमसे आत्मनेपद होता है। २—जिस धातुके दोनों प्रकारसे (आत्मनेपद और परस्मैपद) रूप चलें उसको उभयपदी कहते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
भृत्यः	भारं	वहति (ते)	नौकर	भार (बोझा)	ढोता है।
तंतुवायाः	वस्त्राणि	वयंति (ते)	जुलाहे	कपड़े	बुनते हैं।
मृगाः	अद्रीन्	श्रयंति (ते)	मृग	पर्वतोंका	आश्रय लेते हैं।
शिष्याः	समिधः	आहरंति (ते)	विद्यार्थी	लकड़ी	लाते हैं।
पुत्रशोकः	हृदयं	तुदति (ते)	पुत्रका शोक	हृदयको	व्यथित करता है।
प्रभुः	भृत्यान्	आदिशति (ते)	मालिक	नौकरोंको	आज्ञा देता है।
पाचकः	अन्नं	भृज्जति (ते)	रसोइया	अन्न	पकाता है।
साधवः	गात्रं	लिंपंति (ते)	साधु लोग	शरीरको	लिप्तकरते हैं।
भृत्यः	वृक्षं	लुंपति (ते)	नौकर	पेड़	काटता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

त्वेषंते, वयेते, लुंपंते, तुदेते, श्रयेते, कृषंते, लिंपतः, मुंचते, सिंचतः, भृज्जतः, आहरंते, भृज्जंति।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
खनुञ्	खोदना	(खन्+अ+ति)	खनति,	खनतः,	खनंति।
,,	,,	(खन्+अ+ते)	खनते,	खनेते,	खनंते।
गुहूञ्	छिपाना	(गूह्+अ+ति)	गूहति,	गूहतः,	गूहंति।
,,	,,	(गूह्+अ+ते)	गूहते,	गूहेते,	गूहंते।
चषञ्	खाना	(चष्+अ+ति)	चषति	चषतः,	चषंति।
,,	,,	(चष्+अ+ते)	चषते,	चषेते,	चषंते।
छषञ्	मारना	(छष्+अ+ति)	छषति,	छषतः,	छषंति।
,,	,,	(छष्+अ+ते)	छषते,	छषेते,	छषंते।
भजौञ्	सेवाकरना	(भज्+अ+ति)	भजति,	भजतः,	भजंति।
,,	,,	(भज्+अ+ते)	भजते,	भजेते,	भजंते।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भृञ्	पालना	(भर्+अ+ति)	भरति,	भरतः,	भरंति।
,,	,,	(भर्+अ+ते)	भरते,	भरेते,	भरंते।
यजीञ्	पूजाकरना	(यज्+अ+ति)	यजति,	यजतः,	यजंति।
,,	,,	(यज्+अ+ते)	यजते,	यजेते,	यजंते।
याचृञ्	मांगना	(याच्+अ+ति)	याचति,	याचतः	याचंति।
,,	,,	(याच्+अ+ते)	याचते,	याचेते,	याचंते।
रंजीञ्	रंगना	(रज्+अ+ति)	रजति,	रजतः	रजंति।
,,	,,	(रज्+अ+ते)	रजते,	रजेते,	रजंते।
टुवपीञ्	बीजबोना	(वप्+अ+ते)	वपते,	वपेते,	वपंते।
,,	,,	(वप्+अ+ति)	वपति,	वपतः,	वपंति।
वहीञ्	लेजाना	(वह्+अ+ते)	वहते,	वहेते,	वहंते।
,,	,,	(वह्+अ+ति)	वहति,	वहतः,	वहंति।
वेञ्	कपड़ा बुनना	(वय्+अ+ते)	वयते,	वयेते,	वयंते।
,,	,,	(वय्+अ+ति)	वयति,	वयतः,	वयंति।
श्रिञ्	सेवा करना	(श्रय्+अ+ते)	श्रयते,	श्रयेते,	श्रयंते।
,,	,,	(श्रय्+अ+ति)	श्रयति,	श्रयतः,	श्रयंति।
हृञ्	हरना	(हर्+अ+ते)	हरते,	हरेते,	हरंते।
,,	,,	(हर्+अ+ति)	हरति,	हरतः,	हरंति।
भ्रस्जीञ्	पकाना	(भृज्ज्+अ+ते)	भृज्जते,	भृज्जेते,	भृज्जंते।
,,	,,	(भृज्ज्+अ+ति)	भृज्जति,	भृज्जतः,	भृज्जंति।
लिपीञ्	लेपकरना	(लिंप्+अ+ते)	लिंपते,	लिंपेते,	लिंपंते।
,,	,,	(लिंप्+अ+ति)	लिंपति,	लिंपतः,	लिंपति।
लुप्लृञ्	छेदना	(लुंप्+अ+ते)	लुंपते,	लुंपेते,	लुंपंते।
,,	,,	(लुंप्+अ+ति)	लुंपति,	लुंपतः,	लुंपंति।

पंचमाध्याय।

प्रथम पाठ।

विसर्ग संधिका व्यवहार।

(संधिके नियम कंठ करानेकी आवश्यकता नहीं है, केवल हितोपदेश, क्षत्रचूडामणि आदि काव्योंके वाक्योंको समझा समझाकर संधिके नियमोंको बतलाना चाहिये)

(१) अकारसे पर विसर्गका लोप।

भृत्य आगच्छति—भृत्यः + आगच्छति। नौकर आता है।

जिनदत्त इष्टस्थानं गच्छति—जिनदत्तः + इष्टस्थानं गच्छति।

जिनदत्त इष्टस्थानको जाता है।

रामः सर ईक्षते—रामः सरः + ईक्षते। राम तालाब देखता है।

परिश्रमिण ईहंते—परिश्रमिणः + ईहंते। परिश्रमी लोग चेष्टा करते हैं।

बालक ईषते—बालकः + ईषते। बालक जाता है।

पर्वत उन्नतः—पर्वतः + उन्नतः। पर्वत ऊंचा है।

उन्नत उष्ट्रः धावति—उन्नतः + उष्ट्रः धावति। लंबा ऊंट दौड़ता है।

धूम ऊर्ध्वं गच्छति—धूमः + ऊर्ध्वं गच्छति। धूंआ ऊपरको जाता है।

मनस्विन ऋषयः शास्त्राणि मनंति—मनस्विनः + ऋषयः शास्त्राणि मनंति। मनस्वी ऋषि लोग शास्त्रोंका अभ्यासकरते हैं।

वृक्ष एजति—वृक्षः + एजति। वृक्ष हिलता है।

मत्त ऐरावतः—मत्तः + ऐरावतः गच्छति। मत्त ऐरावत हाथी जाता है।

उज्ज्वल ओषधिपतिः द्योतते—उज्ज्वलः + ओषधिपतिः द्योतते।

उज्ज्वल चंद्रमा चमकता है।

रुग्ण औषधं इच्छति—रुग्णः + औषधं इच्छति। रोगी औषध चाहता है।

१—यदि ह्रस्व अकारके बाद विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंके बाद ह्रस्व अकारको छोड़कर कोई भी स्वर होगा तो उन विसर्गोंका लोप हो जायगा।

अशुद्ध	शुद्ध	
बालकः अंचति।	बालक अंचति।	लड़का जाता है।
नद्यः अतंति।	नद्य अतंति।	नदी सर्वदा चलती हैं।
संयतः अर्थी धनं कांक्षति।	संयत अर्थी धनं कांक्षति।	संयमी भिखारी धन चाहता है।

शुद्ध करो—

साधव अर्हणां इच्छंति। साधव शांतिं इच्छंति। ऐरावत अंबु पिबति। वध्व वाचं वदंति। तरुण अरुणः किरणं वितरति। सरित नयनानि लुभंति। पर्वत अभ्रं स्पृशति। ऐरावत गंगां गच्छति। बालक नदीं गच्छति। उदारचेतस दरिद्रान् भरंति। राजान मंत्रिणं विश्रंभंते। सज्जनः आश्रितं रक्षति। बालः आशु (शीघ्र) गच्छति। मनुष्यः इंदुं पश्यति। छात्रः इतिहासं पठति। दुर्जनः ईर्ष्यां आचरति। लोकः ईशं भजते। पाठकः उत्तरं यच्छति। मूर्खः उद्धत भवति। धार्मिकः ऊर्ध्वलोकं व्रजति। समुद्रः ऊर्मिमान्। धनाढ्यः ऋणं यच्छति। बालकः ऋजु वर्तते। अष्टम स्वरवर्णः ऋकारः। जीवः एकाकी गच्छति। मूर्खः एवं वदति। परिषदः ऐक्यं वांछंति। देवाः ऐलविलं (कुबेर) नमंति। योषितः ओकः (घर) गच्छंति। ओकारः ओष्ठ्यवर्णः। समाजः औन्नत्यं (उन्नति) इच्छति। शीतार्तः औरभ्रं (कंबल) कांक्षति।

द्वितीय पाठ।

(१) आकारसे पर विसर्गका लोप।

१ बालका अमृतां वाचं भाषंते—बालकाः + अमृतां वाचं भाषंते।
लड़के अमृतके समान मीठी वाणी बोलते हैं।

---

१ दीर्घ आकारसे पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंके बाद कोई भी स्वर, अथवा वर्गका तीसरा, चौथा, पांचवां अक्षर तथा य, र, ल, व, ह, होंगे तो उन विसर्गोंका लोप हो जायगा।

लता अभ्रं इच्छंति—लता: + अभ्रं इच्छंति । लतायें मेघको चाहती हैं।

बालका आनंदं लभंते—बालका: + आनंदं लभंते। लड़के आनंद पाते हैं।

प्रचेता इंद्रं जयति—प्रचेता: + इंद्रं जयति। वरुण इंद्रको जीतता है।

वेधा ईशं भजते—वेधा: + ईशं भजते। पंडित भगवानका भजन करता है।

बालका ईषंते—बालका: + ईषंते। बालक जाते हैं।

पर्वता उन्नता: भवंति—पर्वता: + उन्नता: भवंति। पर्वत ऊंचे होते हैं।

चंद्रमा उस्रं संहरते—चंद्रमा: + उस्रं संहरते। चंद्रमा किरण समेटता है।

आढ्या ऊर्मिका: वहंति—आढ्या: + ऊर्मिका: वहंति। धनाढ्य अंगूठी पहिनते हैं।

तापसा ऋषीन् सेवंते—तापसा: + ऋषीन् सेवंते। तपस्वी ऋषियोंकी सेवा करते हैं।

बालका एला: खादंति—बालका: + एला: खादंति। लड़के इलायची खाते हैं।

राजपुत्रा ऐश्वर्यं इच्छंति—राजपुत्रा: + ऐश्वर्यं इच्छंति। राजपुत्र विभूति चाहते हैं।

सैनिका ओजस्विनं सेनापतिं मानंते—सैनिका: + ओजस्विनं सेनापतिं मानंते। सैनिक तेजस्वी सेनापतिका संमान करते हैं।

नागरिका औरसं राजपुत्रं मानंते—नागरिका: + औरसं राजपुत्रं मानंते। नगरवासी लोग श्रेष्ठ राजपुत्रको मानते हैं।

२ प्रचेता गोत्रभिदं जयति—प्रचेता: + गोत्रभिदं जयति। वरुण इंद्रको जीतता है।

अश्वा जवंति—अश्वा: + जवंति। घोड़े दौड़ते हैं।

रुग्णा डिंभा: विलपंति—रुग्णा: + डिंभा: विलपंति। रोगी बच्चे रोते हैं।

बालका दुग्धं पिबंति—बालका: + दुग्धं पिबंति। लड़के दूध पीते हैं।

जना बुद्धिमत: पृच्छंति—जना: + बुद्धिमत: पृच्छंति। लोग बुद्धिमानोंको पूंछते हैं।

बुभुक्षिता बहु खादंति—बुभुक्षिताः+बहु खादंति। भूखे लोग खूब खाते हैं।

३। कुंभकारा घटान् सृजंति—कुंभकाराः+घटान् सृजंति। कुम्हार घड़ोंको बनाते हैं।

बालका झटिति गच्छंति—बालकाः+झटिति गच्छंति। लड़के जल्दी जाते हैं।

बालका ढक्कां स्पृशंति—बालकाः+ढक्कां स्पृशंति। लड़के ढक्का छूते हैं।

मेघा धवलाः संजाताः—मेघाः+धवलाः संजाताः। मेह श्वेत हो गये।

कन्या भृत्यान् आदिशंति—कन्याः+भृत्यान् आदिशंति। कन्यायें नौकरोंको आज्ञा देती हैं।

४। दिग्गजा नदंति—दिग्गजाः+नदंति। दिग्गज (दिशाओंके हाथी) चिंघाडते हैं।

बालका मातुलालयं गच्छंति—बालकाः+मातुलालयं गच्छंति। लड़के मामाके घर जाते हैं।

५ गृहस्था यतीन् पूजंति—गृहस्थाः+यतीन् पूजंति। गृहस्थ यतियोंको पूजते हैं।

चंद्रमा रात्रिं भूषति—चंद्रमाः+रात्रिं भूषति। चंद्रमा रातको भूषित करता है।

बालिका लताः कृंतंति—बालिकाः+लताः कृंतंति। लड़कियां लताओं को काटती हैं।

भृत्या वदंति—भृत्याः+वदंति। नौकर बोलते हैं।

ब्राह्मणा हरिद्रां भिक्षंते—ब्राह्मणाः+हरिद्रां भिक्षंते। ब्राह्मण हलदी मांगते हैं।

शुद्ध	अशुद्ध
६। बालकाः+कोकिलं पश्यंति।	बालका कोकिलं पश्यंति।
भृत्याः+चौरं प्रहरंति।	भृत्या चौरं प्रहरंति।
उन्नताः+तरवः मेघं स्पृशंति।	उन्नता तरवः मेघं स्पृशंति।
प्रजाः+प्रजापतिं पूजंति।	प्रजा प्रजापतिं पूजंति।

७। कृषीवलाः + खनित्रं भिंदंति। कृषीवला खनित्रं भिंदंति।
आचार्याः + छात्रान् उपदिशंति। आचार्या छात्रान् उपदिशंति।
वृक्षाः + फलानि मुंचंति। वृक्षा फलानि मुंचंति।

तृतीय पाठ।

(१) अकारसे पर विसर्ग और अकारको ओकार।

बालकोऽञ्चति—बालकः + अंचति।
विद्वांसोऽज्ञान् उपदिशंति—विद्वांसः + अज्ञान् उपदिशंति।
गृहस्थोऽतिथीन् सेवते—गृहस्थः + अतिथीन् सेवते।
हरिणोऽरण्यं गच्छति—हरिणः + अरण्यं गच्छति।

अशुद्ध। शुद्ध।

बालकः + आगच्छति—बालकोऽगच्छति—बालक आगच्छति।
साधवः + इंद्रं अर्चंति—साधवोऽद्रं अर्चंति—साधव इंद्रं अर्चंति।
मानवः + ईश्वरं पूजति—मानवोऽश्वरं पूजति—मानव ईश्वरं पूजति।
छात्रः + उपाध्यायं सेवते—छात्रोऽपाध्यायं सेवते—छात्र उपाध्यायं सेवते।
बालकः + उष्णं दुग्धं पिबति—बालकोऽष्णं दुग्धं पिबति—बालक उष्णं दुग्धं पिबति।
गृहस्थः + ऋषिं अर्चति—गृहस्थोऽऋषिं अर्चति—गृहस्थ ऋषिं अर्चति।
बालकः + एकाकी गच्छति—बालकोऽकाकी गच्छति—बालक एकाकी गच्छति।

१। यदि अकारके बाद विसर्ग हों और उन विसर्गोंके बाद ह्रस्व अकार हो तो उन (पहिला अकार, बीचके विसर्ग, अंतका अकार) तीनोंके स्थानमें एक 'ओ' कार होजायगा।

सरितः + ऐरावतं लुभंति—सरितो ऽरावतं लुभंति—सरित ऐरावतं लुभंति।

भ्रमरः + ओष्ठं दशति—भ्रमरोऽष्ठं दशति—भ्रमर ओष्ठं दशति।

भिषजः + औदरिकान् निंदंति—भिषजो ऽदरिकान् निंदंति—भिषज औदरिकान् निंदंति।

शुद्ध।	अशुद्ध।
कोकिलः + कूजति।	कोकिलो ऽकूजति।
वृषभः + केशरिणं पश्यति।	वृषभोकेशरिणं पश्यति।
जाल्मः + खट्वां आरोहति।	जाल्मोऽखट्वां आरोहति।
जनः + चक्रवाकं ईक्षते।	जनोऽचक्रवाकं ईक्षते।
अश्वः + चरति।	अश्वो ऽचरति।
छात्रः + छत्रं वहति।	छात्रोऽछत्रं वहति।
बालः + टिट्टिभं पश्यति।	बालोऽटिट्टिभं पश्यति।
धार्मिकः + ठक्कुरं अर्चति।	धार्मिकोऽठक्कुरं अर्चति।
योषितः + तडि ं पश्यंति।	योषितोऽतडितं पश्यंति।
मलिनः + थूत्कारं आचरति।	मलिनोऽथूत्कारं आचरति।
नार्यः + पतिं मानंते।	नार्योऽपतिं मानंते।
सर्पः + फणां वहति	सर्पोऽफणां वहति।

चतुर्थ पाठ।

विसर्गोंको ओकार (१)

१। हरिणो गुहां अयते—हरिणः + गुहां अयते। हरिण गुहाका आश्रय लेता है।

१—ह्रस्व अकारके बाद विसर्ग, और उन विसर्गोंके बाद वर्गका तीसरा, चौथा, पांचवां अक्षर तथा य, र, ल, व, और ह, होंगे तो विसर्गोंके स्थानमें 'ओ' हो जायगा।

बालको जननीं ईक्षते—बालकः + जननीं ईक्षते। लड़का माको देखता है।
बालो डमरुं पश्यति—बालः + डमरुं पश्यति। लड़का डमरु देखता है।
धनिनो दरिद्रान् भरंति—धनिनः + दरिद्रान् भरंति। धनी लोग गरीबों को पालते है।
साधवो बालकान् स्पृशंति—साधवः बालकान् स्पृशंति। साधु लोग लडकोंको स्पर्श करते हैं।

२। वीरो घोटकं इच्छति—वीरः + घोटकं इच्छति। वीर घोडाको चाहता है।
मधुरो झंकारः श्रुतः—मधुरः + झंकारः श्रुतः। मधुर झंकार सुना।
बालको ढक्कां पश्यति—बालकः + ढक्कां पश्यति। लडका ढक्काको देखता है
गृहस्थो धर्मं शिक्षते--गृहस्थः + धर्मं शिक्षते। गृहस्थ धर्मको पढ़ाता है।
सर्पो भेकं बल्भते—सर्पः + भेकं बल्भते। सांप मेंडकको खाता है।

३। हस्तिनो नदंति—हस्तिनः + नदंति। हस्ती चिंघाडते हैं।
पक्षिणो मत्स्यान् खादंति—पक्षिणः + मत्स्यान् खादंति। पक्षि मच्छोंको खाते हैं।

४। बालको यतते—बालकः + यतते। बालक प्रयत्न करता है।
चंद्रो रोचींषि वितरति—चंद्रः + रोचींषि वितरति। चंद्रमा किरण फैलाता है।
नृपो लोध्रद्रुमं पश्यति—नृपः + लोध्रद्रुमं पश्यति। राजा लोध्रवृक्षको देखता है।
बालको वदति—बालकः + वदति। लडका बोलता है।
बालको हसति—बालकः + हसति। लडका हंसता है।

	अशुद्ध	शुद्ध
गृहस्थः + साधुं सेवते—	गृहस्थोसाधुं सेवते—	गृहस्थः साधुं सेवते।
बालकः + ष्ठीवनं क्षिपति—	बालको ष्ठीवनं क्षिपति—	बालकः ष्ठीवनं क्षिपति।

विद्वांस: + शिशून् उपदिशंति—विद्वांसो शिशून् उपदिशंति—विद्वांस: शिशून् उपदिशंति।

भृत्य: + आगच्छति—भृत्योऽगच्छति—भृत्य आगच्छति।

नद्य: + एधंते—नद्यो ऽधंते—नद्य एधंते।

शांतिरचक: + चौरं प्रहरति—शांतिरचको चौरं प्रहरति—शांति-रचक: चौरं प्रहरति।

अरुण: + तपन: शोभते—अरुणो तपन: शोभते—अरुण: तपन: शोभते

पंचम पाठ।

विसर्गोंको रकार। (१)

१ हविरावर्जितं—हवि: + आवर्जितं। घी डाला।
मतिरेधते—मति: + एधते। बुद्धि बढ़ती है।
साधुरागच्छति—साधु: + आगच्छति। साधु आता है।
वधूरीहते—वधू: + ईहते। वधू चेष्टा करती है।

२ मुनिर्गच्छति—मुनि: + गच्छति। मुनि जाता है।
गुरुर्जीवति—गुरु: + जीवति। गुरु जीवता है।
चमूर्दुर्गतिं प्राप्ता—चमू: + दुर्गतिं प्राप्ता। सेना दुर्गतिको प्राप्त हुई।
ऋषिर्बंधुं वदति—ऋषि: + बंधुं वदति। ऋषि बंधुको कहता है।

३ अग्निर्घृतं दहति—अग्नि: + घृतं दहति। आग घीको जलाती है।
कारुर्झषान् पश्यति—कारु: + झषान् पश्यति। बढ़ई मच्छलियोंको देखता है।
गुरुर्ध्यायति—गुरु: + ध्यायति। गुरु ध्यान करता ।

१—अकार, और आकारसे भिन्न किसी भी स्वरसे पर यदि विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंके बादमें कोई भी स्वर अथवा वर्गका तीसरा, चौथा, पांचवां अक्षर, और य, ल, व, ,हहोंगे तो विसर्गोंके स्थानमें 'र' हो जायगा।

शिशुर्भास्करं पश्यति—शिशुः + भास्करं पश्यति। लड़का सूरजको देखता है।

४ यतिर्नौकां आरोहति—यतिः + नौकां आरोहति। यति नाव पर चढ़ता है।

साधुर्मागधीं पठति—साधुः + मागधीं पठति। साधु मागधीको पढ़ता है।

५ शत्रुर्युद्धं इच्छति- शत्रुः + युद्धं इच्छति। शत्रु युद्धको चाहता है।

नरपतिर्यतिं पूजति—नरपतिः + यतिं पूजति। राजा यतिकी पूजा करता है।

कपिर्लोध्रद्रुमं आरोहति—कपिः + लोध्रद्रुमं आरोहति। बंदर लोध्रवृक्ष पर चढ़ता है।

साधुर्वसति—साधुः + वसति। साधु रहता है।

शिशुर्हसति—शिशुः + हसति। लड़का हसता है।

अशुद्ध।	शुद्ध।
बालकः आगच्छति—बालकरागच्छति।	बालक आगच्छति।
अश्वः धावति—अश्वर्धावति	अश्वो धावति।
शिशवः यतंते—शिशवर्यतंते।	शिशवो यतंते।
मुनयः अंचंति—मुनयरंचंति।	मुनयोऽचंति।
बालकाः आगच्छंति—बालकारागच्छंति।	बालका आगच्छंति।
प्रचेताः नाथं अर्चंति—प्रचेता नाथं अर्चंति।	प्रचेता नाथं अर्चंति।
कोकिलाः कूजंति—कोकिलाकूजंति।	कोकिलाः कूजंति।

शुद्ध करो—

अग्निर्हविर्कांक्षति। साधुर्मधुरार्वाचभाषंते। मनोज्ञावीरुधहृष्टाः। रामरंभर्पिबति। बध्वर्मातृगृहाणि गच्छंति। निरंकुशाहिं कवयः। बुद्धिमंतर्जनार्यशर्लभते।

षष्ठपाठ।

विसर्गोंको श, ष, स, (१)।

१ चतुरश्चौरो हृतः—चतुरः + चौरो हृतः।
वीराश्चर्माणि इच्छंति—वीराः + चर्माणि इच्छंति।
रविश्चक्षुषी तुदति—रविः + चक्षुषी तुदति।
लक्ष्मीश्चंद्रं गच्छति—लक्ष्मीः + चंद्रं गच्छति।
साधुश्चंडो जातः—साधुः + चंडो जातः।
वधूश्चंद्रमसं पश्यति—वधूः + चंद्रमसं पश्यति।
क्षुधार्त्ता गौश्चरति—क्षुधार्त्ता गौः + चरति।
आचार्यश्छात्रं उपदिशति—आचार्यः + छात्रं उपदिशति।
भृत्याश्छिन्नान् तरून् आहरंति—भृत्याः + छिन्नान् तरून् आहरंति
२ कारुष्टंकं इच्छति—कारुः + टंकं इच्छति।
छात्रष्ठकारं पठति—छात्रः + ठकारं पठति।
३ भृत्यस्तरून् कृंतति—भृत्यः + तरून् कृंतति।
तपनस्तापं वितरति—तपनः + तापं वितरति।
बालस्थूत्कारं करोति—बालः + थूत्कारं करोति।

शुद्ध करो—

रामो (२) सौमित्रिं अभाषते। विविधा काननद्रुमाश्शोभंते। चंदनशीतलरनिलर्वहति। शैलाविराजंते। सुगन्धयुक्तसुखस्पर्शहिमावह वायुःवहति। विशालो शाल्मलीतरु तिष्ठति। पक्षिणा निवसंति। वायसो प्रबुद्धो पाशवंतं व्याधं पश्यति। कपोतराजो सपरिवारर्वियतं

१—किसी भी स्वरसे पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंसे पर यदि च, छ, होंगे तो उन विसर्गोंके स्थानमें 'श' यदि ट, ठ, होंगे तो 'ष' और त, थ, होंगे तो 'स' हो जायगा।

२—स्वरसे पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंसे पर क, ख, प, फ, श, ष, स, होंगे तो विसर्गही रहेंगे कुछ भी परिवर्तन न होगा।

गच्छति। कपोतराजो तंडुलकणलुब्धान् कपोतान् वदति। हृष्टपुष्टांगमृगो भ्राम्यन् अवलोकति। गलितनखनयनर्जरन्नव: गृध्रो प्रतिवसति। वृक्षवासिन धर्मज्ञानरता विश्वासभूमय:। अभ्यागतरतिथि पूज्य:। मार्जाराहि मांसरुचया ऽभवंति। मार्जारभूमिं स्पृशति।

साहित्य परिचय।

(क्षत्रचूड़ामणि, हितोपदेश, आदि ग्रंथोंके नाना प्रकारके वाक्य बता २ कर प्रश्नोत्तरोंसे शिक्षादेना चाहिये।)

१ कुरुवंशीया नृपतय: शुद्धा: सफलकर्माण: सार्वभौमा: स्वर्गमुक्तिवर्त्मानश्च भवंति। श्रेयांसादयो राजानो यथाविधि जिनं अर्चंति, यथाकामं अर्थिनोऽवंति, यथापराधं च दोषिणोऽदंति, इति प्रसिद्धि:। कौरवास्त्यागिनोऽल्पभाषिणो विजिगीषवश्च। कुरुवंशीया युवराजा: शिक्षिता भवंति युवकाश्च यथाकालं उद्वहंते। परंतु वृद्धा जैनीं दीक्षां धारयंतो मुनिवृत्तयो धर्मं ध्यायंतस्तनुत्यजा भवंति।

अपरिचितशब्द—

यथाविधि—विधिके अनुसार। यथापराधं—अपराधके अनुसार।
यथाकामं—इच्छाके अनुसार। यथाकालं—ठीक समय पर।

भाषा अर्थ—

२ कुरु वंशके राजा लोग शुद्ध, सफलप्रयत्न, संपूर्ण पृथिवीके ईश्वर, और स्वर्ग तथा मुक्तिको जाने वाले होते हैं। श्रेयांस आदिक राजा विधिके अनुसार जिनेंद्रको पूजते हैं। अतिथियोंको इच्छाके अनुसार संतुष्ट करते हैं और अपराधके अनुसार दोषियोंको दंड देते हैं इसभांतिकी प्रसिद्धि है। कौरवलोग दानी परिमित बोलनेवाले, और जयके अभिलाषी होते हैं। कुरुवंश

के युवराज शिक्षित होते हैं और युवा होने पर योग्यअवस्थामें विवाह करते हैं। परंतु वृद्ध होने पर जैनधर्मकी दीक्षा धारण कर मुनिकी वृत्ति वाले होते हुये और धर्मको ध्याते हुये शरीर को छोड़ते हैं।

२ प्रश्नोत्तर—

प्र० के (कौनसे) नृपतयः
उ० कुरुवंशीयाः ते (वे)
प्र० किंविधाः नृपतयः
उ० ते शुद्धा इत्यादि
प्र० के शुद्धा इत्यादि
उ० कुरुवंशीया नृपतयः
प्र० का (क्या) प्रसिद्धिः
उ० श्रेयांसादयो राजानो यथाविधि जिनं अर्चंति इत्यादि
प्र० कं (किसको) अर्चंति
उ० जिनं
प्र० कान् अवंति, कान् अर्दंति
उ० अर्थिनः, दोषिणः
प्र० पुनः किंविधाः कुरुवंशीयाः
उ० ते त्यागिन इत्यादि
प्र० अपि राजपुत्राः शिक्षिता भवंति
उ० ते शिक्षिता भवंति एव
प्र० के उद्वहंते
उ० युवका न तु शिशवः
प्र० के मुनिवृत्तयः
उ० वृद्धाः न तु युवकाः
प्र० किंविधं वृद्धचरितं (वृद्धोंका क्या काम है)
उ० वृद्धा जिनदीक्षां धारयंतो मुनिवृत्तयो धर्मं ध्यायंत इत्यादि

संस्कृत बनाओ—

रामचंद्र लक्ष्मणको कहते हैं। वर्षा आगई है। बादल (नभस्थल) मेघसंवृत है। ग्रीष्मपीडित पृथिवी आंसू छोड़ती है। ठंडी २ हवा चलरहीहै। प्रफुल्लितवृक्षोंको मेघधारा सींच रही है। मेघ गर्ज रहा है। विद्युत् नीलमेघोंका आश्रय लेती है और शोभती है। सूर्य मेघरुद्ध है इसलिये प्रकाशित नहीं होता है। नदियां बढ़ती हैं। वनवासी जीव अपने अपने (स्व) स्थानका आश्रय

ले रहे हैं। मृग समूह जहां (यत्र) तहां (तत्र) स्थित हैं। अष्टापद मेघको स्पर्द्धा करता है ऊपर (उपरि) कूदता है (कूर्दति) पर विफल प्रयत्न होता है। हाथी चिंघाड़ते हैं, सिंह गर्जते हैं, खरगोश (शशक) बिलमें घुसते हैं, समय द्रष्टव्य है। दिशायें बहुत (बहु) शोभती हैं। इंद्र धनुष मनको हरण करता है।

प्रश्नमाला—

का समागता। किंविधं नभः। का वाष्पाणि मुंचति। अपि (क्या) पवनो वहति। को नदति। का नीलमेघं श्रयते। कीदृशः सूर्यः। का एधंते। किंविधा वनवासिनो जीवाः। कुत्र (कहां) तिष्ठंति मृगसमूहाः। कं स्पर्धते अष्टापदः, किं च आचरति। अधुना गजसिंहशशकाः किं आचरंति (करते हैं)। कीदृशं वनं।

निम्न लिखित विषय पर संस्कृतमें प्रश्नोत्तर करो—

(१) हंत (हर्ष है) प्रभातप्रायो जातः। अस्तोन्मुखो भगवान् निशाकरः, दिनकरस्तु उदयोन्मुखः। मलिनं पश्चिम दिगंगनं उज्ज्वलं तु पूर्वं। म्लानानि कुमुदानि, उत्फुल्लानि तु कुवलयानि। महान् रमणीयः समयः। उद्बुद्धाः कूजनमुखराः विहंगमाः। विकसितानि सुरभीणि कुसुमानि। शिशिरसुंदराणि श्यामलानि दूर्वाक्षेत्राणि। सुरभिशीतलः समीरणो वहति। लोहितो मधुरो बालातप व्यातते। अनुचितं अधुना शयनं। परिहरणीयं इदम् (यह) इदानीं क्षुद्रा मधुकरा अपि स्वकर्मनिरताः छात्रास्तु मानवाः अतः पठनीयं।

हिंदी अर्थ—

हर्ष है कि प्रायः सवेरा हो चुका है। भगवान् चंद्र अस्त होने वाले हैं सूरज उदयके सन्मुख है। पश्चिम दिशाका आंगन अंधकार

१—अव्ययोंके न कोई लिंग होता है और न कोई वचन। इस लिये अव्ययोंके रूप नहीं चलते। वाक्योंमें जैसीको तैसीही रखदी जाती हैं। जिस वाक्यमें कोई क्रिया न लिखी हो उसमें वर्तते (है) भवति (होता है) समझना चाहिये।

मय और पूर्वदिशाका प्रकाशमय है। कुमुद (कुई फूल) म्लान हो गये हैं लेकिन सूरजमुखी फूल खिलगये हैं। समय बड़ाही मनोहर है। कूजनेवाले पक्षी जाग गये हैं। सुगंधित फूल विकसित हो गये हैं। हरे हरे दूबके खेत ओससे सुंदर दीख पड़ते हैं खुशबूदार ठंढी हवा चल रही है। लाल और सुंदर सूरज चमक रहा है। इस समय सोना अयोग्य है। इसको छोड़ना चाहिये। इस समय छोटे भौंरे भी अपने काममें लगे हैं विद्यार्थी तो मनुष्य हैं इसलिये पढना चाहिये।

हिंदी बनाओ—

ब्रह्मदत्तनामा सम्राट् एकं स्वभवनमायातं परिव्राजकरूपिणं देवं पृच्छति। "कुत्र महामिष्टानि एतादृशानि (ऐसे) फलानि वर्तंते? तत् श्रुत्वा परिव्राट् वदति।" "मदीयमठसमीपस्था बहवो वृक्षाः तत्र बहूनि वर्तंते" ततः (इसके बाद) शुभाशुभमविचारयन् जिह्वालंपटो नृपस्तत्र गंतुं (जानेके लिये) आरभते। ततः सागरसमीपं गत्वा (जाकर) परिव्राट् सम्राजं अतिदुःखं यच्छति। दुःखं अनुभवन् सम्राट् पंचनमस्कारमंत्रं स्मरति। देवस्य मारयितुं समर्थो न भवति।

अधुना मध्याह्नसमयः, महान् निदाघः (धूप), उष्णः पवनो वहति। पथिका मार्गं गच्छंतो महांतं कष्टं अनुभवंति अत एव एकोऽपि (भी) पांथो नयनपथं न अवतरति। सर्वत्र निस्तब्धता (सूनसान) वर्तते। पक्षिणोऽपि स्वकीयान् नीडान् आश्रयंति। परं (लेकिन) क्षत्रियपुत्रौ अश्वारोहिणौ (घुड़ सवार) वीरौ युवानौ कुत्र अपि गच्छंतौ दृष्टिपथं (नेत्रोंके सामने) अवतरतः। एको श्वेत घोटकारोही द्वितीयस्य लोहिताश्वारोही। द्वावपि भ्रातरौ।

प्रश्नोत्तरमाला—

१ कः कं पृच्छति। कः प्रश्नः। किम् उत्तरं? नृपः किं आचरति।

२ कीदृशः समयः। पथिकाः किं न मार्गं गच्छंति। कौ नयनगोचरतां गतौ?।

षष्ठ अध्याय।

सर्वादि शब्दोंका व्यवहार।

प्रथम पाठ।

अकारांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ सर्वः	सर्वं	न अवगच्छति।	सब लोग	सब (पदार्थ)	नहीं जानते हैं।
दुर्जनाः	सर्वं	ईर्जंते।	दुर्जन	सबको	निंदा करते हैं।
अन्यः	अन्यं	पृच्छति।	दूसरा	दूसरेको	पूछता है।
२ अन्यौ	शास्त्राणि	गार्हते।	अन्य दो पुरुष	शास्त्रोंकी	आलोचना करते हैं।
अन्यः	अन्यौ प्रबंधौ	पठति।	दूसरा	अन्य दो प्रबन्धोंको	पढ़ता है।
३ सर्वे	अध्यापकान्	मानंति।	सब लोग	अध्यापकोंको	मानते हैं।
देवाः	सर्वान्	तिर्जंते।	देव	सबको	क्षमा करते हैं।
साध्वः	अन्यान्	सेवंते।	साधु लोग	दूसरोंकी	सेवा करते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

अन्यौ, सव, अन्यं, सर्वौ, सर्वे।

सर्व शब्दके रूप—

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—(१)सर्वः		सर्वौ	सर्वे।
द्वितीया—सर्वं		,,	सर्वान्।

१—इसी तरह विश्व, अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम, के रूप होते हैं।

द्वितीय पाठ।

तद् (१) यद्, किम् (२) शब्द।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ सः	बालकान्	पृच्छति।	वह	बालकोंको	पूछता है।
सर्वे	तं	निंदंति।	सब	उसको	निंदा करते हैं।
यः	घटं	सृजति।	जो	घड़ेको	बनाता है।
सर्वे	यं	अर्चंति।	सब	जिसको	पूजते हैं।
कः	तं	उपदिशति।	कौन	उसको	उपदेश देता है।
स्वामी	कं	आदिशति।	स्वामी	किसको	आज्ञा देता है।
२ तौ	यौ	मानेते।	वे दो	जिनदोको	मानते हैं।
यौ	तौ	पृच्छतः।	जो दो	इन दोको	पूछते हैं।
कौ	मातुलालयं	गच्छतः।	कौन दो	मामाके घर	जाते हैं।
तौ	कौ	इच्छतः।	वे दो	किन दोको	चाहते हैं।
३ ते	यान्	पृच्छंति।	वे	जिनको	पूछते हैं।
के	कान्	मानंते।	कौन लोग	किसको	सम्मान करते हैं।
ये	तान्	उपदिशंति।	जो लोग	उनको	उपदेश देते हैं।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

यं, ये, तान्, यौ, के, कान्, सः, तं, तौ,।

१—तद् शब्दके तकारको प्रथमाके एकवचनमें 'स' आदेश होता है। त्यत्, तद्, यत्, अदस्, इदम्, एतद्, और द्वि ये सात शब्दोंके अंत अक्षरके स्थानमें 'अ' हो जाता है इस लिये इनको अकारांत समझना चाहिये और इनके रूप सर्व शब्दकी भांति चलाने चाहिये। जैसे—यत् शब्दको 'य' समझा तो रूप यः, यौ, ये आदि सर्व शब्दकी भांति हुये। २—किम् शब्दको 'क' शब्द समझना चाहिये।

तृतीय पाठ।

इदम् शब्द।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	अयं	सुखं	इच्छति।	यह	सु	चाहता है
	स्वामी	इमं	तिजते।	स्वामी		क्षमा करता है
२	इमौ	कं	पृच्छतः।	ये दोनों	किसको	पूंछते हैं
	स	इमौ	वदति।	वह	इन दोंको	कहता है।
३	इमे	पुस्तकानि	पठंति।	ये	पुस्तकें	पढ़ते हैं।
	सर्वे	इमान्	गर्हंते।	सब	इनकी	निंदा करते हैं

अशुद्ध।			शुद्ध।		
कौ	अयं	पृच्छतः।	कौ	इमं	पृच्छतः।
इमं	सुखं	इच्छंति।	इमे	सुखं	इच्छंति।
ते	इमे	मानंति।	ते	इमान्	मानंति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अयं, इमौ, इमे, इमं, इमौ, इमान्।

चतुर्थ पाठ।

अदस् शब्द।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	असौ	आश्रमं	गच्छति।	यह	आश्रमको	जाता है।
	अयं	अमुं	वदति।	यह	इसको	कहता है।
२	अमू	वस्तूनि	विनिमयेते।	यह दो जनें	वस्तुओंका	लेनदेन करते हैं।
	शिक्षकः	अमू	पृच्छति।	शिक्षक	इनदोको	पूछता है।
३	अमी	सर्वान्	ईर्जंते।	ये	सबकी	निंदा करते हैं।
	सर्वे	अमून्	तिजंते।	सब	इनको	क्षमा करते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
बालकः	अमी	पृच्छति।	बालकः	अमून्	पृच्छति।
अमी	गृहं	गच्छति।	असौ	गृहं	गच्छति।
अमू	तान्	उपदिशंति।	अमी	तान्	उपदिशंति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असौ, अमू, अमी, अमुं, अमू, अमून्।

पंचम पाठ।

पुंलिंग सर्वनाम शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग।

पापात्मा अयं गुणवंतं तं रिषति।	पापी यह उस गुणवान्को मारता है।
गरीयांसौ इमौ हीनान् सर्वान् निंदतः।	बड़े ये दो जने हीन सब लोगोंकी निंदा करते हैं।
उदारमतयः सर्वे दरिद्रान् अपरान् भरंति।	उदारमति सब लोग दूसरे दरिद्रोंको पालते हैं।
लघुचेतसः इमे निस्वान् अमून् गर्हंते।	लघुचित्तवाले ये लोग इन दरिद्रोंकी निंदा करते हैं।
बुद्धिमंतौ तौ विदुषः इमान् पृच्छतः।	वे दो बुद्धिमान् इन बुद्धिमानोंको पूछते हैं।
निर्बोधः कः तं ज्ञानिनं न व्रजति।	कौन मूर्ख उस ज्ञानीके पास नहीं आता है।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पापकृतः अयं पुण्यात्मानं तान् गर्हेते।	पापकृत् अयं पुण्यात्मनः तान् गर्हते।
विद्वांसौ इमे मूढान् अमू उपदिशंति।	विद्वांसः इमे मूढौ अमू उपदिशंति।

अशुद्ध	शुद्ध
संहिताः अयं जालं हरंति।	संहिताः इमे जालं हरंति।
शोकार्तः ते विलपंतौ वृक्षवासिनं सर्वान् पृच्छंति।	शोकार्ताः ते विलपंतः वृक्षवासिनः सर्वान् पृच्छंति।

नीचे लिखे विशेषणोंको सर्वनाम शब्दोंके साथ लगाकर वाक्य बनाओ—

मतिमंतः, ज्यायांसौ, गुणिनः, सार्वभौमान्, मेधाश्रयिणं, लघुचेताः, पापकर्माणौ, विद्यावतः, कनीयांसः, गच्छंतं, दृष्टाः, श्रुतवंतः ध्यायतः, रोदनानुसारिणौ।

शुद्ध करो—

कन्यालिप्सुः ते स्वयंवराः कन्या इच्छंते। कः मृगं त्रासितवंतः। ज्यायांसः अमू कनीयासं तान् उपदिशंति। विदुषः सर्वः मूर्खान् इमे तर्जंते। गायंतः सः श्रोतारं अमून् वदति। आश्रमागतौ असौ ध्यायंतः तान् प्रणमतः। सारगर्भाः अमू श्रुताः। विचारकः इमे दोषिणः तं अर्दंति।

एक एक योग्य विशेषण रखकर वाक्य पूरे करो—

———असौ———इमान् पठति। ———ते———अमू निंदंति। ——सर्वे——तान् अर्चंति। ——अमू——तौ महतः।

उपयुक्त सर्वनाम लगाकर वाक्य पूरे करो—

——महामतयः——अपराधिनः——तर्जंते। बलवान्——दुर्बलान्——अर्दति। गच्छंतः ——तिष्ठंतं———उपदिशंति। साधुशीलौ——परोपकारिणः——मानेते। शिष्यानुरागी———विद्यादातारं——सेवते।

संस्कृत बनाओ—

वह जीवंधर उसी काष्ठांगारको मारता है जिसने उसके पिताको मारा था (हंतिस्म)। ये लोग उस रावणके पास जाते हैं, जिसने

सीताको हरा था (हरतिस्म)। ये ही शास्त्रभक्त वृद्धसेवी भूपतिगण शत्रुओंको पराजित करते हैं। इस बैलको वह किसान चाहता है। यह बड़ा भारी अपराध है पर इसको भी वह सहता है। अन्य विद्वान क्या कहते हैं। दरिद्रताको कोई भी नहीं चाहता है। वह श्रेणिक (बिंबसार) सर्वत्र प्रसिद्ध है जो पहिले बौद्ध और पश्चात् जैन हुआ (भवतिस्म)।

हिंदी बनाओ—

अन्यबधूर्भवित्री बाला अमुं राजानं तथा अतिक्रामति यथा सागरं गंत्री स्रोतोवहा (नदी) मार्गस्थं महीधरं अतिक्रामति। सागरोऽयं महागंभीरः। असौ सूर्यो मरीचिं वितरति। अमी मत्स्या जलात् उत्क्षिपंति। कोऽयं जनः ? य एवं स्नानार्थं नदीं गच्छति। स एव अयं यो मुनीन् सेवते छात्रान् च उपदिशति। श्मशानभूमिं गतास्ते तं मुनिं प्रणतवंतः। सोऽपि मुनिराशीर्वादं दत्तवान्। अमुं ग्रंथं पठित्वा (पढ़कर) सर्वे छात्रा गृहं गताः। एष निर्धनो वनं गच्छति। केचित् तं श्लाघंते अन्ये च निंदंति। अयं एव प्रियः सखा। सर्वे गुणाः कांचनं आश्रयंति। का अपि शंबरी (बारहसिंगी) नदीजलं पिबंती प्रतिबिंबितं आत्मरूपं दृष्ट्वा महत् मुदं लब्धवती। ततः पादप्रभृति (वगैरः) शिरःपर्यंतं सर्वान् अवयवान् एकैकशो (एक एक करके) निरूपयंती गदितवती "एतद् विषाण(सींग)युगलं कियत् (कितने) मनोहरं वर्तते। कथं (कैसे) सुंदरे नयने, ये कमलानि अपि जयतः। कथं अंगं कुसुमसदृशं कोमलं। परं (लेकिन) पादा एव लज्जाकराः। इमे कथा दुर्दर्शनाश्च वर्तंते।

परिशिष्ट।

पूर्व शब्द। | (१) एतत् (यह) शब्द (एवं त्यद)

	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथ०—	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः	एषः	एतौ	एते।
द्वि०—	पूर्वं	पूर्वौ	पूर्वान्	एतं,एनं	एतौ,एनौ	एतान्,एनान्

इसी तरह-स्व, अंतर, पर, अवर, उत्तर, दक्षिण, अपर, अधरके रूप समझना।

त्यद (वह) के रूप प्रथमाके एकवचन में स्यः होगा।

(२) एक (मुख्य, कोई) शब्द। | (३) द्वि (दो) शब्द।

	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथ०—	एकः	एकौ	एके	०	द्वौ	०
द्वि०—	एकं	एकौ	एकान्	०	द्वौ	०

(४) प्रथम (पहिला)

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथ०—	प्रथमः	प्रथमौ	प्रथमे, प्रथमाः।
द्वि०—	प्रथमं	प्रथमौ	प्रथमान्।

१—एतद तथा इदम् शब्दके द्वितीया विभक्तीमें—एनं, एनौ, एनान्, इस तरहके भी रूप होते हैं। इन रूपोंका प्रयोग सब जगह नहीं करते। जब एक बार इदम्, अथवा एतद, शब्दका प्रयोग एक पदार्थके लिये कर चुके हैं और फिर दूसरी वारभी उसी पदार्थके लिये इदम्, अथवा एतदका प्रयोग करना है तब इन रूपोंका प्रयोग करते हैं। जैसे—अयं धनवान् वर्तते (यह धनवान् है) अतः एनं सर्वे मानंति (इस लिये इसका सब संमान करते हैं) यहां एतं सर्वे मानंति कहना अशुद्ध है। २। एक शब्दका अर्थ जब कि अकेला होता है अर्थात् जब किसीकी संख्या बताता है तब एकवचन में रूप चलते हैं द्विवचन बहुवचनमें नहीं। ३—द्वि शब्दको एकवचन, बहुवचन नहीं होता। ४—इसी तरह—चरम, अल्प, अर्द्ध कतिपय, नेम और जिन शब्दोंके अंतमें 'तय' है उन शब्दोंके रूप होते हैं।

संस्कृत बनाओ—

यह लड़का सुशील है इसलिये इसको सब मानते हैं। इस विद्यार्थीने संस्कृतप्रवेशिनी पढली है (पठितवान्) इसलिये इसको जैनेंद्र पढ़ाओ (पाठय) ये दोनों दुष्ट हैं इससे लोग इनकी निंदा करते हैं। ये धार्मिक हैं इसलिये देव भी इनको नमते हैं। ये लोग विद्वान हैं इससे इनको सब पूजते हैं। कोई कहते हैं कि (यत्) यह जीव मोक्ष जाकर (गत्वा) लौट आता है (प्रत्यागच्छति) और भ्रमण करता है पर पूर्वआचार्योंने इस बातका खंडन किया है (प्रत्याख्यातवंतः)।

हिंदी बनाओ—

ज्ञातिकुलैकसंश्रयां भर्तृमतीं नारीं सतीं अपि जनोऽन्यथा विशंकते। अतो बंधवः प्रियां अप्रियां वा स्त्रीं पतिगृहं प्रति प्रेषयंति (भेजते हैं)। परपीडनं दुष्टस्वभावो ऽतस्तान् सज्जनास्त्यजंति। बुद्धिमंतः स्वसामर्थ्यं वीक्ष्य दानादिकं आचरंति। ये विचारशून्यास्ते आत्मानं पंडितं मन्यमानाः गर्वं वहंति। महांतो जनाः परस्परं विवदंते हीनाश्च दुःखं अनुभवंति। यो हिताहितं न बोधति स प्रसन्नोऽपि हानिं एव यच्छति। मधुरा वाणी कल्याणकारिणी। पंडितः स खलु ज्ञेयो यो नित्यं भाषते मितं। जीवन् नरो भद्र(कल्याण) शतानि पश्यति। धार्मिका एते अतः एनान् देवा अपि नमंति। इमं तडागं भ्रमराः सेवंते अथो (और) एनं विहायसश्च। एतौ जनौ अर्थिनः सेवंते अथो एनौ मित्राणि अपि। सर्वः स्वार्थं पश्यति। सूर्यो हि महान् उपकारकः।

—*—

षष्ठ पाठ।

स्त्रीलिंग।

(१)—आकारांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ सर्वा	श्वश्रूं	पूजति।	सब (स्त्री)	सासुको	पूजती है।
साधुः	सर्वां	उपदिशति।	साधु	सब (स्त्री) को	उपदेशदेता है।
जननी	अन्यां	सेवते।	मा	दूसरी (स्त्री) को	सेवती है।
२ अन्ये	सर्वां	सेवेते।	अन्य दो स्त्रियां	सब (स्त्री) को	सेवती हैं।
पुत्रशोकः	अन्ये	तुदति।	पुत्र शोक	अन्य दो (स्त्री) को	कष्ट देता है।
३ सर्वाः	देवान्	अर्चंति।	सब (स्त्रियां)	देवोंको	पूजा करती हैं।
साधुः	सर्वाः	उपदिशति।	साधु	सब (स्त्रियों) को	उपदेश देता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

सर्वाः, अन्ये, अपरा, अन्यां, अपरे, सर्वे, अपराः।

सप्तम पाठ।

तद् यद् किम् शब्द।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रियां।
१ सा	बालिकां	वदति।	वह	बालिकाको	कहती है।
बालिका	तां	पृच्छति।	लड़की	उसको	पूछती है।
या	तं	अर्दति।	जो (लड़की)	उसको	दुख देती है।

१—पहिले बतला चुके हैं कि ह्रस्व अकारांत शब्दोंको दीर्घ आकारांत कर देनेसे वे प्रायः स्त्रीलिंग हो जाते हैं उसी नियमके अनुसार सर्व आदिक शब्दोंको भी स्त्रीलिंगमें दीर्घ आकारांत कर देना चाहिये। त्यद् आदिक पहिले बताये गये शब्द व्यंजनांत होने पर भी अकारांत हो जाते हैं यह भी बता चुके हैं इस लिये उनको भी उसी तरह स्त्रीलिंग बनाकर रूप चलाने चाहिये। द्वितीय अध्यायके पहिले पाठके समान इन सर्व आदिकोंके रूप होंगे कुछ अंतर नहीं होता है।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
सः	यां	उद्वहति।	वह	जसको	व्याहता है।
का	वाचं	भाषते।	कौन (स्त्री)	वाणी	बोलती है।
बालिका	कां	स्पृशति।	लड़की	किस (लड़की) को	छूती है।
२ ते	बालिकां	वदतः।	वे दो (स्त्रियां) लड़कीको		कहती हैं।
बालिका	ते	पृच्छति।	लड़की	उन दो (स्त्रियों) को	पूछती है।
ये	तं	अर्द्दतः।	जो दो (स्त्री)	उसको	पीड़ा देती हैं।
बालिका	के	स्पृशति।	लड़की	किन दो (स्त्री) को	छूती है।
३ ताः	बालिकां	वदंति।	वे स्त्रियां	लड़कीको	कहती हैं।
ताः	याः	उपदिशंति।	वे स्त्रियां जिन (स्त्रियों) को		उपदेश देती हैं।
प्रभवः	काः	आदिशंति।	स्वामी लोग किन (स्त्रियों) को		आज्ञा देते हैं।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

या, ये, याः, सा, ते, ताः, का, के, काः, यां, ये, याः, तां, ते, ताः, कां, के, काः, ।

अष्टम पाठ।

इदम् शब्द।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ इयं	वाचं	भाषते।	यह (स्त्री)	वाक्य	कहती है।
जननी	इमां	पृच्छति।	मा	इस (स्त्री) को	पूछती है।
२ इमे	श्वसुरालयं	गच्छतः।	ये दोनों (स्त्रियां)	ससुरालको	जाती हैं।
श्वश्रूः	इमे	आदिशति।	सासु	इन दो (स्त्रियों) को	आज्ञा देती है।
३ इमाः	कं	पृच्छंति।	ये स्त्रियां	किसको	पूछती हैं।
कः	इमाः	ईक्षते।	कौन	इन स्त्रियोंको	देखता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

इयं, इमे, इमाः, इमां, इमे, इमाः ।

नवम पाठ।

अदस् शब्द।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ असौ	भृत्यां	तर्जति।	यह (स्त्री)	नौकरनीको	ताडना देती है।
परिचारिका	अमूं	मानते।	नौकरनी	इस (स्त्री) को	मानती है।
२ अमू	बालिकां	पृच्छतः।	ये दो स्त्रियां	लड़कीको	पूछती हैं।
बालिका	अमू	पृच्छति।	लड़की	इन दो स्त्रियोंको	पूछती है।
३ अमूः	वाचं	भाषंते।	ये स्त्रियां	बात	कहती हैं।
स्वामिनी	अमूः	पृच्छति।	मालकिन	इन स्त्रियोंको	पूछती है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असौ, अमू, अमूः, अमूं, अमू, अमः।

दशम पाठ।

(स्त्रीलिंग सर्वनामशब्दोंका विशेषणोंके साथ व्यवहार)

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
सुंदरी सा	मनोज्ञां इमां	पश्यति।	सुंदरी वह	मनोज्ञ इसको	देखती है।
सुंदर्यौ अमू	मनोज्ञे ते	पश्यतः।	सुंदरी ये दोनो	मनोज्ञ उन दोनोंको	देखती हैं।
ज्यायस्यः इमाः	रुदतीः ताः	उपदिशंति।	श्रेष्ठ ये (स्त्रियां)	रोती हुई उनको	उपदेश देती हैं।
भृत्याः	महानुभावां इमां	सेवंते।	भृत्य लोग	इस महानुभाव स्त्रीको	सेवते हैं।
दात्र्यौ इमे	गृहीत्रीः सर्वाः	स्पृशतः।	देने वाली ये दो स्त्रियां	लेने वाली सब स्त्रियोंको	छूती हैं।

कर्ता कर्म क्रिया।	कर्ता कर्म क्रिया।
शिक्षार्थिनी असौ शिक्षयित्रीं तां प्रणमति।	शिक्षाको चाहने वाली यह स्त्री उस शिक्षिका स्त्रीको प्रणाम करती है
गच्छंत्यौ एते पृच्छंतीं अमूं वदतः।	जाती हुई ये दो स्त्रियां पूछने वाली इस स्त्रीको कहती हैं।
धर्मपरा एषा साध्वीं अमूं अर्चति।	धर्ममें तत्पर यह स्त्री इस साध्वी को पूजती है।
पूर्वाः कथाः श्रुताः।	पहिली कथायें सुनी।
ब्रह्मचारिणः उत्तराः पुस्तिकाः पठंति।	ब्रह्मचारी लोग बादकी पुस्तकें पढ़ते हैं।
स्वर्गं गंत्री सा कठोरं तपः चरति।	स्वर्गकोजानेवाली वह स्त्री कठोर तप करती है।
श्वेतवस्त्रधारिणी इयं साध्वी अर्चंतीं इमां वदति।	श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली यह साध्वी पूजनेवाली इस स्त्रीको कहती है।

अशुद्ध	शुद्ध
शुद्धवसना एते दात्रीं अमूः अंचतः।	शुद्धवसने एते दात्रीः अमूः अंचतः।
रामदासः भिक्षां इमाः वांछति।	रामदासः भिक्षाः इमाः वांछति।
रुदती सर्वाः अस्पष्टां एताः भाषंते।	रुदत्यः सर्वाः अस्पष्टाः एताः भाषंते।
इयं जैनपुस्तिकाः सर्वा पठिताः।	इयं जैनपुस्तिका सर्वा पठिता।
शिष्याः पवित्रां एताः आहरंति।	शिष्याः पवित्राः एताः आहरंति।

इमा साध्व्यः अमू पवित्राः पश्यंति।	इमाः साध्व्यः अमूः पवित्राः पश्यंति।
उज्ज्वला एते द्योतते।	उज्ज्वला एषा द्योतते।
क्लेशदायिन्यः इयं संजाताः।	क्लेशदायिन्यः इमाः संजाताः।
वेगवत्यः अमी एधंते।	वेगवत्यः अमूः एधंते।
बुद्धिमत्यौ असौ लज्जमानाः अमू पृच्छतः।	बुद्धिमत्यौ अमू लज्जमाने अमू पृच्छतः।

शुद्ध करो—

सर्पाकाराः एषा वर्तते। श्वेताः अमू शोभेते। विदुषी सर्वाः मनोहारिणीं इमाः वदंति। क्षुधिता इमे पिपासिता एताः पृच्छतः। साध्व्यः असौ अर्चितवतीं अमू स्पृशति। के ताः गच्छंति। असौ बालिकाः किंविधां एताः पश्यंति। का अमू आगच्छति। बालकः का राज्ञीं पश्यति। सा कां पृच्छंति। ताः अमूं पृच्छंति। अपि (क्या) ते विदुष्यः। ये गुणवत्यः ते यशः लभंते।

नीचे लिखे शब्दोंसे एक २ वाक्य बनाओ लेकिन सर्वादि शब्दोंका प्रयोग करना आवश्यक है।

पराजिताः, परिवर्द्धमानां, बिभ्रत्यौ, गच्छंतो, रुदतीः, म्रियमाणे, गरीयस्यौ, ज्यायसो, मायाविन्यः, सदृशीं, लज्जावतीः, हिरण्मयीं, यशस्कर्यः, श्रोतस्वतो, दात्र्यः, भवित्रीं (होने वाली), आगताः।

एक एक उपयुक्त शब्द लगाकर नीचे लिखे वाक्य पूरे करो—

———एताः वहंति, ——— असौ एधते, योषित्———इमां पश्यति। वृष्टिः——एताः उक्षति। ——इयं——सर्वाः तर्जति। ——इमाः प्रत्यावर्तते। परोपकारी———इमां लभते। लोकाः ——अमूः मर्हति।——एताः आकाशं कर्वते। शिष्याः——सर्वाः ———मनंति। वन्हिः——एते दहति। ——इमे शोभेते। विदुष्यः——इमे अनुगच्छंति।

———

एकादश पाठ।

अशुद्ध।	शुद्ध।
श्यामल: इयं शोभते।	श्यामला (नीली) इयं शोभते।
मनस्वी एषा राजते।	मनस्विनी एषा राजते।
कर्त्री कार्यकुशलं अमुं आदिशति।	कर्त्री कार्यकुशलां अमुं आदिशति।
विद्वान् अमू रुदंतं इमां उपदिशंति।	विदुष्य: अमू: रुदतीं इमां उपदिशंति।
ब्रह्मचारी एता: ज्ञानदातारं परिषदं गच्छंति।	ब्रह्मचारिण्य: एता: ज्ञानदात्रीं परिषदं गच्छंति।
रत्नाभरण: एषा दयावंतं अमुं अर्चति।	रत्नाभरणा एषा दयावतीं अमुं अर्चति।
सुग्रीव: रत्नभूषितं अयोध्यां इच्छते।	सुग्रीव: रत्नभूषितां अयोध्यां ईच्छते।
वेगवंत: एता: एधंते।	वेगवत्य: एता: एधंते।
ज्ञानवान् इयं शोभां पश्यंतं तां भाषते।	ज्ञानवती इयं शोभां पश्यंतीं तां भाषते।
धूसरौ एते आगच्छत:।	धूसरे एते आगच्छत:।

शुद्ध करो—

गुणवंत: अमू: विद्वांसौ इमा: पृच्छंति। शुभ्र: एता: मेघमुक्ता इमाम् उपगता: (प्राप्त हुई)। मनस्विन: ता: मधुराणि इमे भाषंते। कृष्णा अयं नीलं एतां कुर्वति। पवित्र: इमा: साधून् एता: भाषंते। साधु: इमे संयतान् अमू: मृशति।

उपयुक्त सर्वनाम शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य पूरे करो—

गुणवत्य:——देवसदृशीं——सेवंते। तृष्णार्त्ता:——तृष्णातुरां——दयंते। सरलस्वभावा:——साध्वी:——अर्हंति। ज्ञानार्थिन्य:

——निर्मलसलिलां——अवगाहंते। कृतसीतापरित्यागः—रत्नाकरधौतां——रक्षति। मधुपानमत्ताः (मधुकेपीनेमें लगे हुये)——प्रफुल्लानि——न त्यजंति। धर्मार्थी——क्लेशकरां—— इच्छति।

नीचे लिखे वाक्योंमें एकवचनके स्थानमें बहुवचन और बहुवचनके स्थानमें एकवचन रक्खो—

विद्वांसः एते शिक्षिताः अमूः उद्वहंते। पंडितबुद्धिरसौ अर्थहीनां इमां न भाषते। पुत्रार्थिन्यः एताः साध्वीं अर्चंति। कृतविवाहा इयं नवोढां इमां उपदिशति। कन्यादृष्टुकामा (लड़कीको देखनेकी इच्छावाली) एषा स्फटिकमयीं तां व्रजति।

स्त्रीलिंगशब्दके स्थानमें पुंलिंग और पुंलिंगके स्थानमें स्त्रीलिंग शब्द रक्खो—

निपुणः अयं गुणवतीः इमाः सर्वाः उपदिशति। चपला एषा सुंदरी एतौ ईक्षते। वेगवत्यौ इमे विशालं अमुं कांक्षतः। प्रसविनी इयं तं पुत्रं पश्यति। विलासिनी असौ संतं (अच्छा, योग्य) तं तर्जति। प्रियवादिनः एते निर्बोधां लुभंति। गरीयांसौ इमौ श्रेयसीः अमूः लभंते। कनीयसी सा ज्यायांसं अभिलषति।

ऊपर लिखे वाक्योंकी हिंदी लिखो।

हिंदी बनाओ—

योऽन्यं पीडासहितं पश्यति, तथा (और) तदीयां (उसकी) तां पीडां चिंतयति (विचारता है) सोऽवश्यं एव चिंतासमाकुलो भवति। अधर्मं उपदेष्टुं (उपदेश देनेके लिये) को न पंडितः। आकार एव (ही) सर्वान् गुणान् वदति। ये धूर्त्तास्ते मूर्खान् आश्रित्य (आश्रयकरके) जीवंति। या दुःखसाध्या चपला दुरंता सा लक्ष्मीः कथं (क्यों) न त्याज्या (छोड़ने योग्य)। सर्वः सुखं न अनुभवति। सर्वाः संपदो नश्वराः। या सर्वदा पतिं अनुसरति सा एव भार्या पतिव्रता। इमां विदुषीं वीक्ष्य के न आनंदं लभंते। ताः स्त्रियो हि (निश्चयसे) धन्याः या भवंति पतिव्रताः। या एकां अपि

कुत्सितां वाचं वदति सा नूनं (निश्चयसे) दंडनीया (दंड देनेके योग्य)। ते एव मानवा धन्या ये जितेंद्रियाः। इमाः ज्ञानशून्या (१) अतः (इस लिये) सर्वत्र अभिभवंति (तिरस्कृतहोती हैं)। असौ मनो जयति अतः सर्वान् जयति। अमूः दाराः गर्वं न वहंति।

संस्कृत बनाओ—

जो स्त्री परिमित बोलती है वह पंडिता है। वहही कार्य्य कुशल है जो विजयपाता है। यह स्वयं सुखसहित है इस लिये अन्य सबोंको भी सुखी समझती है। यह कौन आती है? यह वह ही साध्वी है जो श्रावकोंको उपदेश देती है। यह विचारी (वराका) दुःखसे जीवन काटती है (कठति) इसको देखकर पाषाणहृदय मनुष्य पिघल जाता है (गलति)। यद्यपि वह शूद्र है तथापि उसका सब लोग आदर करते हैं क्योंकि (यतः) गुणी है। यह बहुत भूखी है इस लिये शीघ्रही (शीघ्रं) गुस्सा होती है। यह नीति है इसका कौन लांघता है। स्त्रियां पतिका विश्वास करती हैं। यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है।

द्वादश पाठ।

नपुंसकलिंग—अकारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	सर्वं (२)	वृष्टिं	इच्छति।	सब वस्तु	वर्षाको	चाहती है।
	वृष्टिः	सर्वं	सिंचति।	वर्षा	सबको	सींचती है।
२	अपरे	वृष्टिं	इच्छतः।	अन्य दो वस्तु	वृष्टिको	चाहती हैं।
	कर्ता	अपरे	पश्यति।	कर्ता	अन्य (दो वस्तु) को	देखता है।

१—विसर्गका लोप होनेसे एकवचन और बहुवचनमें भेद नहीं रहता सो संधि, क्रिया तथा विशेषणोंका पूरा २ ध्यान रखना आवश्यक है। २—जब कि किसी विशेष पदार्थको नहीं चाहते तब किसी लिंगका निश्चय न होनेसे (सामान्यमें) नपुंसक लिंगकी विभक्ती लाते हैं।

३ सर्वाणि	वृष्टिं	इच्छंति।	सब चीजें	वर्षाको	चाहती हैं।
कर्ता	अपराणि	पश्यति।	कर्ता	अन्य (वस्तुओं) को	देखता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(१) सर्वं, सर्वे, सर्वाणि।

त्रयोदश पाठ।

तद् यद् किम् शब्द।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ तत्	तं	तुदति।	वह (वस्तु)	उसको	पीडा देती है।
सः	तत्	पश्यति।	वह	उस (वस्तु) को	देखता है।
यत्	मनः	हरति।	जो	मनको	हरता है।
मनः	यत्	इच्छति।	मन	जिसको	चाहता है।
किं	वृक्षान्	कृंतति।	कौन (वस्तु)	वृक्षोंको	काटता है।
वृक्षः	किं	विकिरति।	वृक्ष	क्या	बखेरता है।
२ ते	हृदयं	लुभतः।	वे दो (वस्तु)	मनको	लुभाती हैं।
सलिलं	ते	सिंचति।	जल	उन दो (वस्तु) को	सींचता है।
के	हृदयं	लुभतः।	कौन दो (वस्तु)	हृदयको	लुभाती हैं।
ये	मनः	हरतः।	जो दो वस्तु	मनको	हरती हैं।
३ वृक्षाः	कानि	विकिरंति।	वृक्ष	किन वस्तुओंको	वर्षाते हैं।
कानि	हृदयं	लुभंति।	कौन (वस्तुयें)	हृदयको	लुभाती हैं।
राजा	तानि	पश्यति।	राजा	उन (वस्तुओं) को	देखता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

किं, के, कानि, तत्, ते, तानि, यत्, ये, यानि।

१—नपुंसक लिंगमें प्रथमा (कर्ता) और द्वितीया (कर्म) विभक्तीके समान रूप होते हैं।

चतुर्दश पाठ।

इदम् शब्द।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	इदं	मनः	हरति।	यह (वस्तु)	मन	हरती है।
	राजा	इदं	इच्छति।	राजा	इस (वस्तु) को	चाहता है।
२	इमे	जलं	वितरतः।	ये दो (वस्तु)	जल	देते हैं।
	शिशिरं	इमे	तुदति।	शिशिर (ठंडी)	इन दो वस्तुओंको	सताती है।
३	इमानि	अग्निं	गूहंति।	ये (वस्तुयें)	आगको	छिपाती है।
	अग्निः	इमानि	दहति।	आग	इन (वस्तु) को	जलाती है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

इदं, इमे, इमानि।

पंचदश पाठ।

अदस् शब्द।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	अदः	विहंगमान्	लुभंति।	यह (वस्तु)	पक्षियों को	लुभाती है।
	भ्रमराः	अदः	पिबंति।	भ्रमर	इस (मधु) को	पीते हैं।
२	अमू	पर्वतं	भूषतः।	ये दो (वस्तु)	पर्वतको	भूषित करते हैं।
	अग्निः	अमू	दहति।	आग	इन दोको	जलाती है।
३	अमूनि	पृथिवीं	सिंचंति।	ये	पृथिवीको	सींचते हैं।
	बालकाः	अमूनि	खादंति।	बालक	इनको	खाते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अदः, अमू, अमूनि।

षोडश पाठ।

नपुंसकलिंग सर्वनाम शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग।

कर्ता कर्म क्रिया।	कर्म क्रिया।
सजलं तत् निर्मलं इदं वितरति।	सजल वह निर्मल इसको देता है।
सजले ते श्यामलं इदं उच्चत:।	सजल वे (दो) हरे इसको सींचते हैं।
राजा श्यामायमाने इमे पश्यति।	राजा नीले इन दो को देखता है।
मनोहराणि इमानि नयने लुभंति।	मनोहर ये नयनों को लुभाते हैं।
बालका: श्रीमत् सर्वं पश्यंति।	बालक शोभावाले सर्वोंको देखते हैं।
ज्योतिष्मंति सर्वाणि रात्रिं भूषंति।	ज्योतिवाले सब रात्रिको शोभित करते हैं।
गच्छंति एतानि पयांसि वितरंति।	जाते हुये ये जलको देते हैं।
राजान: रत्नवंति अमूनि इच्छंति।	राजा लोग रत्नवाले इनको चाहते हैं।
गच्छंतो एते पर्वतं कुंवत:।	चलते हुये ये पर्वतोको ढांकते हैं।

अशुद्ध

विशालं एते शोभेते।	विशाले एते शोभेते।
बलवत् अमू दृष्टे।	बलवती अमू दृष्टे।
उज्ज्वला इमे नयने तुदति।	उज्ज्वले इमे नयने तुदत:।
बालक: स्वादुनी इमानि खादति।	बालक: स्वादूनि इमानि खादति।
पथिका: प्रासादशोभितानि अमू पश्यंति।	पथिका: प्रासादशोभिते अमू पश्यंति।
वक्राकार: एतत् दृष्टं।	वक्राकारं एतद् दृष्टं।

अशुद्ध।	शुद्ध।
गंधयुक्ताः अमू आकाशं उद्गच्छतः।	गंधयुक्ते अमू आकाशं उद्गच्छतः।
चंद्रमाः रत्नवंतं इमे कवते।	चंद्रमाः रत्नवती इमे कवते।
नीलः अदः हिमाद्रिं स्पृशति।	नीलं अदः हिमाद्रिं स्पृशति।
धूसरः सर्वं धेनुं भूषति।	धूसरं सर्वं धेनुं भूषति।
मनोरमा इमे नयनानि लुभतः।	मनोरमे इमे नयनानि लुभतः।

शुद्ध करो—

मलीमसः एतानि दुखं अनुभवति। राजनिर्मिती अमूनि प्रसंते। श्वेतं अमू देहं भूषति। हिमाद्रिः नीलं अयं चर्वति। पीडिताः इमानि न पश्यंति। अग्निः निश्चिमान् अमूनि दहति। उद्विग्ना एते वर्तंते। सूत्रधरः (बढ़ई) भग्नानि इदं कांचति। बालकः मधुरां इदं खादति।

नपुंसक लिंग सर्वनाम शब्दोंके साथ नीचे लिखे विशेषण लगाकर वाक्य बनाओ—

र वंति, मनोरमे, दृष्टानि, स्पृशंती, स्वादुनी, मधुरे।

एक २ उपयुक्त विशेषण लगाकर नीचे लिखे वाक्य पूरे करो—

——सर्वाणि——इमे लुभंति। बालकौ——अमू पश्यंतौ व्रजतः। आश्रमसेवकाः———एतानि आहरंति। ——अमू शोभेते। साधुः——अमूनि वितरति। चोरौ——ते कांचतः।

नीचे लिखे वाक्य उपयुक्त सर्वनाम शब्द लगाकर पूरे करो—

श्रीमंति——शोभंते। विशाले——स्वादूनि——विकिरतः। अग्निः निश्चिमानि———दहति। नद्यः शुष्काणि———वहंति। महती——शोभेते।

एकवचनके स्थानमें बहुवचन और बहुवचनके स्थानमें एकवचन करो—

अदः गर्हितं। अदः दुग्धं इव औषधं। प्रियवाक्‌सहितानि

इमानि दुर्लभानि। जंबुकः निःस्वादु स्नायुबंधनं खादति। अयं एतानि जलजंतूनि रक्षति।

हिंदी (१) बनाओ—

इदं वपुर्माहात्म्यं दौरात्म्यं च वदति। अपराधि मानसं सर्वदा आत्मानं शंकते। हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। आचार्याः "गहणो गहं" इति वदंति। महद् यशो दुर्लभं वर्तते। अत्यंतं सर्वं निंद्यं भवति। कुशलिनो जना नवं मित्रं न विश्रंभंते। सर्वे विद्वांसो न भवंति। प्रतिक्षणं यत् वस्तु नवतां (नवीनपना) गच्छति तद् एव रमणीयं। एको धर्म एव सुहृत् यः सर्वदा इमं जीवं अनुगच्छति। सुतप्तं अपि वारि पावकं शमयति (बुझाता) एव। इच्छानुकूलं ऐश्वर्यं कोऽत्र (इस लोकमें) लभते पुमान्। स्वचेष्टितानि एव नरं गौरवं अपमानं वा नयंति। अदो जलं शुचि (पवित्र) वर्तते। स्वभावजनितां प्रकृतिं कोऽपि न त्यजति। यत् वार्तं (वात) त्वयो बोधंति तत् सर्वे एव बोधंति। जीवन् नरो भद्रशतानि (सैकड़ों कल्याण) पश्यति। स्त्रीस्वभावो हि मात्सर्यं। स्त्रीमनो नित्यं चंचलं भवति। पांडित्यं क्षुधं न शमयति। मायामयं इदं अखिलं (संपूर्ण) विश्वं (जगत्)। संसारोऽयं रंगभूमि (नाटक घर) नरा नार्यश्च नर्तकाः। सकृत् (एकबार) नष्टं यशः प्रायो न पुनर्लभते नरः।

संस्कृत बनाओ—

इस लोकमें (अत्र) जो मनुष्य धनवाला है वहही-पंडित, शास्त्रज्ञाता, गुणज्ञ, वक्ता, दर्शनीय है क्योंकि (यतः) सब गुण धनका आश्रयण करते हैं। यह संपूर्ण जगत् दुःखमय है। यहां कोई

१—संस्कृतमें—कर्ता पहिलेही रक्खा जाय और कर्म तथा क्रिया वादको ही रक्खी जावे एसा कोई नियम नहीं है चाहें जहां रख सक्ते हैं इस लिये हिंदी व्याकारणके अनुसार विद्यार्थियोंको अर्थ समझ २ कर शुद्ध भाषा लिखनी चाहिये।

भी सुख नहीं पाता। आप (भवान्) कहां जाते हैं। यह बिल्ली वृक्षपर चढ़ती है (आ-रुह)। भ्रमर बार २ फूलपर बैठता है। यह बड़ा परिश्रमी है। यह पुस्तक सुंदर है। यह एक टुकड़ा है। जो परदूषणको नहीं कहता है संतोष धारता है अपनी प्रशंसा नहीं करता नीतिको नहीं छोड़ता अपराधको क्षमा करता है वह सज्जन है। जो मूढ़ इस दुष्प्राप्य नरजन्मको पाकर (लब्ध्वा) धर्मका आचरण नहीं करता है वह दुर्लभ चिंतामणि रत्नको पाकर छोड़ देता है। जो धर्मको छोड़कर इधर उधर इंद्रिय सुखके लिये (इंद्रियसुखार्थं) दौड़ते हैं वे कल्पवृक्षको उखाड़ कर (उन्मूल्य) धत्तूर तरुको बोते हैं। यदि मनुष्य धर्म नहीं करता है तो यह जीवन निष्फल है। मगधनामका बड़ाभारी देश है। वह (तत्र) पुष्पपुरी नगरीको जाता है। यह कौन लड़का है और क्यों दीन है। वह राजपुत्र इस समय तरुणावस्थाका अनुभव करता है। वह वृद्धा स्त्री रोती है। वे लोग ईश्वरका ध्यान करते हैं। वे माता पिता प्रशंसाके योग्य हैं, जो अपने पुत्रोंको पढ़ाते हैं। वह मुझे धर्मका उपदेश देती है। यह बात राजाने सुनी (श्रुतवान्)। मैंने भी यह काम किया है। परीक्षा बड़ी भयंकर चीज है। सब लोग इससे (अतः) डरते हैं। यह लड़का बड़ा उद्दंड है।

सप्तम अध्याय।

उत्तम पुरुष।

प्रथम पाठ।

अस्मद् शब्द (१)—अलिंग।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।		कर्म	क्रिया।
१	अहं	पर्वतं	व्रजामि।	मै	पर्वतको	जाता हूं।
	अहं	अन्नं	खादामि।	मैं		खाता हूं।
	अहं	तरून्	कृंतामि।	मैं	वृक्ष	काटता हूं।
	सः	मां	स्पृशति।	वह	मुझको	छूता है।
	बालकाः	मां	पश्यंति।	लड़के	मुझे	देखते हैं।
२	आवां	जिनान्	पूजावः।	हम दोनों	जिनको	पूजते हैं।
	आवां	जैनेंद्रं	पठावः।	हम दोनों	जैनेंद्र	पढ़ते हैं।
	गुरुः	आवां	उपदिशति।	गुरु	हम दोनोंको	उपदेश देते हैं।
	साधवः	आवां	पृच्छंति।	साधु लोग	हम दोनोंको	पूछते हैं।
३	वयं	अश्वान्	पश्यामः।	हम सब	घोड़ोंको	देखते हैं।
	वयं	शास्त्राणि	मनामः।	हम सब	शास्त्रोंका	मनन करते हैं।
	निंदकाः	अस्मान्	निंदंति।	निंदक लोग	हमारी	निंदा करते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
अहं	शत्रुं	जयामः।	अहं	शत्रुं	जयामि।
आवां	दुग्धं	पिबतः।	आवां	दुग्धं	पिबावः।
वयं	वाचं	वदंति।	वयं	वाचं	वदामः।
अहं	ईश्वरं	ध्यायति।	अहं	ईश्वरं	ध्यायामि।

१—युष्मद और अस्मद शब्दके रूप तीनों लिंगोंमें समान होते हैं इस लिये इनको अलिंग कहते हैं।

वयं साधून् मह्वावः। वयं साधून् मह्वामः।
आवां क्रोच्छामः। आवां क्रोच्छावः।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

क्रामावः, चामामः, अतावः, आरोहावः, तर्जामि, सृजामि, स्पृशामः, शंसामि, पश्यामि, अर्चावः, मनामि, अहं, आवां, वयं, मां, अस्मान्।

धात्वर्थ (१)

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन द्विवचन बहुवचन
भू	होना	(भव्+आ+मि)	भवामि, भवावः, भवामः।
सिधु	जाना	(सेध्+आ+मि)	सेधामि, सेधावः, सेधामः।
क्रमु	पैदल जाना	(क्राम्+आ+मि)	क्रामामि,क्रामावः,क्रामामः।
ष्ठीवु	थूकना	(ष्ठीव्+आ+मि)	ष्ठीवामि,ष्ठीवावः,ष्ठीवामः।
चमु	खाना	(चाम्+आ+मि)	चामामि,चामावः,चामामः।
अत	नित्यचलना	(अत्+आ+मि)	अतामि, अतावः, अतामः।

---

१ हर एक धातुके तीन प्रकारसे रूप होते हैं पहिले अध्यायोंमें जो रूप बतलाये गये हैं वे "प्रथमपुरुष" के रूप कहलाते हैं। इस अध्यायके प्रथम पाठमें जो रूप बतलाये जाते हैं उनको "उत्तम पुरुष" के समझना और इसी अध्यायके पांचवें पाठमें जो कहेंगे वे "मध्यम-पुरुष" के हैं। कर्ता यदि 'अस्मद्' शब्द रहेगा तो उत्तमपुरुषके 'युष्मद्' रहेगा तो मध्यम-पुरुष के और इन दोनोंसे भिन्न कोई रहेगा तो प्रथम पुरुषके रूप वाक्यमें रक्खे जायेंगे इसलिये क्रियाके रूपोंको अच्छी तरह ध्यानमें रखना आवश्यक है। 'धात्वर्थ' में दिये गये 'प्रत्यय' के 'अ+ति' के स्थानमें 'आ+मि', 'अ+तः' के स्थानमें 'आ+वः' और 'अ+अंति' के स्थानमें 'आ+मः' समझना चाहिये और धातुका रूप जैसा उसमें (प्रत्यय) लिखा है वैसाका वैसा ही रखना चाहिये जैसे—ध्यै (ध्यान करना) धातुको 'प्रत्यय' में 'ध्याय्+अ+ति', ऐसा लिखा है उसको यहां (उत्तम पुरुषमें) ध्याय्+आ+मि समझकर ध्यायामि ऐसा रूप समझना चाहिये। इसी प्रकार ध्यायावः, ध्यायामः आदि समस्त धातुओंके रूप समझना।

धातु	अ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रुह	चढना	(रोह्+अ+मि)	रोहामि,	रोहावः,	रोहामः।
त्रुट	टूटना	(त्रुट्+अ+मि)	त्रुटामि,	त्रुटावः,	त्रुटामः।
सृजी	बनाना	(सृज्+अ+मि)	सृजामि,	सृजावः,	सृजामः।
मृश	विचारना	(मृश्+अ+मि)	मृशामि,	मृशावः,	मृशामः।
शंस	चाहना	(शंस्+अ+मि)	शंसामि,	शंसावः,	शंसामः।
शिघि	सूंघना	(शिंघ्+अ+मि)	शिंघामि,	शिंघावः,	शिंघामः।
तक	हसना	(तक्+अ+मि)	तकामि,	तकावः,	तकामः।
गुजि	गूंजना	(गुंज्+अ+मि)	गुंजामि,	गुंजावः,	गुंजामः।
रट	रटना	(रट्+अ+मि)	रटामि,	रटावः	रटामः।
नट	नांचना	(नट्+अ+मि)	नटामि,	नटावः	नटामः।
लुठि	आलस्यकरना	(लुंठ्+अ+मि)	लुंठामि,	लुंठावः	लुंठामः।
मडि	भूषित करना	(मंड्+अ+मि)	मंडामि,	मंडावः	मंडामः।
मुडि	मूंडना	(मुंड्+अ+मि)	मुंडामि,	मुंडावः	मुंडामः।
लुटि	लूटना	(लुंट्+अ+मि)	लुंटामि,	लुंटावः,	लुंटामः।
जप	जपना	(जप्+अ+मि)	जपामि,	जपावः,	जपामः।
षच	इकट्ठाहोना	(षच्+अ+मि)	षचामि,	षचावः,	षचामः।
यभौ	स्त्रीसंगकरना	(यभ्+अ+मि)	यभामि,	यभावः,	यभामः।
अण	अस्पष्टशब्दकरना	(अण्+अ+मि)	अणामि,	अणावः,	अणामः।
रण	,,	(रण्+अ+मि)	रणामि,	रणावः,	रणामः।
क्वण	,,	(क्वण्+अ+मि)	क्वणामि,	क्वणावः,	क्वणामः।
कण	,,	(कण्+अ+मि)	कणामि,	कणावः,	कणामः।
कील	बांधना	(कील्+अ+मि)	कीलामि,	कीलावः,	कीलामः।
मील	पलकमारना	(मील्+अ+मि)	मीलामि,	मीलावः,	मीलामः।
फल	फलना	(फल्+अ+मि)	फलामि,	फलावः,	फलामः।
स्खल	विचलितहोना	(स्खल्+अ+मि)	स्खलामि,	स्खलावः,	स्खलामः।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
गल	निगलना खाना	(गल्+आ+मि)	गलामि,	गलावः,	गलामः।
चर्व	चबाना	(चर्व्+आ+मि)	चर्वामि,	चर्वावः,	चर्वामः।
लगे	लगनाआसक्तहोना	(लग्+आ+मि)	लगामि,	लगावः,	लगामः।
अण	देना	(अण्+आ+मि)	अणामि,	अणावः,	अणामः।
स्वन	शब्दकरना	(स्वन्+आ+मि)	स्वनामि,	स्वनावः,	स्वनामः।
वमु	उगलनावमनकरना	(वम्+आ+मि)	वमामि,	वमावः,	वमामः।
षद्लृ	दुःखपाना	(सीद्+आ+मि)	सीदामि,	सीदावः,	सीदामः।
बुधञ्	जानना	(बोध्+आ+मि)	बोधामि,	बोधावः,	बोधामः।
चिती	विचारनाचौकना	(चेत्+आ+मि)	चेतामि,	चेतावः,	चेतामः।
श्चुतिर्	चूना, झरना	(च्योत्+आ+मि)	च्योतामि,	च्योतावः,	च्योतामः
इदि	महाऐश्वर्यकोपाना	(इंद्+आ+मि)	इंदामि,	इंदावः,	इंदामः।
वल्ग	कूदना	(वल्ग्+आ+मि)	वल्गामि,	वल्गावः,	वल्गामः।
अञ्चु	व्याप्तकरना	(अञ्च्+आ+मि)	अञ्चामि,	अञ्चावः,	अञ्चामः।
मूष	चोरी करना	(मूष्+आ+मि)	मूषामि,	मूषावः,	मूषामः।
घृषु	संघर्षणकरना	(घर्ष्+आ+मि)	घर्षामि,	घर्षावः,	घर्षामः।
कृषौ	जोतना	(कर्ष्+आ+मि)	कर्षामि,	कर्षावः,	कर्षामः।
शश	कूदकरचलना	(शश्+आ+मि)	शशामि,	शशावः,	शशामः।
गुंफ	गूंथना	(गुंफ्+आ+मि)	गुंफामि,	गुंफावः,	गुंफामः।
ब्रुड	डूबना	(ब्रुड्+आ+मि)	ब्रुडामि,	ब्रुडावः,	ब्रुडामः।
सृप	रेंगना	(सर्प्+आ+मि)	सर्पामि,	सर्पावः,	सर्पामः।
ह्वेञ्	बुलाना	(ह्वय्+आ+मि)	ह्वयामि,	ह्वयावः,	ह्वयामः।

द्वितीय पाठ।

अस्मद्शब्द—आत्मनेपदी धातु।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ अहं	सरयू	ईक्षे (१)	मैं	सरयूको	देखता हूं।
अहं	बुद्धिमतः	कत्थे।	मैं	बुद्धिमानोंकी	प्रशंसा करता हूं।
अहं	भृत्यान्	गर्हे।	मैं	नौकरोंकी	निंदा करता हूं।
२ आवां	अन्नं	ग्रसावहे।	हम दो जने	अन्नको	खाते हैं।
आवां	अध्यापकं	मानावहे।	हम दो जने	अध्यापकको	मानते हैं।
आवां	पुस्तकानि	मयावहे।	हम दो जने	पुस्तकोंको	बदलते हैं।
आवां	मृत्युं	शंकावहे।	हम दोनों	मृत्युकी	शंका करते हैं।
३ वयं	अन्नं	वल्भामहे।	हम सब	अन्नको	खाते हैं।
वयं	वीरान्	श्लाघामहे।	हम	वीरोंकी	प्रशंसा करते हैं।
वयं	सत्यवादिनं	विश्रंभामहे।	हम	सत्यवादीका	विश्वास करते हैं।
वयं	ताम्	स्वजामहे।	हम	उनको	आलिंगन करते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
अहं	सरयू	ईक्षामि।	अहं	सरयूं	ईक्षे।
अहं	शिशुं	आद्रियते।	अहं	शिशुं	आद्रिये।
अहं	औषधं	स्वादावहे।	अहं	औषधं	स्वादे।
आवां		शिक्षावः।	आवां		शिक्षावहे।
आवां		वेपे।	आवां		वेपावहे।
वयं	खाद्यं	वल्भामः।	वयं	खाद्यं	वल्भामहे।
वयं		दीक्षामः।	वयं		दीक्षामहे।

१—धात्वर्थमें दिये गये प्रत्यय 'अ+ते, अ+एते, अ+न्ते' के स्थानमें क्रमसे 'अ+ए. आ+वहे, आ+महे' समझना चाहिये। जैसे ईक्ष्+अ+ते आदिके स्थानमें 'ईक्ष्+अ+ए आदि करनेसे ईक्षे, ईक्षावहे, ईक्षामहे रूप होते हैं।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

तुदे, खजावहे, ईहामहे, यसामहे, मानावहे, सेवावहे, स्मये, यतावहे, भाषे, ईजावहे, गाहामहे, वपामहे, याचे, भजामहे, लुंपावहे, कत्थामहे।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गार्द्धि	पानेकी इच्छाकरना	(गार्द्ध्+अ+ए[1])	गार्द्धे,	गार्द्धावहे,	गार्द्धामहे।
बाधृङ्	रोकना, दुःखदेना	(बाध्+अ+ए)	बाधे,	बाधावहे,	बाधामहे।
नाथृङ्	मांगना	(नाथ्+अ+ए)	नाथे,	नाथावहे,	नाथामहे।
दधे	धारणकरना	(दध्+अ+ए)	दधे,	दधावहे,	दधामहे।
वदिङ्	स्तुति, नमस्कारकरना	(वंद्+अ+ए)	वंदे,	वंदावहे,	वंदामहे।
स्पदिङ्	हिलना	(स्पंद्+अ+ए)	स्पंदे,	स्पंदावहे,	स्पंदामहे।
ददे	देना	(दद्+अ+ए)	ददे,	ददावहे,	ददामहे।
ह्लादीङ्	सुखीहोना	(ह्लाद्+अ+ए)	ह्लादे,	ह्लादावहे,	ह्लादामहे।
यतीङ्	यत्नकरना	(यत्+अ+ए)	यते,	यतावहे,	यतामहे।
श्रथिङ्	शिथिल होना	(श्रंथ्+अ+ए)	श्रंथे,	श्रंथावहे,	श्रंथामहे।
लघिङ्	लांघना	(लंघ्+अ+ए)	लंघे,	लंघावहे,	लंघामहे।
चेष्टे	चेष्टाकरना	(चेष्ट+अ+ए)	चेष्टे,	चेष्टावहे,	चेष्टामहे।
चडिङ्	क्रोधकरना	(चंड्+अ+ए)	चंडे,	चंडावहे,	चंडामहे।
गुपीङ्	छिपाना	(गोप्+अ+ए)	गोपे,	गोपावहे,	गोपामहे।
डुवेपृङ्	कांपना	(वेप्+अ+ए)	वेपे,	वेपावहे,	वेपामहे।
कपिङ्	कांपना	(कंप्+अ+ए)	कंपे,	कंपावहे,	कंपामहे।

१—एकवचनमें धातुसे 'अ+ए, द्विवचनमें 'आ+वहे, और बहुवचनमें आ+महे, प्रत्यय समझना चाहिये।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
त्रपूषे	लज्जाकरना	(त्रप्+अ+ए)	त्रपे	त्रपावहे,	त्रपामहे।
जृभिङ्	जंभाई लेना	(जृंभ्+अ+ए)	जृंभे,	जृंभावहे,	जृंभामहे।
पणै	व्यापारकरना	(पण्+अ+ए)	पणे,	पणावहे,	पणामहे।
घूर्णै	घूरना	(घूर्ण्+अ+ए)	घूर्णे,	घूर्णावहे,	घूर्णामहे।
दयै	दयाकरना	(दय्+अ+ए)	दये,	दयावहे,	दयामहे।
स्फायीङ्	बढ़ना	(स्फाय्+अ+ए)	स्फाये,	स्फायावहे,	स्फायामहे।
सेवृङ्	सेवाकरना	(सेव्+अ+ए)	सेवे,	सेवावहे,	सेवामहे।
भ्यसै	भयकरना	(भ्यस्+अ+ए)	भ्यसे,	भ्यसावहे,	भ्यसामहे।
ऊहै	वितर्ककरना	(ऊह्+अ+ए)	ऊहे,	ऊहावहे,	ऊहामहे।
त्रैङ्	रक्षाकरना	(त्राय्+अ+ए)	त्राये,	त्रायावहे,	त्रायामहे।
काशृङ्	दीप्तहोना	(काश्+अ+ए)	काशे,	काशावहे,	काशामहे।

संस्कृत बनाओ—

मैं गांवको जाता हूं। मैं जगत्पूज्य श्रीजिनेंद्र भगवान्को नमस्कार करता हूं। हम दो जने कांपते हैं। मैं धर्म धारण करता हूं। हमलोग वीतराग मुनियोंकी स्तुति करते हैं। मैं दुष्टजीवोंको बाधा देता हूं। मैं स्त्री हूं (वर्ते) इसलिये लज्जा करती हूं। हम लोग डरते हैं इसलिये पाप नहीं करते। मैं एक समाचार कहता हूं। हम दोनों इस बातको जानते हैं। हम दोनों जंभाई लेते हैं। इसको अभी (अधुना एव) लांघता हूं। हम लोग पढ़ते हैं इसलिये सुखी होते हैं। हम लोग तर्क वितर्क करते हैं।

हिंदी बनाओ—

वयं इमां वेदनां कथं (कैसे) सहामहे। अहं अत्र वसामि। प्रातः (सवेरे) शीतपीडिताः वयं कंपामहे। आवां जीवान् दयावहे। वयं आपदं लंघामहे। अहं गतं (व्यतीत) न शोचामि, कृतं न मन्ये, हसन् न जल्पामि। वयं मुनयोऽतो न चंडामहे।

नटौ आवां नटावः। ध्यानिनो वयं जिनं जपामः। अहं पुष्पाणि शिंघामि। वयं सीदामः।

तृतीय पाठ।

उत्तमपुरुष (अस्मद्) के साथ पुलिंग विशेषणका (१) प्रयोग :

१ पंडितः अहं सत्यं वदामि—पंडित मैं सत्य बोलता हूं।

तृष्णार्त्तः अहं तृप्तिं न लभे—तृष्णासे पीडित मैं तृप्तिको नहीं पाता हूं।

जैनः अहं जीवान् न शसामि—जैन मैं जीवोंको नहीं मारता हूं।

क्रुद्धः अहं शिशून् तर्जामि—क्रुद्ध हुआ मैं बच्चोंको ताडना देता हूं।

सेवकः अहं स्वामिनं सेवे—सेवक मैं स्वामीकी सेवा करता हूं।

सभ्याः सभ्यं मां श्लाघंते—सभ्य लोग मुझ सभ्यकी प्रशंसा करते हैं।

शिष्यः गुरुं मां मानते—शिष्य मुझ गुरुका सम्मान करता है।

क्रूराः धर्मज्ञं मां रिषंति—क्रूर लोग मुझ धर्मज्ञ पर क्रोध करते हैं।

२ छात्रौ आवां संस्कृतं शिक्षावहे—विद्यार्थी हम दो जने संस्कृत पढते हैं।

विनीतौ आवां न विवदावहे—नम्र हम दो जने विवाद नही करते हैं।

भक्तौ आवां गुरून् महावः—भक्त हम दो जने गुरुओंको पूजते हैं।

धर्मज्ञौ आवां धर्मं दिशावः—धर्मको जानने वाले हम दो जने धर्मका उपदेश देते हैं।

जनाः विषयिणौ आवां निंदंति—लोग विषयी हम दोजनोंकी निंदा करते हैं।

वृद्धाः नम्रौ आवां कत्थंते—वृद्ध लोग नम्र हम दोंकी प्रशंसा करते हैं।

१—पहिले बताया जा चुका है कि अस्मद् और युष्मद् शब्दके रूप तीनों लिंगोंमें समान होते हैं इसलिये विशेषणका लिंग कर्ताके अनुसार रखना चाहिये अर्थात् अस्मद् या युष्मद् जिस वस्तुके लिये प्रयोगमें लाये गये हैं उसका जो लिंग हो वह ही विशेषणका रखना चाहिये। २—'वि' पूर्वक 'वद' धातुका अर्थ विवाद करना होता है और धातु आत्मनेपदी हो जाती है।

पिता उद्दंडी आवां तर्जति—पिता उद्दंड हम दोको ताड़ना देता है।

३ शिष्टाः वयं वृद्धान् मानामहे—सभ्य हम लोग बड़ोंका संमान करते हैं।

पापभीरवः वयं दानं ददामहे—पापसे डरने वाले हम लोग दान देते हैं।

अपथ्यभोजकाः वयं ज्वरामः—अपथ्य खानेवाले हम लोग ज्वरसे पीड़ित होते हैं।

वैद्याः रुग्णान् अस्मान् तर्जंति—वैद्य लोग रोगी हम लोगोंको डांटते हैं।

दुष्टाः धार्मिकान् अस्मान् अर्दंति—दुष्ट लोग धार्मिक हम लोगोंको दुःख देते हैं।

मुनयः श्रावकान् अस्मान् उपदिशंति—मुनि लोग श्रावक हम लोगोंको उपदेश देते हैं।

चतुर्थ पाठ।

उत्तमपुरुष (अस्मद्) के साथ स्त्रीलिंग विशेषणका प्रयोग।

१ साध्वी अहं जिनं जपामि—साध्वी मैं जिन भगवान्को जपती हूं।

मंदबुद्धिः अहं सूत्राणि रटामि—मंद बुद्धिवाली मैं सूत्रोंको घोखती हूं।

विदुषी अहं शास्त्रविरुद्धं वाक्यं न भणामि—विदुषी मैं शास्त्रसे विरुद्ध नहीं कहती हूं।

पापिनी अहं सीदामि—पापिनी मैं दुख पाती हूं।

शूद्रा ब्राह्मणीं मां स्पृशति—शूद्र स्त्री मुझ ब्राह्मणीको छूती है।

सर्वे पारिव्राजिकां मां कत्थंते—सब लोग मुझ संन्यासिनीकी प्रशंसा करते हैं।

शिष्या पाठिकां मां वंदते—शिष्या मुझ पढ़ाने वालीको वंदना करती है।

२ प्रसन्ने आवां हसावः—प्रसन्न हम दोनों हंसती हैं।

पंडिते आवां प्रथावहे—पंडित हम दो प्रसिद्ध होती हैं।

बुभुक्षिते आवां स्वादु अन्नं ग्रसावहे—भूखी हम दो जनी स्वादिष्ट अन्नको खाती हैं।

ज्ञानिन्यौ आवां संस्कृतं बाधावः—ज्ञानवाली हम दोनों संस्कृत जानती हैं।

दयालव: दीने आवां दयंते—दयालु लोग हम दो दीनाओं पर दया करते हैं।
दुर्जना: सत्यौ आवां बाधंते—दुर्जन लोग हम दो सतीयोंको दुःख देते हैं।
सेवका: दयावत्यौ आवां श्रयंते—सेवक लोग दयावाली हम दोका आश्रय लेते हैं।

३ निराश्रया: वयं सीदाम:—आश्रय हीन हम सब दुःख पाती हैं।
हृष्टा: वयं वल्गाम:—हर्षित हम सब कूदती हैं।
भक्ता: वयं माला: गुंफाम:—भक्त हम सब मालाओंको गूंथती है।
नार्य: वयं त्रपामहे—स्त्रियां हम सब लज्जा करती हैं।
श्राविका: आर्यिका: अस्मान् अर्चंति—श्राविकायें हम साध्वियोंको पूजती हैं।
परिचारिका: स्वामिनी: अस्मान् सेवंते—दासियां हम स्वामिनियोंकी सेवा करती हैं।
निर्दया: अपि वराकी: अस्मान् दयंते—दया रहित लोग भी हम दीनाओं पर दया करते है।

पंचमपाठ।

(मध्यम पुरुष)

युस्मद् शब्द (परस्मैपदी धातु)—(१)

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	त्वं	पुष्पाणि	जिघ्रसि।	तुम	फूलोंको	सूंघते हो।
	त्वं	पुस्तकानि	मूषसि।	तुम	किताबोंको	चुराते हो।

१—पहिले बतला आये हैं कि युस्मद् शब्दके साथ मध्यम पुरुष क्रियाके रूप वाक्यमें रक्खे जाते हैं। प्रथम अध्यायके 'धात्वर्थ' के 'प्रत्यय' में जो प्रत्यय बतलाये हैं उन (अ+ति, अ+त:, अ+अन्ति) के स्थानमें मध्यमपुरुषके रूप बनानेके लिये 'अ+सि, अ+थ:, अ+थ' कर देना चाहिये। जैसे—व्रज (जाना) धातुके प्रथम पुरुषके रूप व्रज+अ+ति व्रजति आदि होते हैं तो मध्यम पुरुषमें उन 'अ+ति आदि प्रत्ययोंके स्थानमें अ+सि' आदि कर देनेसे व्रजसि, व्रजथ:, व्रजथ रूप होते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
त्वं	सर्पान्	कीलसि।	तुम	सांपोंको	कीलते हो
जनाः	त्वां	चेतंति।	लोग	तुमको	याद करते हैं
छात्राः	त्वां	शंसंति।	विद्यार्थी लोग	तुम्हारी	प्रशंसा करते हैं।
२ युवां	चणकान्	चर्वथः।	तुम दो जने	चनोंको	चबाते हो।
युवां	रायः	अणथः।	तुम दो जने	धनको	बांटते हो।
युवां		वमथः।	तुम दो जने	वमन	करते हो।
जनाः	युवां	श्लाघंते।	लोग	तुम दोको	प्रशंसा करते हैं।
दीनाः	युवां	श्रयंते।	दीन लोग	तुम दोका	आश्रय लेते हैं।
३ यूयं	कदलीः	चामथ।	तुम लोग	केलाओंको	खाते हो।
यूयं		इंदथ।	तुम लोग	ऐश्वर्यको	पाते हो।
यूयं		ब्रुडथ।	तुम लोग		डूबते हो।
यूयं		मीलथ।	तुम लोग		पलक मारते हो।
सर्वे	युष्मान्	बोधंति।	सब लोग	तुमको	जानते हैं।
के	युष्मान्	निंदंति।	कौन लोग	तुम्हारी	निंदा करते हैं।

अशुद्ध			शुद्ध		
त्वं	मातरं	चेतथः।	त्वं	मातरं	चेतसि।
युवां	चेत्रं	कर्षथ।	युवां	चेत्रं	कर्षथः।
यूयं	अश्वं	आरोहसि।	यूयं	अश्वं	आरोहथ।
त्वं		स्खलामि।	त्वं		स्खलसि।
युवां	ग्रंथान्	मूषावः।	युवां	ग्रंथान्	मूषथः।
यूयं	घटान्	सृजामः।	यूयं	घटान्	सृजथ।
त्वं	शिरांसि	मुंडति।	त्वं	शिरांसि	मुंडसि।
युवां	ग्रामं	सेधतः।	युवां	ग्रामं	सेधथः।
यूयं		भवंति।	यूयं		भवथ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(क) सीदथ, बोधसि, भणथः, वल्गसि, अयसि, लिखथः, खादसि, पृच्छथ, वहसि, त्यजसि, मुंचथः, इच्छथ, दशसि, कृंतथ, अटथः, चुंबसि।

(ख) त्वं, युवां, यूयं, त्वां युवां, युष्मान्।

हिंदी बनाओ—

यदि त्वं जलं न मुंचसि तर्हि (तो) वज्रं किं क्षिपसि। त्वं एवं गर्वितो भवसि यत् (जो) वृद्धान् अपि क्रामसि। त्वं मां किमर्थं पृच्छसि अहं किमपि न बोधामि। युवां किं प्रष्टुं (पूछनेके लिये) इच्छथः ?। एकाकिनीं मां मुक्त्वा कुत्र त्वं व्रजसि। हा ! नवपल्लव-निर्मिता शय्या अपि त्वां दहति। यूयं किमर्थं अत्र आगच्छथ। त्वं कामपि विद्यां बोधसि किं ?। अहं त्वां वदामि। कापुरुषा एव भ्यसंते न धीराः। हा ! निर्दयस्त्वं मां किं प्रहरसि। गात्राणि अमूनि न वहंति सचेतनत्वं, श्रोत्रं (कान) स्फुटाक्षरपदां (स्पष्ट अक्षर और पदवाली) न गिरं शृणोति (सुनता है)। कथं निमीलितमिदं सहसा (अचानक) एव चक्षुरिति (इस तरह) अमी असवः (प्राण) मां त्यजंति। त्वं चक्षुरुन्मील्य (बंदकर) कां स्मिरं चेतसि। त्वं रक्षकोऽपि इमं जनं कथं (कैसे) न रक्षसि। तद् (इसलिये) अहं गृहं गत्वा (जाकर) गृहिणीमाहूय (बुलाकर) संगीतकमनुतिष्ठामि(१)। इदं गृहं प्रविशामि। त्वं किमकारणं क्रंदसि ?। तत् मलयपर्वतमेव आवां गच्छावः। यूयं किं अनुतिष्ठथ। युवां पुनः पुनः तद् एव वदथः। यूयं कथं न धनं भणथ। वयं किं अनुतिष्ठामः क्व (कहां) व्रजामः सर्वं इदं जगत् शून्यं इव (तरह) लगति। यदि यूयं कमपि उपायं बोधथ तर्हि

१—अनु-स्था (तिष्ठ) धातुका अर्थ 'करना' होता है।

किं न मां उपदिशथ। हा मंदभाग्योऽहं एवं म्रिये। युवां किं पठथः। यूयं वृथा एव दीनान् जंतून् कीलघः। भारस्तथा मां न बाधते यथा 'बाधति' बाधते।

संस्कृत बनाओ—

तुम दुःखसे जीवन बिताते हो। क्यों बार बार आंखे मीचते हो। सांप तुमको काटता है। तुम दोनों मंत्रोंको जानते हो। तुम लोग धर्मको करते हो। तुम क्या सीखते हो। क्या तुम दूध पीते हो। हमे पानी भी नहीं मिलता है। तुमको कौन रोकता है। तुम दोनों सबका विश्वास करते हो। हम सबका विश्वास नहीं करते हैं। तुम आलस्य करते हो। मैं प्रतिदिन (प्रतिदिनं) एक पत्र लिखता हूं। तुम लोग पंचमंत्रको जपते हो यह जान कर (बुद्ध्वा) मैं आनंदित होता हूं। तुम क्या काम करते हो। हम जैनेंद्र पढ़ते हैं। तुम लोग दुःख पाते हो। क्या तुम लोग नट हो जो (यत्) नांचते हो। तुम लोग क्यों कूदते हो।

षष्ठ पाठ।

युष्मद् (शब्द) आत्मनेपदी(१) धातु।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	त्वं		वेपसे।	तुम		कांपते हो।
	त्वं		त्रपसे।	तुम		लज्जित होते हो।
	त्वं		भ्यससे।	तुम		डरते हो।

१—आत्मनेपदी धातुओंके मध्यमपुरुषके रूप बनानेके लिये धात्वर्थमें दिये हुये प्रत्यय 'अ+ते, अ+एते, अ+न्ते' के स्थानमें क्रमसे 'अ+से, अ+एथे, अ+ध्वे' कर देना चाहिये जैसे—वेप्+अ+ते आदिके स्थानमें 'वेप्+अ+से' आदि करनेसे वेपसे, वेपेथे, वेपध्वे बनते हैं'।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
जना:	त्वां	वंदंते।	लोग	तुम्हारी	वंदना करते हैं।
राजा	त्वां	त्रायते।	राजा	तुम्हारी	रक्षा करता है।
सेवक:	त्वां	सेवते।	नौकर	तुम्हारी	सेवा करता है।
२ युवां		चंडेथे।	दो जने		करते हो।
युवां		कंपेथे।	तुम दो जने		कांपते हो।
युवां		श्रंथेथे।	तुम दो जने		शिथिल होते हो।
ते	युवां	दयंते।	वे लोग	तुमपर	दया करते हैं।
सिंह:	युवां	घूर्णते।	सिंह	तुम्हारी तरफ	घूरता है।
३ यूयं		ह्लादध्वे।	तुम लोग		प्रसन्न होते हो।
यूयं	धनं	दधध्वे।	तुम लोग	धनको	रखते हो।
यूयं	विपद:	लंघध्वे।	तुम लोग	विपत्तियोंको	लांघते हो।
यूयं		ऊहध्वे।	तुम लोग		तर्कवितर्क करते हो।
छात्रा:	युष्मान्	श्लाघंते।	छात्र लोग	तुम्हारी	प्रशंसा करते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
त्वं	वृथा	चेष्टे।	त्वं	वृथा	चेष्टसे।
त्वं	आत्मानं	शंकते।	त्वं	आत्मानं	शंकसे।
त्वं		वेपसि।	त्वं		वेपसे।
युवां	दीनान्	त्रायावहे।	युवां	दीनान्	त्रायेथे।
युवां		प्रथेते।	युवां		प्रथेथे।
युवां	दुर्जनान्	गर्हेथ:।	युवां	दुर्जनान्	गर्हेथे।
यूयं	अपराधिन:	तिजामहे।	यूयं	अपराधिन:	तिजध्वे।
यूयं		दीक्षंते।	यूयं		दीक्षध्वे।
यूयं		ईहथ।	यूयं		ईहध्वे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

ईक्षध्वे, ईषसे, एधेथे, कचसे, क्षोभसे, गाहध्वे, द्योतेथे, मानध्वे,

रोचसे, वल्भध्वे, व्यथसे, शोभध्वे, भ्रंसेथे, म्रियध्वे, उद्विजसे, भजध्वे ।

संस्कृत बनाओ—(क्रिया आत्मनेपदी हो)

तुम लोग कौनसी नदी देखते हो। तुम दोनों सज्जनोंकी निंदा करते हो। तुम लोग किसवास्ते (किमर्थं) क्षोभित होते हो। तुम दोनों कौनसे शास्त्रको सीखते हो। तुम साधुओंकी पूजा करते हो। क्यों वृथा पीडित होते हो। क्या शंका करते हो। तुम चंद्रके समान शोभते हो। तुम किससे विवाह करते हो। क्यों मुस्कराते हो। तुम लोग क्यों विश्वास नहीं करते। लड़कोंका तुम दोनों आदर करते हो। क्या औषधि चाखते हो ?

सप्तम पाठ।

युष्मद् शब्दके साथ विशेषणका प्रयोग।

पुलिंग	स्त्रीलिंग
१ पंडितः त्वं सत्यं वदसि।	साध्वी त्वं जिनं जपसि।
तृष्णार्तः त्वं तृप्तिं न लभसे।	मंदबुद्धिः त्वं सूत्राणि रटसि।
जैनः त्वं जीवान् न शमसि।	विदुषी त्वं शास्त्रविरुद्धं न भणसि।
क्रुद्धः त्वं शिशून् तर्जसि।	पापिनी त्वं मोदसि।
सेवकः त्वं स्वामिनं सेवसे।	शूद्रा ब्राह्मणीं त्वां स्पृशति।
सभ्याः सभ्यं त्वां श्लाघंते।	सर्वे संन्यासिनीं त्वां कत्थंते।
शिष्यः गुरुं त्वां मानते।	शिष्या पाठिकां त्वां वंदते।
क्रूराः धर्मज्ञं त्वां द्विषंति।	क्रूराः धर्मज्ञां त्वां द्विषंति।
२ छात्रौ युवां संस्कृतं शिक्षेथे।	प्रसन्ने युवां तकथः।
विनीतौ युवां न विवदेथे।	पंडिते युवां प्रथेथे।
भक्तौ युवां गुरून् महथः।	बुभुक्षिते युवां अन्नं ग्रसेथे।
धर्मज्ञौ युवां धर्मं दिशथः।	ज्ञानिन्यौ युवां संस्कृतं बोधथः।

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
जनाः विषयिणौ युवां निंदंति।	दयालवः दीने युवां दयंते।
वृद्धाः नम्रौ युवां कत्थंते।	दुर्जनाः सत्यौ युवां बाधंते।
पिता उद्दंडौ युवां तर्जति।	सेवकाः दयावत्यौ युवां सेवंते।
३ शिष्टाः यूयं वृद्धान् मानध्वे।	निराश्रयाः यूयं सीदथ।
पापभीरवः यूयं दानं ददध्वे।	हृष्टाः यूयं वल्गथ।
अपथ्यभोजकाः यूयं ज्वरथ।	भक्ताः यूयं मालाः गुंफथ।
वैद्याः कृपणान् युष्मान् तर्जंति।	नार्यः यूयं त्रपध्वे।
दुष्टाः धार्मिकान् युष्मान् अर्दंति।	श्राविकाः आर्यिकाः युष्मान् अर्चंति।
मुनयः श्रावकान् युष्मान् दिशंति।	परिचारिकाः स्वामिनीः युष्मान् सेवंते।

अष्टम पाठ।

साहित्य परिचय

(उत्तमादि पुरुष और क्रियाका संबंध आत्मनेपद और परस्मैपदका व्यवहार, लिंग और वचनके अनुसार विशेषणका प्रयोग, तथा विसर्ग संधिके नियम अच्छी तरह ध्यानमें रखने चाहिये)

प्रश्नमालाका उत्तर लिखो—

निरपराधिनी अंजनाको सासु और श्वसुर छोडते हैं। पवनंजय इस बातको जानकर बहुत दुःखित होते हैं, अंजनाको ढूंढनेके (अन्वे इ[1]) लिये वे जंगल २ फिरते हैं। अंजनाने एक पुत्र जना है (सूतवती) वह बड़ा प्रतापी है मामा (मातुल) उसे पालता है।

---

१ अनु-पूर्वक 'इंधे' (जाना) धातुका अर्थ ढूंढना होता है।

प्रश्नमाला—

किमर्थं पवनंजयो व्यथते। कीदृशीं (कैसी) अंजनां कस्त्य-जति। क: कां अन्वीषते। का कं सूतवती। कथंभूत: (कैसा) स पुत्र:। कस्तं त्रायते ?

प्रश्नोत्तर बनाकर लिखो—

नयनाभिरामो लक्ष्मीसमन्वितसुंदरांग: कुमार: पवनंजय: शनै: शनै: (धीरे २) चंद्र इव एधते। राजपुत्र: सम्यग् (अच्छी तरह) गुरून् सेवते। सर्वा: विद्या उपविद्याश्च पठति। विवाहयोग्य: स सुंदरांगीं राजकन्यामुद्वहते। तं कुमारं राजा युवराजपदं ददते। पुनर्नृप: कदाचित् (किसी समय) पतंतीं तडितं दृष्ट्वा चेतति "एवं एव समस्तं जीवितयौवनादि अनित्यं तथापि (तो भी) मूढोऽयं जनो न बोधति। तथा दुःखप्रदान् दोषान् न स्मरति"।

संस्कृत बनाओ—

प्रात: कालमें (प्रात:) राजा सम्पूर्ण नित्यक्रियायोंको करके (अनुष्ठाय) सिंहासनपर बैठता है छोटेछोटे बहुतसे राजा लोग उसको नमस्कार करते हैं। इसके बाद (अथ) एक द्वारपाल आकर (आगत्य) कहता है कि—एक मत्त हाथी नगरके लोगोंको दुःख दे रहा है। वह आदमियोंको इस तरह फेंकता है (आस्फालयति) कि वे विचारे गिरते हुये ही प्राण छोड़ देते हैं, इस बातको सुनकर (आकर्ण्य) राजा क्रुद्ध होता है।

प्रश्नमाला—

कीदृशो राजा ? के कं प्रणमंति। क: कं वदति। कथंभूतो गज:। क: कं अर्दति। क: कान् किंविधं (किस तरह) आस्फा-लयति। क: किं श्रुत्वा चंडते।

हिंदी भाषामें अनुवाद करो।

मुनि: राजानं पूर्वभवपरंपरां वदति। अपरा उपस्थिता सभा

ध्यानपूर्वकं शृणोति (सुनती है) । तृतीयद्वीपस्थितः सुगंधिनामा देशो वर्तते। स (१) देशः शीतोदानदीतटं अधिवसति। यत्र (जहां) कुसुमानि स्वकीयं सुगंधं विकिरंति, नित्यप्रमोदिन्यः प्रजाः ह्लादंते, तथा अर्थं धर्मार्थं, कामं संतानवृद्ध्यर्थं सेवंते न व्यसनार्थं। पथिका अध्वानं (मार्गं) गृहप्रांगणसंनिभं। (घरके आंगनके समान) बोधंति। स जनाभिलाषितं वस्तु शश्वत् (हमेशा) संपादयन् कल्पपादपमंडितां महीं जेतु (जीतने लिये) मिच्छति। यत्र विद्युतः चंचलाः, न संपदः प्रावृडभ्राणि, (वर्षाऋतुके मेघ) कृष्णानि न जनचरितानि।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर किसी नगर या देशका वर्णन करो—

प्राकारः, (शहरका कोट) बहुभूमिसहिताः, प्रासादाः, कुसुमानि, काशंते, कूजंति, चंचललोचनाः, आनंदं, भ्रमरसमूहः, जीवितेश्वरं, वधूः, जनाकुलः, पृच्छंति आरामाः (बगीचे), भृत्याः, जिनालयाः, कामिनः, अनुनयंति, वर्तते, विभूतिः, धनिकाः, शोभते, मेघा इव, क्रामति,

इस गद्यकी हिंदीको इससे मिलाओ—

इषुकारनामा सुरसेव्यमानुदक्षिणदिग्व्यापी पर्वतो वर्तते। तत्पूर्वभरतं विभूषन् अलकाभिधो देशो वर्तते। यो देशः कमलाननां मधुकरीनयनास्तनुबाहुलता हृदयहारिणीस्तरुणीः, व्यामनिखिलक्षितितलान् धान्यचयान् च दधते। यत्रत्या विविधसस्यसमुदायपरिपूर्णा भूमिर्जनमनांसि लुभति। यत्र सर्वदा जनाः सुखिनः, वृक्षपंक्तयः सकुसुमाः, कुसुमानि फलवंति, फलानि मधुराणि। तत्र किंचिदपि तत् वस्तु न, यत् जनतामुदं न वितरति। तत्र त्रिभुवन-

---

१ एतद् और तद् शब्दके प्रथमाके एक वचनके विसर्ग व्यंजन बादमें रहनेसे नष्ट हो जाते हैं।

प्रसिद्धा बहुधनसम्भृद्धा प्रचुरपुण्यजनपूर्णा कोशलानाम्नी नगरी वर्तते।

हिंदी बनाओ—

देवताओंसे सेवनीय शिखरोंवाला दक्षिण दिशामें व्याप्त इषुकार नामक पर्वत है। उसके पूर्वभरतको शोभित करता हुआ अलका नामक देश है। जो देश कमलके समान मुखवाली, भ्रमरोंके समान आंखवाली पतलीबाहुवाली हृदयको हरण करनेवाली युवतियोंको और तमाम पृथ्वीतलको व्याप्त करनेवाले धान्यके ढेरोंको धारण करता है। जिस देशकी (जहांकी) नाना प्रकारके धान्य समूहसे परिपूर्ण भूमि लोगोंके मनोंको मोहित करती है। जहां लोग हमेशा सुखी हैं। वृक्षोंकी पंक्ति फूलवाली, फूल फलवाले, और फल मधुर हैं। वहां कोई भी वह चीज नहीं, जो कि लोगोंको हर्ष न करती हो। उस देशमें तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध बहुत धनसे धनवाली, महान् पुण्यवाले जनोंसे भरी हुई कोशला नामकी नगरी है।

शुद्ध करो—

गुण एव पुरुषं गुरुतां नयंते। स महतीं उपवासपूर्वं जिनपूजां अनुतिष्ठति। पौरा जनः महोत्सवः चरंति। अत अहमपि बंधुत्वं इच्छति। अखिलोऽपि भीरुः शूरं भवंति। लक्ष्मीः नक्तं तुषाररश्मि भजते, दिवा (दिनमें) सरोजं गच्छति इति चपलां अपि तदीयं तनुं मुंचति। स सर्वगुणसंपन्नः अतः खलस्वभावो द्विषंतोऽपि तां दृष्ट्वा मोदते।

अष्टम अध्याय।

तुदादि और भ्वादि गणकी धातुओंका भूतकाल वाची शब्दके साथ प्रयोग

(१) स्म—योग

प्रथम पाठ।

योद्धार: स्वजीवितानि रक्षंति स्म।	योद्धाओंने अपने जीवनकी रक्षा की।
तत्कटक: प्रतिदिनं वर्द्धते स्म।	उसकी सेना दिनपर दिन बढ़ने लगी।
पर्वतीया: तं सेवंते स्म।	भिल्ललोग उसको सेवते थे
ब्रह्मचारिण: दीक्षंते स्म।	ब्रह्मचारियोंने दीक्षा ली।
दीपौ शोभेते स्म।	दो दीपक शोभते थे।
चंद्र: काशते स्म।	चंद्रमा चमकता था।
रजका: वस्त्राणि रजंति (न्ते) स्म।	रंगरेज लोग कपड़े रंगते थे।
मेघा: समुद्रं आश्रयंते स्म।	मेघोंने समुद्रका आश्रयण किया।
भृत्यौ वृक्षान् लुंपत: (पेते) स्म।	दो सेवक वृक्षोंको काटते थे।

संस्कृत बनाओ—

(क) भव्यलोग महावीर स्वामीके पास गये। राजा अपने पुत्रको देखकर हर्षित हुआ। दो किसानोंने दो गड्डे खोदे थे। मुनींद्र इस तरह (एवं) उपदेश देते थे। राजपुत्रको असुरने डाटा। किस रोगीने औषध नहीं खाई थी। उस देवने राजकुमारको कहा। शीतपीडित हम दो जने कांपे थे। तुम दोनों क्यों हंसते थे। धीरे २ पुत्र बढ़ने लगा।

१—पहिले बतलाये गये क्रियाके रूपोंके साथ 'स्म' लगादेनेसे वर्तमान कालकी जगह भूतकालका अर्थ होजाता है। जैसे—'गच्छति' (जाता है) गम्लृ धातुका रूप है उसके साथ 'स्म' लगादेनेसे गच्छति स्म (गया) ऐसा हो जायगा।

वीर लोगोंने भयको छोड़ दिया। तुमने उसे क्यों नहीं छोड़ा। जयवर्मा इस अकारणबंधु कुमारको पाकर (लब्ध्वा) समहोत्सव नगरमें प्रवेश करता हुआ। संपूर्ण फूल श्वेत वर्ण हो गये। पिताने पुत्रका आलिंगन किया। असहाय लोगोंने धनिकोंका सहारा लिया। राजाने अपने पुत्रसे पूंछा। उसने कहा हम कहीं (कुत्रापि) नही गये थे। गुणी लोग वीर आदमियोंकी प्रशंसा करते थे। विद्वान् पंडितोंने शास्त्रों की आलोचना की। कौन २ देश प्रसिद्ध हुये।

(ख) राजाने कहा—मैंने पूर्व भवोंको जाना तथापि मन संशयको प्राप्त होता है,, मुनिने इस बातको सुनकर (आकर्ण्य) उपदेश दिया। राजाने उनकी पूजाकी और व्रतोंको धारण किया।

(ग) वनमाली विपुलाचलको सब फलफूलोंसे सहित देखकर हर्षित हुआ और राजगृही नगरीको आया वहां (तत्र) उसने रत्नखचितसिंहासनपर बैठे हुये शांतमूर्ति श्रीश्रेणिकको देखा, सेवक लोग चरणोंकी सेवा करते थे विद्वान् मंत्रिगण गूढ विषयोंका विचार करते थे अनेक छोटे २ राजा उसको प्रणाम करते थे।

(घ) श्रीवर्माने पितृदत्त राज्य पाया। साम्राज्याभिषक्त नूतन राजाकी स्वयं लक्ष्मी सेवा करने लगी। सरस्वती भी उसकी वंदना करती थी। पूर्व राजाओंसे भुक्त भी पृथ्वी फल देने लगी।

(ङ) पिताके शोकसे मुक्त हुआ श्रीवर्मा पृथ्वीको जीतनेके लिये (साधयितुं) चला। मौलवल आगे (पुरः) अनाटविक पीछे (पश्चात्) और सामंतवल बीचमें (मध्ये) चलता था।

तुरंगमोत्थ सेनारजने दिशाओंको वेष्टित किया। ध्वजाओंने सूर्यको आच्छादित किया चलनेके समय होनेवाले (गमनकालसमुद्भव) मत्तमतंग जलने धूलिको सांचा। प्रस्थानसमयभावी पटहशब्दने पर्वततट और शत्रु चित्तकोव्यथित किया। नगर वासियोंने उसके दर्शन किये। शत्रु लोगोंने लड़के और स्त्रियोंको छोड़ (मुक्त्वा) अपनी रक्षाके लिये (आत्मरक्षार्थं) दिशाओंका आ ्र लिया।

हिंदी बनाओ—

सिंहचंद्रनामा मुनिरेकदा (एकसमय) राज्ञीं वदतिस्म किं त्वं न चेतसि? यद् दशति स्म यदा (जब) एकः सर्पो मदीयं (मेरे) पितरं, तदा (तब) एव म्रियते स्म सः। ततो (उसके बाद) भवतिस्म स सल्लकीवनस्थो गजः। स भूवपूर्वो म ाः पिता एव तपस्वरंतं मां हंतुं (मारनेके लिये) आगच्छतिस्म एकदा। तदा अहं तं गजं उपदिशामिस्म यत् पूर्वं (पहिले) त्वं मदीयः पूज्यः पिता वर्ततेस्म अहं च सिंहचंद्रनामा त्वदीयः (तुम्हारा) पुत्रः। अद्य (आज) पुनस्त्वं मां हंतुं ईहसे इति (यह) महद् आश्चर्यं। इति श्रुत्वा (सुनकर) गजो निजपूर्वभवं स्मरति स्म तथा पुनः पुनश्च क्रंदति स्म। तं तथाभूतं दृष्ट्वा गदामि स्म यत् यदि त्वं धर्मं अनुतिष्ठसि तदा कल्याणं, न अन्यथा। अतः पंचपापनि त्यक्त्वा [छोड़कर] श्रावकव्रतानि आचरितुं (धारण करनेके लिय,) र्हसि। इदं श्रुत्वा स तानि दधते स्म।

द्वितीय पाठ।

(१) क्तप्रत्यय

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
राजा	जीवितः।	राजा	जीया।
दरिद्रः	कठितः।	दरिद्रने	कष्टसे जीवन बिताया।
मूर्खः	कर्वितः।	मूर्खने	घमंड किया।
पक्षिणः	कूजिताः।	पक्षियोंने	शब्द किया।
बालाः	क्रीडिताः।	लड़के	खेले।
मेघाः	गर्जिताः।	मेघ	।
शिशुः	ज्वरितः।	लड़केको	ज्वर आया।
अग्निः	ज्वलितः।	आग	जली।
विधिः	फलितः।	भाग्य	फला।
छात्रः	श्वसितः।	विद्यार्थीने	श्वास ली।
पुरुषः	ईहितः।	आदमीने	चेष्टाकी।
ब्रह्मचारिणः	दीक्षिताः।	ब्रह्मचारियोंने	दीक्षाली।
विद्वान्	प्रथितः।	विद्वान्	प्रसिद्ध हुआ।
ग्रामः	प्रसितः।	गांव	बढा।
राजपुत्रः	एधितः।	राजपुत्र	बढा।
अहं	व्यथितः।	मैं	उद्विग्न हुआ।
लोकाः	षचिताः।	लोग	इकट्ठे हुये।
त्वं	स्खलितः	तुम	विचलित हुये।

१ अकर्मक और 'गमन' (जाना) अर्थवाली धातुओंसे भूत (बीता हुआ) कालमें 'त' (क्त) प्रत्यय होता है। और उससे पहिले धातुके अंतमें इ (इट्) लग जाता है जैसे जीव (जीना) धातुसे त (क्त) प्रत्यय कियातो जीव् त हुआ अब 'त' से पहिले धातुके अंतमें 'इ' लगातो जीव्+इ+त=जीवित हुआ। क्त प्रत्ययांत शब्द तीनों लिंग होते हैं: स्त्रीलिंगमें आकारांत हो जाते हैं।

के	चलिताः।	कौन लोग	कूदे।
जनः	त्रुडितः।	आदमी	डूब गया।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

मुदितः, व्यथितौ, वेपिताः, शिचितः, चलिताः, स्पंदितः, ईषितौ, अजितौ, नंदिताः, प्रकाशिताः। स्पंदितः, आह्लादितः, श्रंथितौ, लंघितः, चंडिताः, कंपितौ, त्रपिताः, जृंभितौ, घूर्णितः, श्वसिताः।

तृतीय पाठ।

(१) अनिट्-क्त-प्रत्यय

कर्ता		क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
बालः		स्मितः।	लड़का	मुस्काराया।
रामः	राजा	भूतः।	राम	राजा हुआ।
सर्पाः		सृताः।	सांप	सरके।
भिक्षुकः		मृतः।	भिखारी	मरगया।
अहं	ग्रामं	(२) गतः।	मैं	गांवको गया।
बालकः		पीनः।	लड़का	बढ़ा।
त्वं	प्रतिज्ञां	(३) क्रांतः।	तुमने	प्रतिज्ञाको उल्लंघनकिया।
वीराः	अश्वान्	(४) आरूढाः।	वीरलोग	घोड़ोंपर चढ़े।
विवादः		स्फीतः।	विवाद	बढा।
भवान्	कन्यां	आश्लिष्टः।	आपन	कन्याका आलिंगन किया।

---

१ जिन धातुओंमें 'लृ, औ, ई, और उ' इत् हैं (विशेष लगे हैं) उनसे तथा शीङ् (सोना) को छोड़कर शेष स्वरांत धातुओंसे क्त (त) प्रत्यय होनसे इ (इट) नहीं बीचमें आता। २ हनौ, मनीङ्, रमुङ्, यमौ, गम्लृ, इन धातुओंके अंतके नकार और मकारका 'त' प्रत्यय परे रहते लोपहो जाता है। ३ नकारांत और मकारांत धातुसे क्त प्रत्यय होनेपर नकार और मकारसे पहिले स्वरको दीर्घ होता है जैसे क्रम्—क्रांत। ४—श्लिष, प्र—स्था, आस, रुह् ये धातु यद्यपि सकर्मक हैं तथापि क्त प्रत्यय होता है।

देवदत्तः ग्रामं	प्रस्थितः।	देवदत्त	गांवको गया।
शिष्यः गुरुं	उपासितः।	शिष्यने	गुरुकी उपासनाकी।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भूताः, मृतौ, आरूढौ, उपासितः, क्रांतौ, आश्लिष्टाः, मृतः, स्थितौ, सृताः।

शुद्ध करो—

वानराः वनं गमिताः। के इमे मरिताः। त्वं गुरून् क्रमितः। दैवं फलतं। सर्वे कपोताः तत्र प्रस्थता। सीता प्रतिनिवृतिता। कृषीवलो वृक्षं आरोहितः। कुमारः कन्यां आश्लिषितौ। महान् जनरवो (कोलाहल) भवितः।

चतुर्थ पाठ।

स्त्रीलिंग (१)—क्त प्रत्यय

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
बालिका	आगता।	लड़की	आई।
सा	भूता।	वह	उत्पन्न हुई।
चंद्रिका	प्रकाशिता।	चांदनी	प्रगट हुई।
सेना	धाविता।	सेना	भागी।
निशा	अतीता।	रात्रि	गई।
वधूः	शयिता।	वहू	सोगई।
अमू वृद्धे	उत्थिते।	ये दो बुढ़ियें	उठीं
अहं	चलिता।	मैं	चली।

१ क्त प्रत्ययांत शब्द सर्वदा विशेषण होते हैं इसलिये ये तीनों लिंग होते हैं। इनको स्त्रीलिंग बनानेके लिये अंतके ह्रस्व अकारको दीर्घ आकार कर देना चाहिये

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
मातरः	नंदिताः।	मातायें	आनंदित हुईं।
नद्यः	एधिताः।	नदियां	बढ़ीं।
बाले	मुदिते।	दो लड़कियां	प्रसन्न हुईं।
राजधानी	प्रसिता।	राजधानी	विस्तृत हुई।
पंडिता	मृता।	पंडिता स्त्री	मर गई।
सा	ब्रुडिता।	वह	डूब गई।
अमूः नौकां	आरूढाः।	ये स्त्रियां	नाव पर चढ़ीं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

ब्रुडिताः, हसिता, वर्द्धिता, ईर्षिताः, मुदिता, प्रसिता, प्रथिता।

पंचम पाठ।

नपुंसकलिंग—क्त प्रत्यय

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
फलं	(१) पतितं।	फल	गिरा।
शरीरं	कंपितं।	शरीर	कंपा।
मनः	व्यथितं।	मन	दुखा।
भूषणं	त्रुटितं।	गहना	टूट गया।
अन्नं	(२) पक्वं।	अन्न	पकगया।
आयुः	समाप्तं।	आयु	खतम होगयी।

---

१ पत्लृ (गिरना) धातुमें 'लृ' इत् है इसलिये इ (इट्) बीचमें न आना चाहिये था लेकिन विशेष नियमसे इ (इट्) आता है। २-पच्धातुके बाद क्त प्रत्ययके स्थानमें 'व' और धातुके चकारको ककार हो जाता है।

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
नगरं	शोभितं।	नगर	शोभायुक्त हुआ।
जलं	स्यंदितं।	जल	बह गया।
गृहाणि	प्रथितानि।	घर	प्रसिद्ध हुए।
सर्वं नवीनं	जातं।	सब नया	होगया।

संस्कृत बनाओ—

वह प्रसिद्ध हुआ। नदी जल बढ़ा। शरीर कांपगया लेकिन मन चलित नहीं हुआ। शीघ्रगामी नौकर दौड़े। भोजन पकगया लेकिन खानेवाले नहीं आये। वे नदी पर गईं लेकिन थकी नहीं। रस्सी टूट गई लेकिन काम सिद्ध न हुआ। वे आकुलित हुईं। नगर शोभित हुआ लेकिन प्रशंसित न हुआ।

हिंदी बनाओ—

अद्य (आज) जिनेंद्रदर्शनं जातं, चक्षुः सफलीभूतं, हृदयं भक्तिपूर्णं जातं। राजा विरक्तः। संसारस्वरूपं विचित्रं वर्तते। अंजना वनं वनं भ्रांता। सा हनुद्वीपं गता। तत्र पतिवार्तां श्रुत्वा प्रसन्ना जाता। पवनंजयोऽपि व्यथितः। स स्वप्रियामन्वेष्टुं वनं गतः। राजा हनुद्वीपं चलितः। स धर्मं श्रुत्वा हृष्टः। स्वराजधानीं प्रति आगतः।

शुद्ध करो—

अयं मृतं। सिंहाः गर्जितौ। पत्रं लिखितः। मित्रः मिलितं। लोकपालनामा कश्चित् विरक्तं। चिरमभ्यस्तो मति गुणान् दोषः च श्रयति। मेघा दृष्टा। यूयं ज्ञानध्यानतपोरक्ताः प्रथिता। मुनयः वनं उषितः। छात्रा भ्यसितः।

षष्ठ पाठ।

क्तवतु (१) प्रत्यय

पुंलिंग

अहं पुस्तकं पठितवान्।	मैंने पुस्तक पढ़ी।
आचार्यः कथां कथितवान्।	आचार्यने कथा कही।
भिक्षुकौ भिक्षां याचितवंतौ।	दो भिक्षुकोंने भीख मांगी।
शिशवः कथं क्रंदितवंतः।	लड़के क्यों रोये।
गायकाः गीतवंतः।	गायकोंने गाया।
भ्रमराः पुष्पाणि आस्वादितवंतः।	भ्रमरोंने फूलोंको चाखा
पुत्रविरहः तं (२) तुन्नवान्।	पुत्रके वियोगने उसको पीड़ा दी।
मृगाः पर्वतं श्रितवंतः।	मृगोंने पर्वतका आश्रय लिया।
तरवः पुष्पाणि विकीर्णवंतः।	वृक्षोंने फूल बिखेरे।
अहं जलं पीतवान्।	मैंने पानी पिया।
सेवकौ स्वामिनं सेवितवंतौ।	दो सेवकोंने स्वामिकी सेवाकी।
मेघः क्षेत्राणि उक्षितवान्।	मेघने खेतोंको सींचा।

१—संपूर्ण धातुओंसे भूतकाल अर्थमें क्तवतु (तवत्) प्रत्यय होता है। शेष—इट् आदिके नियम क्त प्रत्ययकी भांति समझना। २—धातुके अंतके दकार अथवा रकारसे पर क्त और क्तवतुके तकारको और धातुके दकारको नकार आदेश हो जाता है लेकिन रकारको कुछ नहीं होता। जैसे—तुदीज् (पीड़ा देना) से क्त अथवा क्तवतु प्रत्यय किया ओकार इत् होनेसे मध्यमें इट् नहीं आता। इसलिये तुद+त अथवा तुद+तवत् हुआ अब 'त' के स्थानमें और धातुके 'द' के स्थानमें 'न' होनेसे तुन्न,, तुन्नवत् हुआ। इसी तरह (कॄ+ बिखेरना) से क्त अथवा क्तवतु किया स्वरांत होनेसे मध्यमें इट् नहीं हुआ (दीर्घ ऋ-कारांत धातुके ऋकारको क्त तथा क्तवत् परे होनेसे (ईर्) हो जाता है) तो कीर्+त हुआ अब तके स्थानमें न हुआ तो कीर्ण,, कीर्णवत्। नकारको णकार करने लिये ६८ पृष्ठकी टिपपणी देखो।

अग्निः	इंधनं	दग्धवान्।	अग्निने	इंधनको जलाया।
गोपः	धेनुं	मुक्तवान्।	ग्वालेने	गायको छोड़ा।
कारारक्षकः	चौरं	त्यक्तवान्।	कैदखानेके	रक्षकने चोरको छोड़ा।
मेघाः	पर्वतं	कुंचितवंतः।	मेघोंने	पहाड़को ढांक दिया।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

घ्रातवान्, जितवंतौ, तर्जितवंतौ, मर्दितवान्, दष्टवान्, दृष्टवंतः, भूषितवान्, मण्डितवान्, गदितवान्, भक्षितवंतः, अर्चितवंतौ अर्जितवंतौ, श्रुतवान्, आलोचितवंतः, स्पृष्टवान्, कांक्षितवान्, ईहितवान्, गतवान्, पठितवान्, विचारितवान्, दग्धवान्, मुदितवान्, छिन्नवान् त्यक्तवान्।

सप्तम पाठ।

तवत् (क्तवतु) स्त्री लिंग (१)

भिक्षुकी		मृतवती।	भिक्षुकी		म्रियते स्म।
नारी	ग्रामं	गतवती।	नारी	ग्रामं	गच्छति स्म।
बालिका		एधितवती।	बालिका		एधते स्म।
सा	प्रतिज्ञां	क्रांतवती।	सा	प्रतिज्ञां	क्रामति स्म।
देवदत्ता	ग्रामं	प्रस्थितवती।	देवदत्ता	ग्रामं	प्रतिष्ठते स्म।
शिष्या	काष्ठं	हृतवती।	शिष्या	काष्ठं	हरति स्म।
सेविका	भारं	ऊढवती।	सेविका	भारं	वहति (ते) स्म।
सिंह्यः		गर्जितवत्यः।	सिंह्यः		गर्जंति।
द्वौने	धनाढ्यं	श्रितवत्यौ।	द्वौने	धनाढ्यं	श्रयतः स्म।
इयं	मेघमाला	क्षीणवती।	इयं	मेघमाला	क्षयति स्म।

१—तवत् प्रत्ययांत 'ई' अन्तमें लगा देनेसे स्त्री लिंग हो जाते हैं।

पुष्पमाला		म्लानवती।	पुष्पमाला		म्लायति स्म।
नारी	नदीं	तीर्णवती।	नारी	नदीं	तरति स्म।
सीता	पुष्पं	घ्रातवती।	सीता	पुष्पं	जिघ्रति स्म।
सेना	शत्रुं	जितवती।	सेना	शत्रुं	जयति स्म।
ननांदरौ	वधूं	तर्जितवत्यौ।	ननांदरौ	वधूं	तर्जतः स्म।
वध्वः		ईहितवत्यः।	वध्वः		ईहंते स्म।
मातरः	दुहितृः	गदितवत्यः।	मातरः	दुहितृः	गदंति स्म।
कन्या	पतिं	श्रितवती।	कन्या	पतिं	श्रयते स्म।
शिष्या		उषितवती।	शिष्या		वसति स्म।
वत्सा		गूनवती।	वत्सा		गुवति स्म।
राज्ञी	भृत्यं	तिक्तवती।	राज्ञी	भृत्यं	तिजते स्म।
विद्या		पीनवती।	विद्या		प्यायते स्म।
सभा		वर्द्धितवती।	सभा		वर्द्धते स्म।
बाला	आत्मानं	शंकितवती।	बाला	आत्मानं	शंकते स्म।
का	कांन (वि)	श्रब्धवती।	का	कांन (वि)	श्रंभते स्म।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

दृष्टवती, आलोकितवती, दग्धवती, ईक्षितवती, ईप्सितवती, कांक्षितवती, गतवती, पठितवती, सेवितवत्यः, हर्षितवती, तर्जितवत्यौ, हसितवत्यः, मिषितवत्यः, कथितवत्यः नयतिस्म, पिबतिस्म, पीतवती, तिष्ठति स्म, स्नावति स्म, लिखितवती, ईचते स्म, शंकितवती, त्यक्तवती, मुंचति स्म, तुन्नवती, अर्दति स्म, भजंते स्म, कांक्षंते स्म, सेवते स्म।

नीचे लिखे वाक्य पूरे करो—

——गुरुं पृष्टवती। बाला——गतवती। पत्नी पतिं——। माता ——शिक्षितवती। कन्या——पठितवती।——क्षणं स्थितवती।

——पुत्रं कांक्षितवती। पुत्राकांक्षा——व्यथितवती। अंजना——सूतवती। बाला——पीतवती।——नदीं तीर्णवती।

(१) नीचे लिखी धातुओंका तवत् (क्तवतु) प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग शब्दोंके साथमें प्रयोग करो—

कनी, कर्द, क्रमु, चर, चुवि, (२) तृ, ईहै, प्रथैष्, मानै, शकिङ्, हृङ्, भजीञ्, भृ, टुयाचृञ् लिपीञ्, लुप्लृञ्।

अष्टम पाठ।

नपुंसक लिंग—क्तवत्

भस्म	अग्निं	गूढवत्।	भस्म	अग्निं	गूहति (ते) स्म।	
इदं		रक्तवत्।	इदं		रजते (ति) स्म।	
मित्रं	बीजं	उप्तवत्।	मित्रं	बीजं	वपते (ति) स्म।	
पुष्पाणि	जनान्	लुब्धवंति।	पुष्पाणि	जनान्	लुभंति स्म।	
मित्रे	पुष्पं	घ्रात (ण) वती।	मित्रे	पुष्पं	जिघ्रतः स्म।	
चर्म	भटं	त्रात (ण) वत्।	चर्म	भटं	त्रायते स्म।	
मनः		लग्नवत्।	मनः		लगति स्म।	
चक्षुषी	आनंदं	लब्धवती।	चक्षुषी	आनंदं	लभेते स्म।	
कटुवचांसि	हृदयं	तुन्नवंति।	कटुवचांसि	हृदयं	तुदंति स्म।	
कुसुमानि	मधु	वितीर्णवंति।	कुसुमानि	मधु	वितरंति स्म।	
अगुरुणी	फलानि	विकीर्णवती।	अगुरुणी	फलानि	विकिरतः स्म।	
चर्माणि	शरीराणि	कुंवितवंति।	चर्माणि	शरीराणि	कुंवंति स्म।	
गृहं	चंद्रिकां	संहृतवत्।	गृहं	चंद्रिकां	संहरते स्म।	
तपः	मुनिं	भूषितवत्।	तपः	मुनिं	भूषति स्म।	

१ धातुओंसे क्तवत्प्रत्यय करते समय 'क्त' प्रत्ययकी टिप्पणीकी बातोंका खूब ध्यान रहना चाहिये। २-जिसधातुका ह्रस्व 'इ' इत् है उसके अंत अक्षरसे पहिले अनुस्वार या वर्गका पांचवां अक्षर आजाता है। चुवि! चुंव्। शकिङ्-शंक् आदि।

नवम पाठ।

साहित्य परिचय

हिंदीमें अनुवाद करो—

जीवंधरः सभित्रो नदीं गतवान्। तत्र द्विजा एकं कुक्कुरं रिषंति स्म। तं कुमारस्त्रातुं (बचानेके लिये) प्रयतते स्म परं न समर्थो जातः। अतो धर्मं उपदिष्टवान्। ततः श्वा यक्षेंद्रो जातः। पूर्व-भवं स्मृत्वा स जीवंधरसमीपमागच्छति स्म तथा कुमारं हृष्टः सन् अचिंतवान् पुनः स्वर्गं गच्छतिस्म। अथ तत्र गुणमालासुरमंजरी-नाम्न्यौ द्वे कन्ये परस्परं चूर्णार्थं विवदेते स्म एवं या पराजिता सा स्नाता न स्यात् (हो) इति संविदौ च चरतः स्म इति चूर्ण-परीक्षार्थं स्वे चेट्यौ सज्जनसमीपं प्रेषितवत्यौ। ते च जीवंधर-समीपं आगच्छतः स्म। जीवंधरो गुणमालाचूर्णं गुणवत् इति कथ्यते स्म (कथितवान्) सुरमंजरीचेटी तु तत् श्रुत्वा "अन्यो-क्तमिव भवान् अपि उक्तवान् किं यूयं सर्वं सहपाठं (एकसाथ) पठित-वंतः" इति क्रुद्धा सती गदितवती। स्वामी जीवंधरस्तु चूर्णगुण-दोषं स्पष्टं साधितवान्। ततस्ते चेट्यौ कुमारं नत्वा स्तुत्वा च प्रत्यावर्तते स्म।

संस्कृतमें अनुवाद करो—

काष्ठांगार मरगया। जीवंधर परंपरागत राजसिंहासन पर विराजे। सम्पूर्ण प्रजा प्रसन्न हुई। चारो तरफसे सामंत लोगोंने आकर सहारा लिया। महाप्रतापी जीवंधरने शत्रु काष्ठांगारके कुटु-म्बको भी संमानित किया। नंदाढ्य नामक छोटे भाईको युवराजपद दिया। पृथिवीको बारह वर्ष तक कररहित बनाया। अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंको अपने पास ले आये। इस तरह यह राजा सब गुणसहित शोभित होने लगा उस समय जीवंधर महाराजने अपने सुख दुखको प्रजाधीन समझा। राति दिन समय विभाग द्वारा राज.

कार्योंकोकिया। महाराजने खूब धन बांटा। कैदियोंको थोड़े दिन बांधकर (वध्वा) छोड़ दिया। इसलिये सब लोगोंने उसकी प्रशंसाकी। वादको विजया विरक्त हुई और "पापपुण्यका फल मैंने देख लिया" यह बात पुत्रको कहकरवनको चली गई। सुनंदा नामक दूसरी माताने भी उसका अनुगमनकिया। दोनों एक साथ दीक्षित हुई।

नीचे लिखे प्रश्नोंका उत्तर लिखो।

को मृत:। जीवंधर: कं भूषति स्म। के तं आश्रयंते स्म। क: कं संमानितवान्। कां कररहितां कृतवान्। का: स्वसमीपमानयति स्म। क: कथं राजते स्म। क: स्वदु:खसुखे प्रजाधीने विचारितवान्। कथं राज्यकार्यं वर्तते स्म। महाराज: किं वितीर्णवान्। कान् अल्पसमयानंतरं मोचितवान्। किमर्थं सर्वे तं कथितवंत:। का विरक्ता जाता। का कामनुगता।

प्रश्नोत्तर बनाकर संस्कृतमें लिखो——

कश्चिद् वृका (भेडिया) मेष (मेंढा) मेकं खादितवान्। तदीयमेकमस्थि गले (गलेमें) रुद्धम्। तत आर्त्त: स उच्चै: रटन् इतस्ततो भ्रमति स्म। यं यं सत्वं (प्राणी) दृष्टवान् तं तं प्रति दीनतापूर्वकं प्रार्थितवान् "महाशय। यदि मदीयं! गलगतमिदमस्थि वहि: (वाहिर) करोषि (करदो) तर्हि (तो) अहं बहु पारितोषिकं (इनाम) ददे"। तत एको वक: पारितोषिकलाभवशीभूत: पुरो (सामने) गत्वा तद्मुखे (उसके मुंहमें) स्वां लम्बां ग्रीवां निक्षिप्य (घुसाकर) तदस्थि वहि: कृतवान्। ततो यदा वक: स्वकीयं पारितोषिकं याचितवान् तदा वृको लोहितचक्षु: सन् वदति स्म "रे! अहं कुत्रचिदपि त्वत्सदृशं मूर्खं न दृष्टवान्। त्वदीया ग्रीवा मन्मुखे (मेरे मुंहमें) वर्तते स्म तां न चर्वित्वा त्वं जीवन् मुक्त:। एतवता (इतनेमें) अपि असंतुष्ट: पारितोषिकं याचसे"

नीचे लिखे शब्दोंसे वनका वर्णन करो—

तरुनिवहः (वृक्षोंका समूह), मृगराजविदारिताः, मुक्ताफलानि, पतिताः रक्तलोहिताः, शवराः मृगाः, कूजितं, अजगराः, उष्णितवाताः, वानराः, पर्वताः, पतंति, क्रीडंति, सूर्यकिरणरहितं, अंधकारसमावृतं, श्यालाः, वृकाः, घूकाः, गुहाः।

शुद्ध करो—

स प्रतिदिनं पुस्तकं पठितः। के अपि गुह्यं राजमंत्रं न ज्ञाते। सूर्यपादा अत्र न पतितं। विरक्ता सा इदं व्रतं अध्यवसितं। शोकपीडिताः पक्षिणः विलपंतः जिज्ञासां समारब्धवान्। इतस्ततः अन्वेषयंतः पतत्रिणः शावकान् प्राप्तः। जीवंधरः नंदगोपपातितां जलधारां गृहीतः। स तत् श्रुत्वा घोषणां निवारितः। स्वामी किरातान् जितः। स यथाशक्ति प्रतीकारः कृतः। गुरुं कथमपि वनं गतवान्। काकः तथाविधं मृगं दृष्टः। पापकर्मा त्वं किं कृतं।

एक २ शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

परिजनः(नौकर) तं पश्यन्—त्यक्तवान्। अग्रतः रामः—तदनंतरं ——चलिता। तौ——गतौ। जीवंधरः काष्ठांगारं——। भिक्षुः अन्नं——।कुमारः——जातः। अहं अद्य———लब्धवान्। दंती कवलं (ग्रास)——। कोपाग्निः शरीरं——।सेना कुमारगृहं——। स्वामी तदा——गतः। अद्य महानुत्सवो——। मिथ्याभाषिणः न ——। यादृग् राजा तादृशी——भवति। प्रयोजनं विना—न प्रवर्तते। परहितकराः——विरलाः।——मनुष्यं भक्षितवान्। जीवंधरः—गृहीतवान्। आचार्यः——उपदिष्टवान्। पक्षिणः——उड्डीनवंतः। ——सेविते स्म।——विरक्ता।—अनित्यं वर्तते।——संस्कृतं पठितवान्।——अजगरं दृष्टवत्यः। नारी—लंघितवती। वीरः——जितवान्।——पतिताः।

नवम अध्याय।

भ्वादि और तुदादिगणीय धातुओंसे लृट्लकारका प्रयोग

प्रथम पुरुष परस्मैपदी धातु

प्रथम पाठ।

१ पुरुषः (१) गमिष्यति।	आदमी	जायगा।
भव्यः जिनं अर्चिष्यति।	श्रेष्ठआदमी	जिनको पूजेगा।
निर्धनः कठिष्यति।	गरीब	दुःखसे जीवन बितावेगा।
सेनानीः नदीं क्रमिष्यति।	सेनापति	नदीको लांघेगा।
२ छात्रौ पुस्तकानि पठिष्यतः।	दो विद्यार्थी	पुस्तकें पढ़ेंगे।
फले पतिष्यतः।	दो फल	गिरेंगे।
तौ जीविष्यतः।	वेदोनो	जीवेंगे।
गुणिनौ राजानौ भविष्यतः।	गुणी दो जने	राजा होंगे।
दंतिनौ अंचिष्यतः।	दो हाथी	जावेंगे।
३ पांथाः चलिष्यंति।	रास्तागीर	चलेंगे।
अमी गमिष्यंति।	ये लोग	जायेंगे।
कर्माणि फलिष्यंति।	कर्म	फल देंगे।
पुष्पाणि स्फुटिष्यंति।	फूल	खिलेंगे।
सर्वे जीवाः (२) मरिष्यंति।	सब	जीव मरेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

खादिष्यंति, हसिष्यंति, गमिष्यतः, अर्हिष्यति, अटिष्यति, गदिष्यति, वदिष्यतः, नंदिष्यति, मेषिष्यति, विकिरिष्यति, अटिष्यतः।

१—परस्मैपदी धातुओंसे भविष्यत् (आने वाले) कालके अर्थमें प्रथमपुरुषके एक वचनमें स्यति, द्विवचनमें स्यतः, और बहुवचनमें स्यंति प्रत्यय लगते हैं और उसके तथा धातुके बीचमें इ (इट्) आजाता है। जैसे गमॢ (ॢ—इत् है) से स्यति किया तो गम्+स्यति हुआ बीचमें 'इ' आया तो गम्+इ+स्यति=गमिष्यति हुआ षकारके लिये ७५ पृष्ठकी टिप्पणी देखो। २—धातुओंके अंतके 'ऋ' का अर् हो जाता है स्यति आदि प्रत्यय परे होनेसे।

संस्कृत बनाओ—

एक मत्त हाथी आवेगा। जीवंधर मोक्ष जायेंगे। वह संस्कृत पढ़ैगा। मंत्री एक पत्र लिखेगा। पापी दुख पावेगा। घंटा बजैगा। वह तुमे निगल जावेगा। क्या वह मुझे याद करेगा। नहीं वह तुम्हे कभी भी (कदापि) नहीं भूलैगा (वि-स्मृ)। लड़का यदि इसी तरह खेलेगा तो कुछ नहीं पढ़ैगा। जो चोरी करैगा उसको राजा दंड देगा। लड़कियां माला गूंथेगीं।

द्वितीय पाठ।

१ शिशुः दुग्धं (१) पास्यति।	बच्चा	दूध पीवेगा।
शरीरं म्लास्यति।	शरीर	नष्ट होगा।
स पुरुषः स्नास्यति।	वह पुरुष	स्नान करेगा।
राजाः पुष्पाणि घ्रास्यति।	राजा	फूल सूंघेगा।
२ राजानौ (२) जेष्यतः।	दो राजा	जीतेंगे।
तौ क्षेष्यतः।	वे दो जने	नष्ट होंगे।
कृषकौ भूमिं (३) कर्क्ष्यतः।	दो किसान	भूमिको जोतेंगे।
अही सर्प्स्यतः।	दो सांप	रेंगेंगे।
पितरौ पुत्रान् स्प्रक्ष्यतः।	माता पिता	पुत्रोंका स्पर्श करेंगे।
३ योषितः राजानं द्रक्ष्यंति।	स्त्रियां	राजाओंको देखेंगी।
दुष्कर्माणि पुण्यानि धक्ष्यंति।	दुष्कर्म	पुण्यकर्मोंको जलावेंगे।

१—जिन धातुओंके अंतमें (दीर्घ ऊकार ह्रस्व तथा दीर्घ ऋकार और श्रि को छोड़कर) कोई स्वर है तथा जिनका 'लृ' कार (पतृल्को छोड़कर) और औकार इत् है उनसे भविष्यत् कालके अर्थमें, स्यति आदि प्रत्यय लगानेसे बीचमें इ (इट्) नहीं आता। २-स्यति आदि प्रत्यय लगनेपर धातुके अंतके इकार, ईकारके स्थानमें एकार, उकारके स्थानमें ओकार, ए, ऐ, ओ, औ, के स्थानमें आ-कार हो जाता है। जैसे—जि×स्यति—जेष्यति (टिप्पणी ७५ पृ० देखो) नी (णीञ्)+स्यति+नेष्यति, स्नु ×स्यति स्नोष्यति, वे (वेञ्)+स्यति वास्यति, म्लै +स्यति म्लास्यति, दो (टुकड़े करना)×स्यति दास्यति। ३—स्यति आदि प्रत्यय

सर्पाः अपराधिनं दंक्ष्यंति। सांप अपराधीको काटेंगे

शिशवः हस्ती मक्ष्यंति। लडके दो हाथीको छूवेंगे।

अध्यापकाः छात्रान् प्रक्ष्यंति। अध्यापक लोग विद्यार्थियोंको पूछेंगे।

ताः गृहं (४) प्रवेक्ष्यंति। वे स्त्रियां घरमें प्रवेश करेंगी।

कुलालाः घटान् स्रक्ष्यंति। कुम्हार लोग घडोंको बनावेंगे।

राजानः रक्षाभारं वक्ष्यंति। राजा लोग रक्षाके भारको धारण करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

वत्स्यंति, पास्यंति, घ्रास्यतः, ग्लास्यति, जेष्यतः, चेष्यंति, स्रक्ष्यंति, वक्ष्यतः, दंक्ष्यतः, स्रक्ष्यतः, कक्ष्यंति, पक्ष्यति, द्रक्ष्यतः, धक्ष्यति, प्रक्ष्यति, म्लास्यंति, प्रवेक्ष्यतः, मक्ष्यंति, स्रक्ष्यंति।

शुद्ध करो—

शिशुः दुग्धं पिबिष्यति। दंतिनः मृत्तिकां जिघ्रिष्यंति। अन्नंविना शरीरं नूनं (निश्चयसे) म्लायिष्यति। कर्माणि किं न फलिष्यति, कानि पतिष्यतः। राजा शत्रुं नूनं जयिष्यति। के न चयिष्यंति। कृषीवलः क्षेत्रं कर्षिष्यति, घर्मार्ताः सर्पाः सर्पिष्यंति। कौ त्वां स्पृशिष्यतः। ता राजानं दर्शिष्यंति। भृत्यः कथं चरणौ मर्शिष्यतः। गुरुः प्रश्नं प्रच्छिष्यति, सीता अग्निं प्रवेशिष्यति। कुंभकारः कथं घटान् सृजिष्यति। कः इमां पृथ्वीं वहिष्यति। सर्पः शिशुं दंशिष्यति। ते मंजिष्यंति।

संस्कृत बनाओ—

लड़का इसकी इच्छा करेगा। आग गांवको जला देगी।

होनेपर धातुके अंतके ष, श, ह, च, छ, ज और स्यति आदि प्रत्ययके स्य दोनों मिलकर क्ष्य हो जाते हैं यदि बीचमें इट् न हो। जैसे—कृष्+स्यति कक्ष्यंति, (इसी पृष्ठकी ४ नंबरकी टिप्पणी देखो) स्पृश्+स्यति स्प्रक्ष्यंति, वह्+स्यति वक्ष्यति, प्रच्छ्+स्यति प्रक्ष्यति सृज्+स्यति=स्रक्ष्यति। जिन धातुओंके अंतके अक्षरसे पहिले ह्रस्व—इ, उ, अथवा ऋ, हैं तो उनके स्थानमें क्रमसे ए, ओ, अर्, आदेश हो जायेंगे स्यति आदि प्रत्यय परे होनेमें। जैसे-विश्+स्यति=वेक्ष्यति, मुच्+स्यति मोक्ष्यति, मृश्+स्यति मर्क्ष्यंति।

भिक्षुक अभक्ष्यको भी खालेगा। मालिक नौकरको पूछेगा। मुनि लोग धर्मका उपदेश देंगे। हिरण्यगर्भ नामक मूसा स्नायुबंधनको काटेगा। वह जिन भगवान् पापोंको हरेगा। जयवर्मा शत्रुओंको दंड देगा। चातकको मेघ ही संतुष्ट करेगा। वे लोग प्रदर्शिनी (नुमाइस) देखेंगे। कुम्हार घड़ोंको बनावेंगे। लड़की एक बढ़िया (सुन्दर) गीत गावेगी। वीतरागी वीतरागका ध्यान करेगा। चाडाल क्या ब्राह्मणको छूवेगा ?। शत्रु भी इसको प्रणाम करेगा। क्रोधी मुनि इस विचारीको शाप देगा। कौन बम्बईसे (मोहमयीतः) पुस्तक लावेगा। जो ऊंचा (उच्चैः) चढेगा वह अवश्य ही (अवश्यमेव) गिरेगा। दुर्जन कबतक (कदापर्यंतं) उच्च रहेगा। यह नाव इस नदीको पार कर जायगी। सैनिक घोड़ोपर चढ़ेंगे।

तृतीय पाठ।

आत्मनेपदी धातु।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	जनः		(१) ईहिष्यते।	मनुष्य		चेष्टा करेगा।
	कथं स	मां	ईजिष्यते।	कैसे वह		मेरी निंदा करेगा।
	नारी	नदीं	ईक्षिष्यते।	स्त्री	नदीको	देखेगी।
२	छात्रौ		यतिष्येते।	दो विद्यार्थी		यत्न करेंगे।
	मुनी	शास्त्रं	गाहिषेते।	दो मुनि	शास्त्रका	अवगाहन करेंगे।
	इमौ		दीक्षिषेते।	ये दोनों		दीक्षित होंगे।

१—आत्मनेपदी धातुओंसे भविष्यत्काल अर्थके लृट्लकारमें स्यते, स्येते, स्यंते प्रत्यय लगते हैं। शेष कार्य बीचमें इट् आना आदि परस्मैपदी धातुओंके समान होते हैं।

३ एते जनाः	प्रथिष्यंते।	ये आदमी	प्रसिद्ध हो जायेंगे।
सुराज्यानि	प्रसिष्यंते।	अच्छे राज्य	बढेंगे।
सुताः	पितरं मानिष्यंते।	लडके	पिताकासंम्मान करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

कत्थिष्यते, एधिष्यते, गर्हिष्यते, गाहिष्यते, भिक्षिष्येते, मोदिष्यते, मयिष्यते, शंकिष्यंते, आदरिष्येते, शिक्षिष्यंते, प्रसिष्यते, प्रथिष्यते, मानिष्यते, वर्तिष्यंते।

चतुर्थ पाठ।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ नारी		(१) स्मेष्यते।	स्त्री		मुस्करायेगी।
स	कार्यं	आरप्स्यते।	वह काम		प्रारंभ करेगा।
२ पितरौ	पुत्रं	स्वङ्क्ष्येते।	माता पिता		पुत्रका आलिंगन करेंगे।
३ शिशवः	फलानि	लप्स्यंते।	लडके		फल पावेंगे।
राजानः	नारीः	उद्वक्ष्यंते।	राजालोग		स्त्रियोंको विवाहेंगे।

नीचे लिखेशब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्मेष्यते, स्वंक्ष्यते, लप्स्यते, उद्वक्ष्यते, रप्स्यते।

संस्कृत बनाओ—

वह वहां रहेगा। विद्या प्रतिदिन बढेगी। दुर्जनसंयोग पीडा देगा। तलवारें (असि) दीप्तहोंगी। लडका मुस्करायेगा। यह मुझे रोकेगा। भिखारी क्या मांगेगा। जैनलोग जिन भगवानको वंदना करेंगे। पुत्रको देखकर (विलोक्य) पिता प्रसन्न होगा। शरणागतको वह रक्षा करेगा।

१—इसी अध्यायके द्वितीय पाठकी टिप्पणी देखो।

पंचम पाठ।

उभयपदी धातुः। (१)

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	कृषीवलः	गर्तं	खनिष्यति (ति)	किसान		गड्ढा खोदेगा।
	भिक्षुकः	धनिनं	श्रयिष्यति (ति)	भिखारी धनी आदमीके पास जायगा।		
	अतिथिः	धनं	याचिष्यति (ते)	अतिथी		धन मांगेगा।
२	इमौ		वस्त्राणि वयिष्येते (ष्यतः)	येदोजने		कपडे बुनेंगे।
	तौ		समुद्रं श्रयिष्येते (ष्यतः)	वे दो जने	समुद्रको	जायेंगे।
३	के	दरिद्रान्	भरिष्यंति (ति)	कौन		दरिद्रोंको पोषेगा।
	के	इमां	संहरिष्यति (ते)	कौन		इसका संहार करेगा।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

धरिष्यति, याचिष्यतः, चयिष्यंति, वयिष्यंति, खनिष्यतः।

षष्ठ पाठ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	श्रावकः	जिनं	यक्ष्यते (ति)	श्रावक	जिनको	पूजेगा।
	चंद्रः		त्वेक्ष्यति (ते)	चद्रंमा		दीप्त होगा।
	तस्करः	द्रव्यं	घोक्ष्यति (ते)	चौर		द्रव्य छिपायेगा।
	स्वामी	सेवकानि	आदेक्ष्यति (ते)	प्रभु	सेवकको को हुक्म देगा।	
२	पाचकौ	ओदनान्	भक्ष्यतः (क्ष्येते)	दोरसोइया	चांवलोंको पकावेंगे।	
	रजकौ	वस्त्राणि	रङ्क्ष्यतः (क्ष्येते)	दो धोबी		कपडा धोवेंगे।

---

१ पृष्ठ १६६, १६७ की टिप्पणी देखो।

३ भृत्याः	गृहतलं	लेप्स्यंति (ते)	नौकर	घरको लीपेगें।
कृषकाः	वृक्षान्	लोप्स्यंति (ते)	किसान	पेडोंको काटेंगे।
कृषीवलाः	क्षेत्राणि	वप्स्यंति (ते)	किसान लोग	खेत बोवेंगे।
दुःखानि	हृदयं	तोत्स्यंति (ते)	दुःख	हृदयको व्यथित करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

छर्दिष्यंते, धविष्यंते, देक्ष्यतः, कर्क्ष्यंति, मोक्ष्यते, लेप्स्यतः, भ्रक्ष्यंते, लोप्स्यतः घोक्ष्यंति।

सप्तम पाठ।

उत्तम पुरुष

(१) परस्मैपदी धातु

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ अहं	तत्र	अटिष्यामि।	मैं वहां		घूमूंगा।
अहं	ओदनान्	विकिरिष्यामि।	मैं चावल		बखेरूंगा।
अहं	दुष्टान्	अदंडिष्यामि।	मैं दुष्टोंको		दंड दूंगा।
अहं	फलानि	खादिष्यामि।	मैं फल		खाऊंगा।
२ आवां		पतिष्यावः।	हम दो जन		गिरेंगे।
आवां		कठिष्यावः।	हम दो जने		दुखसे जीवन बितावेंगे।
आवां	वृक्षान्	मेषिष्यावः।	हम दो जने		वृक्षोंको सींचेंगे।
३ वयं	जिनं	अर्चिष्यामः।	हम लोग		जिनकी पूजा करेंगे।
वयं		हसिष्यामः।	हम		हसेंगे।
वयं	जैनग्रंथान्	पठिष्यामः।	हम		जैनग्रंथोंको पढेंगे।
वयं	ग्रामं	गमिष्यामः।	हम		गांवको जावेंगे।
वयं	कथां	गदिष्यामः।	हम		कथा कहेंगे।

१—परस्मैपदी धातुओंके लृट् लकारमें उत्तम पुरुषमें स्यामि स्यावः, स्यामः प्रत्यय लगते हैं। शेष कार्य प्रथम पुरुषके समान समझना।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अटिष्यावः, अंचिष्यामि, पतिष्यावः, अर्दिष्यामि, क्रमिष्यामि, खादिष्यामि, एषिष्यावः, विकिरिष्यामि, जीविष्यामः।

अष्टम पाठ।

१ अहं	दुग्धं	पास्यामि।	मैं दूध	पीऊंगा।
अहं	पुष्पं	घ्रास्यामि।	मैं फूल	सूंघूंगा।
अहं		जेष्यामि।	मैं	जीतूंगा।
अहं		क्षेष्यामि।	मैं	नष्ट होऊंगा।
२ आवां	त्वां	स्प्रक्ष्यावः।	हम दोनों	तुम्हारा स्पर्श करेंगे।
आवां	चमूं	द्रक्ष्यावः।	हम दोनों	सेनाको देखेंगे।
३ वयं		मङ्क्ष्यामः।	हम	स्नान करेंगे।
वयं	ग्रंथान्	म्नास्यामः।	हम	ग्रंथोंका अभ्यास करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

जेष्यामः, घ्रास्यावः, द्रक्ष्यामि, मंक्ष्यामि, दंक्ष्यामः, क्षेष्यामः, स्रक्ष्यामः, वक्ष्यावः, धक्ष्यावः, धक्ष्यामि, प्रक्ष्यामः, वेक्ष्यामि, पास्यावः।

नवम पाठ।

उत्तम पुरुष

आत्मनेपदी धातु

१ अहं	वाराणसीं (१)	ईक्षिष्ये।	मैं	बनारस देखूंगा।
अहं	दुर्जनं	ईर्जिष्ये।	मैं	दुर्जनकी निंदा करूंगा।

१—आत्मनेपदी धातुओंसे उत्तम पुरुषमें स्ये, स्यावहे, स्यामहे प्रत्यय लगते हैं शेषकार्य मध्यमें इट होना आदि प्रथमपुरुषके समान समझना।

अहं ईहिषे।		प्रयत्न करूंगा।
२ आवां यतिषावहे।	हम दोजने	यत्न करेंगे।
आवां शास्त्रं गाहिषावहे।	हम दोनों	शास्त्रका अवगाहन करेंगे।
आवां दीक्षिषावहे।	हम दो जने	दीक्षित होंगे।
३ वयं गुणिनं कत्थिषामहे।	हम	गुणवान्की प्रशंसा करेंगे।
वयं कुशीलं गर्हिषामहे।	हम	सब लोग कुशीलजनकी निंदा करेंगे।
वयं शिक्षिषामहे।	हम	शिक्षा देंगे।
वयं शिशून् आदरिषामहे।	हम	बच्चोंका आदर करेंगे।
वयं शंकिषामहे।	हम	शंका करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भिक्षिषामहे, गर्हिषे, मंथिषावहे, शंकिषामहे, मानिषे, गाहिषावहे, मोदिषामहे, गाहिषामहे, शिक्षिषे, ईहिषामहे,

---

दशम पाठ।

कर्ता कर्म क्रिया।	कर्ता कर्म क्रिया।
१ अहं (१)स्मेषे।	मैं मुस्कराऊंगा।
अहं त्वां स्वङ्क्षे।	मैं तुम्हारा आलिंगन करूंगा।
२ आवां उदक्ष्यावहे।	हम दोनों विवाह करेंगे।
आवां धनं लप्स्यावहे।	हम दोजने धन पावेंगे।
३ वयं कार्यं आरप्स्यामहे।	हम कार्य आरंभ करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्मेषावहे, उदक्ष्यामहे, लप्स्यामहे, रप्स्यावहे, स्वङ्क्ष्यामहे।

---

१ पृष्ट १६७ टिप्पणी देखो।

एकादश पाठ।

उभयपदी धातु (१)

१ अहं जिनं श्रयिष्यामि (ष्ये) मैं जिन भगवानकी सेवा करूंगा।
अहं महावीरं यक्ष्यामि (क्ष्ये) मैं महावीर स्वामीको पूजा करूंगा।
अहं कूपं खनिष्यामि (ष्ये) मैं कुंआ खोदूंगा।
अहं वरान् याचिष्यामि (ष्ये) मैं वर मांगूंगा।
अहं गुणिनं श्रयिष्यामि (ष्ये) मैं गुणीका आश्रय लूंगा।
२ आवां दरिद्रान् भरिष्यावः (वहे) हम दोनों दरिद्रोंको पालेंगे।
आवां साधून् श्रयिष्यावः (वहे) हम दोनों साधुओंको सेवेंगे।
३ वयं कूपं खनिष्यामहे (ष्यामः) हम कुंआ खोदेंगे।
वयं धनं घोक्ष्यामः (महे) हम धन छिपावेंगे।
वयं न त्वेक्ष्यामः (महे) हम दीप्तन होवेंगे।
वयं त्वां आदेक्ष्यामः (महे) हम तुमको आज्ञा देंगे।
वयं वस्त्राणि रंक्ष्यामः (महे) हम कपड़े रंगगे।
वयं भूमिं कक्ष्यामः (महे) हम भूमि जोतेंगे।
वयं गृहं लेप्स्यामः (महे) हम घरको लीपेंगे।
वयं वृक्षान् लोप्स्यामः (महे) हम पेड़ काटेंगे।
वयं ताम् तोत्स्यामः (महे) हम उसस्त्रीको व्यथित करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ

घोक्ष्ये, त्वेक्ष्यावः, आदेक्ष्यावः, रंक्ष्यामि, कक्ष्यावहे, लेप्स्यामि, लोप्स्ये, भरिष्यामः, वक्ष्ये, मोक्ष्यामहे, मंक्ष्यावहे, भ्रक्ष्ये वप्स्यामि, यक्ष्यामहे, श्रयिष्यावहे, देक्ष्ये।

१—परस्मैपदमें जब रूप चलाने हों तब परस्मैपदी धातुओंके प्रत्यय आदि लगाना। और जब आत्मनेपदमें चलाने हों तब आत्मनेपदी धातुओंके समान प्रत्यय आदि जानना।

द्वादश पाठ।

(१)—मध्यम पुरुष
परस्मैपदी धातु

१ त्वं ग्रामं	अंचिष्यसि।	तुम	गांवको जावोगे।
त्वं तदा	पठिष्यसि।	तुम	तब पढोगे।
त्वं किं	गदिष्यसि।	तुम	क्या कहोगे।
त्वं जिनं	अर्चिष्यसि।	तुम	जिनकी पूजा करोगे।
त्वं ओदनं	खादिष्यसि।	तुम	चावल खावोगे।
त्वं मुनिं	पूजिष्यसि।	तुम	मुनिको पूजोगे।
२ युवां ग्रंथान्	पठिष्यथः।	तुम दो जने	ग्रंथोंको पढोगे।
युवां	कठिष्यथः।	तुम	दुख पावोगे।
युवां वृक्षान्	सेषिष्यथः।	तुम दोनों	वृक्षोंको सींचोगे।
युवां किं	एषिष्यथः।	तुम दोनों	क्या चाहोगे।
३ यूयं	कठिष्यथ।	तुम सब	दुख पावोगे।
यूयं ग्रामं	क्रमिष्यथ।	तुम सब	नगरको जावोगे।
यूयं सर्वे	मरिष्यथ।	तुम सब	मरोगे।
यूयं	जीविष्यथ।	तुम	सब जीवोगे।
यूयं	पतिष्यथ।	तुम सब	गिरोगे।
यूयं जिनान्	अर्चिष्यथ।	तुम लोग	जिनको पूजोगे।
यूयं कथां	वदिष्यथ।	तुम लोग	कथा कहोगे।
यूयं	आनंदिष्यथ।	तुम	आनंद पावोगे।
यूयं पापानि	संहरिष्यथ।	तुम लोग	पापोंका नाश करोगे।
यूयं	क्रीडिष्यथ।	तुम लोग	खेलोगे।
यूयं पत्रं	लिखिष्यथ।	तुम	चिट्ठी लिखोगे।

१—मध्यम पुरुषमें परस्मैपदी धातुओंसे—स्यसि, स्यथः, स्यथ प्रत्यय लगते हैं शेष मध्यमें 'इट्' आना आदि प्रथम पुरुषके समान समझना।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पठिष्यथः, एषिष्यसि, अर्चिष्यथः, कठिष्यथ, चरिष्यसि, अर्हिष्यथः गमिष्यसि, गदिष्यथः, नदिष्यसि, व्रजिष्यथः, अर्चिष्यसि, भविष्यसि।

त्रयोदश पाठ।

१ त्वं कुत्र स्थास्यसि।	तुम	कहां ठहरोगे।
त्वं पुष्पं घ्रास्यसि।	तुम	फूल सूंघोगे।
त्वं किं शास्त्रं म्नास्यसि।	तुम	किस शास्त्रको पढ़ोगे।
२ युवां जेष्यथः।	तुम	दोनों जीतोगे।
युवां क्षेष्यथः।	तुम	दोनों नष्ट होओगे।
३ यूयं शिशुं स्प्रक्ष्यथ।	तुम लोग	लड़कीको छूओगे।
यूयं मां द्रक्ष्यथ।	तुम लोग	मुझे देखोगे।
यूयं मङ्क्ष्यथ।	तुम लोग	डूब जाओगे।
यूयं कुत्र वत्स्यथ।	तुम लोग	कहां बसोगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्प्रक्ष्यसि, क्षेष्यसि, मंक्ष्यसि, पास्यथ, घ्रास्यथः, स्थास्यथ, द्रक्ष्यसि, धक्ष्यसि, प्रक्ष्यथ, वेक्ष्यसि, सक्ष्यथः, दंक्ष्यसि, मर्क्ष्यसि, वत्स्यसि, म्नास्यथः।

चतुर्दश पाठ।

(१)—आत्मनेपदी धातु।

१ त्वं किं शंकिष्यसे।	तुम क्या	शंका करोगे।
त्वं तत्र उपवनं ईक्षिष्यसे।	तुम	वहां बगीचा देखोगे।

१—आत्मनेपदी धातुओंसे मध्यमपुरुषमें स्यसे, स्येथे, स्यध्वे प्रत्यय लगते हैं शेष प्रथमपुरुषके समान समझना।

त्वं तत्र मोदिष्यसे।	तुम	वहां हर्ष को प्राप्त होवोगे।
त्वं तम् आदरिष्यसे।	तुम	उसका आदर करोगे।
२ युवां तान् ईर्जिष्येथे।	तुम	दोनों उनकी निंदा करोगे।
युवां ईहिष्येथे।	म	दोनों यत्न करोगे।
युवां चेष्टिष्येथे।	तुम	दोनों चेष्टा करोगे।
३ यूयं शास्त्राणि गाहिष्यध्वे।	तुम लोग	शास्त्रोंकी आलोचना करोगे।
यूयं वस्त्राणि(विनि)मयिष्यध्वे।	तुम लोग	कपड़ोंका विक्रय करोगे।
यूयं पंडितान् श्लाघिष्यध्वे।	तुम लोग	पंडितोंकी प्रशंसा करोगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भिक्षिष्यसे, याचिष्यध्वे, ईहिष्यध्वे, कत्थिष्येथे, आदरिष्यध्वे प्रथिष्यसे, मानिष्येथे, गाहिष्यध्वे, चेष्टिष्यध्वे, शंकिष्यध्वे।

पंचदश पाठ।

१ त्वं स्मेष्यसे।	तुम	मुस्कराओगे।
त्वं तां स्वंक्ष्यसे।	तुम	उसका आलिंगन करोगे।
२ युवां के उद्दक्ष्येथे।	तुम दोनों	किनसे विवाह करोगे।
युवां यशः लप्स्येथे।	तुम दोनों	यश प्राप्त करोगे।
३ यूयं कार्याणि आरप्स्यध्वे।	तुम लोग	कार्यों को प्रारंभ करोगे।

१—नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्मेष्येथे, उद्दक्ष्यध्वे, स्वक्ष्यसे, लप्स्यध्वे, रप्स्यध्वे,

षोडश पाठ।

उभयपदी धातु (१)

१ त्वं जिनं श्रयिष्यसि (से) तुम जिनकी सेवा करोगे।

त्वं महावीरं यक्ष्यसि (से) तुम महावीरकी पूजा करोगे।

१—टिप्पणी देखो।

त्वं कूपं खनिष्यसि (से) तुम कुआ खोदोगे।

त्वं वरान् याचिष्यसि (से) तुम वर मांगोगे।

त्वं गुणिनं श्रयिष्यसि (से) तुम गुणीका सहारा लोगे।

२ युवां दरिद्रान् भरिष्यथः (ष्येथे) तुम दोनों गरीबोंका पालन करोगे।

युवां साधून् श्रयिष्यथः (ष्येथे) तुम दोनों साधुओंकी सेवा करोगे।

युवां धनं घोक्ष्यथः (क्ष्येथे) तुम दोनों धन छिपावोगे।

युवां सेवकं देक्ष्यथः (क्ष्येथे) तुम दोनों सेवकको आज्ञा दोगे।

३ यूयं वस्त्राणि रंक्ष्यथ (क्ष्ये) तुम लोग कपड़ा रंगोगे।

यूयं भूमिं कक्ष्यथ (क्ष्वे) तुम लोग भूमिको जोतोगे।

यूयं शिशून् आदरिष्यथ (ध्वे) तुम लोग लड़कोंका आदर करोगे।

यूयं गृहं लेप्स्यथ (ध्वे) तुम लोग घर लीपोगे।

यूयं वृक्षान् लोप्स्यथ (ध्वे) तुम लोग पेड़ काटोगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

घोक्ष्यध्वे, त्वेक्ष्यसे, अदेक्ष्यध्वे रंक्ष्यसे, कक्ष्यसि, लेप्स्यसि, लोप्स्यसे, भरिष्यसि, वक्ष्यध्वे मोक्ष्यध्वे स्रक्ष्यसि, भ्रक्ष्यध्वे, वप्स्यथ, तोत्स्यसि, यक्ष्यथ, श्रयिष्यध्वे, धविष्यसि, देक्ष्यसि।

सप्तदश पाठ।

साहित्य परिचय

हिंदीमें अनुवाद करो।

अथ नयभूषणो विक्रमवान् प्रभुः पद्मनाभः शत्रून् जेतुं निर्गमिष्यति। स मार्गं गच्छन् सर्वसेनासहितस्तारामंडलपरिवृतश्चंद्र इव त्वेक्ष्यते। सोऽद्वितीयां विभूषां (शोभा) वहंतं मणिकूटं नाम पर्वतं द्रक्ष्यति। तं दृष्ट्वा सेनापतिः “अत्र गतः कोऽपि जनः पीडां न अनुभवति” इति गदिष्यति। इदं श्रुत्वा नृपस्तम् आश्रयिष्यति। पुनः

कतिचिद् (कुछ) दिवसानंतरं जयार्थं प्रस्थास्यति। समीपं आगच्छंतं पद्मनाभं आकर्ण्य केचित् (कोई) शत्रव इतस्ततो दिशोऽचिष्यंति, केचित् पर्वतगह्वराणि सेविष्यंते केचित् पद्मनाभचरणमाश्रयिष्यंति, केचित् युद्ध्वा (लड़कर) चेष्यंति, केचित् स्वसुतदारान् षोचयंति। सोऽपि नृपः पद्मनाभ उद्धतान् स्वविरोधिनो विहाय कान् चिद् अपि न तोत्स्यति, तान् हितवचांसि एव उपदेक्ष्यति, अतः शत्रुमनांसि अपि अनुरंचयति। स मत्तान् आज्ञोल्लंघनतत्परान् एव क्षपिष्यति, दरिद्रान् भरिष्यति, दानादिकधर्मकार्यं आचरिष्यति। अनंतरं सर्वाः प्रजाः मोदिष्यंते, तथा हृष्टाः सत्यस्तं गुरुमिव ईक्षिष्यंते, पितरमिव आदरिष्यंते देवमिव अर्चिष्यंति। इत्थं (इस प्रकार) स राज्यं कृत्वा दीक्षिष्यते मोक्षं च लप्स्यते।

हिंदी बनाओ—

मैं कहीं (कुत्रापि) नहीं जाऊंगा। तुम क्या पढोगे। नौकर तुम्हारी सेवा करेगा। विद्यार्थी गुरुका सहारा लेंगे। मैं जैनेंद्र व्याकरण पढूंगा। लड़के उसका सन्मान करेंगे। आग हाथको जला देगी। मुनिराज श्रावकोंको उपदेश देंगे। कुम्हार घड़े बनावेगा। वह चूर्ण खावेगा। तुम दोनों किस वस्तुका विनिमय करोगे। अतिथि धन मांगेगा। हम ईश्वरको पूजेंगे और गुरुको नमस्कार करेंगे। पिपासाकुल पशु पानी पीवेंगे। वे यहां नहीं रहेंगे। राजा कुछ दिन बाद प्रस्थान करेगा। हम दोनों इसको नहीं चाहेंगे। मैं गुरुसे पूछूंगा। वह नदीको तर जायगी। मच्छर मुझको काटेगा। पद्मनाभ अवश्य जीतेगा। किसान खेत जोतेंगे और बीज बोवेंगे। उनको कौन छूवेगा ?। लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह बात प्रसिद्ध हो जायगी। यदि तुम यत्न करोगे तो विद्वान् होजावोगे। हम पढना शुरु करेंगे। दासी घर लीपेगी। रसोइया चावल पकावेगा। सूर्य चमकेगा।

शुद्ध करो—

नदी एधिष्यति। नौका मंक्षते। अहं राजानं ईक्षिष्यामि। कुलालः पात्राणि स्रक्ष्यते। नार्यः नगरीं प्रवेक्ष्यते। के मोदिष्यति। अहं दुग्धं पास्ये। जीवकः गुणमालां उद्वक्ष्यसे। कर्माणि फलिष्यंते। कः इमां स्वंक्ष्यति। साधवः जिनं अर्चिष्यंते। त्वं कदा किं कार्यं आरप्स्यति। यूयं जीविष्यध्वे। राजानौ कीर्तिं लप्स्यतः। त्वं धनं एषिष्ये। पद्मनाभः दीक्षिष्यसे। अहं धनं याचिष्यसे। यूयं पुनः पुनः चेष्टिष्यामहे। वयं जैनेंद्रं पठिष्यामहे। भ्रमरः पुष्पं घ्रास्यामि। बालकः गृहं गमिष्यावः। कृषकाः क्षेत्रं कर्क्ष्यथः। ते बीजान् वप्स्यथ। विद्यार्थिनः शास्त्राणि स्नास्यति। कर्म फलिष्यसि। अग्नयः काष्ठानि धक्ष्यसि। यूयं सप्स्यामः। जनाः देवान् मानिष्यसे। गुणग्राहिणः पंडितान् कथ्यिष्यध्वे। सुकर्म प्रथिष्यसे। युवां कदा उद्वक्ष्यते। के यशांसि लप्स्यते। निर्धनाः सधनं अयिष्यावहे। राजा कारागारवासिनः मोक्ष्यसे। यूयं पापकर्माणि त्यक्ष्यते। वयं लाजान् खादिष्यसे। पाचकः मोदकान् भक्ष्यध्वे। रजकः वस्त्राणि रंक्ष्यते। त्रौ बीजान् वप्स्यसे। प्रियवियोगः हृदयं तुदिष्यसि। कर्षकाः बीजान् वपिष्यंति। मुनयः श्रावकान् आदेशिष्यंति। नौका मज्जिष्यति। कृषीवलः क्षेत्रं कर्षिष्यति। राजा प्रजाः अनुरंजयिष्यति। जीवकः गुणमालां उद्वहिष्यति। अहं अत्र वसिष्यामि। पंडिताः धनानि लभिष्यंति। श्वश्रूः वधूं स्वंजिष्यते। सर्पः भेकं दंशिष्यति। पद्मनाभः जयिष्यति। यूयं शिशून् आह्वयाथ। पापकर्मा त्वं पापं न त्यजिष्यसे।

संस्कृतमें अनुवाद करो—

यहां (भरतक्षेत्रे) चौदह मनु होंगे। अंतिममनु महापद्म नामके होंगे। उनका मुख (तन्मुखं) चंद्रमाके समान चमकेगा। हाथ

शेषनागको जीतेगी। वे विषय वासनाओंको जलावेंगे। कुवेर अयोध्याको बनावेगा। वह बहुत प्रसिद्ध होगी। वे सुंदरी नामक राजपुत्रीको विवाहेंगे। एक समय (एकदा) रानी सोलह (षोडश) स्वप्न देखेगी। फल पतिसे पूछेगी। पति शुभफल कहेगा। पुत्र जन्म होगा। देव आवेंगे। वे पुत्रको पांडुकशिला पर ले जावेंगे (नेष्यंति) उसका अभिषेक करेंगे, और पूजन करेंगे। लौट कर (प्रत्यागत्य) नगरोत्सव करेंगे। बहुतसे भगवान्‌की सेवा करेंगे। बाकीके (शेष) स्वर्गको चले जायेंगे।

ऊपर लिखित गद्यपर संस्कृतमें प्रश्नोत्तर करो।

हिंदीमें अनुवाद करो—

श्रीमंतं जीवंधरं प्राप्तो लोको हृष्टः पुष्टस्तुष्टः सर्वविपद्रहितः सुखभोगी च भविष्यति। केऽपि दुःखं न द्रक्ष्यंति। नार्योऽविधवाः शीलवत्यश्च भविष्यंति। दुर्भिक्षादिजन्यं दुःखं न स्थास्यति। चौराः कुत्रचित् अपि न वत्स्यंति। सर्वे धर्ममाचरिष्यंति, गुरून् संमानिष्यंते, ईश्वरं अर्चिष्यंति, सत्कथा वदिष्यंति, पुत्रमुखं ईक्षिष्यंते। मुनय इतस्ततः सुधर्मं उपदेक्ष्यंति। जना दीक्षिष्यंते। केचित् स्वर्गं गमिष्यंति केचित् च पुनरपि मनुष्याः भविष्यंति।

प्रश्नमाला—

कः कं प्राप्तः कीदृशो भविष्यति। के किं न द्रक्ष्यंति। नार्यः कीदृशा भविष्यंति। किंजन्यं किं न स्थास्यति। के न वत्स्यंति। के कं आचरिष्यंति। मुनयः किं करिष्यंति। जनाः कीदृशाः भविष्यंति। कं अर्चिष्यंति।

दशम अध्याय।

तुदादि और भ्वादिगणीय धातुओंके आज्ञा, आशीर्वाद अर्थक लोट् लकारके साथ प्रथमा और द्वितीया विभक्तीका प्रयोग

प्रथम पाठ।

प्रथम पुरुष (३)

परस्मैपदी धातु

[1]१	स	ग्रामं	गच्छतु।	वह	गांवको जाय।
	श्रावक:	साधुं	अर्चतु।	श्रावक	साधुको पूजे।
	इयं	पुस्तकं	पठतु।	यह स्त्री	पुस्तकको पढे।
	शिशु:	पुष्पाणि	विकिरतु।	लड़का	फूलोंको बिखेरे।
	सर्व: जन:		नंदतु।	सब लोग	प्रसन्न होवो।
	जैनेंद्रं धर्मचक्रं सततं प्रभवतु।			जिनेंद्र भगवानका धर्मचक्र हमेशा समर्थ रहे।	
२	अमू		मिषतां।	ये दो जने	स्पर्द्धा करें।
	बालकौ		हसतां।	दो	बालक हंसे।
	ते		जीवतां।	वे दो स्त्रियां	जीवें।
	साधू		उपदिशतां।	दो साधु	उपदेशदें।
	शिशू	दुग्धं	पिबतां।	दो लड़के	दूधपीवें।
३	पथिका:		चलंतु।	रास्तागीर	चलें।
	नाविका:	नदीं	तरंतु।	नाविक (मल्लाह)	नदीको पार करें।

१—पहिलेके अध्यायोंमें जो वर्तमान कालके प्रथमपुरुषमें 'पठति, पठत:, पठंति' आदि रूप बतलाये हैं उनके अंतके 'ति, त:, अंति' को क्रमसे 'तु, तां, अंतु' कर देनेसे इस (लोट्) के रूप बनते हैं।

पुष्पाणि		स्फुटंतु।	फूल	खिलें।
राजानः	दुष्टान्	अर्दंतु।	राजा लोग	दुष्टोंका दमन करें।
ते	गृहं	गच्छंतु।	वे घरको	जांय।
शिशवः	कुसुमानि	जिघ्रंतु।	लड़के	फूल सूंघें।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

गायतु, पिबंतु, जिघ्रतां, व्रजतु, नंदताम्, अंचतां, अटतु, भवतां, ग्लायतां, सृजंतु, विकिरतां, सर्पतां, दशतु, वहतां, दहंतु, मनतां, दिशतु, तुदतां, अंचतु।

संस्कृत बनाओ—

दो लड़कियां अग्नि न छूवें। वे नदी पार करें। कुम्हार घड़ा बनावे। जीवंधर जीतें। पाप नष्ट हो। पुत्र जीवें। लड़के दूध पीवें।

शुद्ध करो—

अयं शास्त्राणि पठंतु। मत्तगजौ उच्चैः नदंतु। मूर्खाः मिषतां। बालिकाः क्रीडतु। सा तत्र वसंतु। कर्माणि फलतु। भवान् (आप) चिरं जीवतु।

हिंदी बनाओ—

निंदंतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवंतु (स्तुति करें), लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टं (इच्छाके अनुसार)। जनः शूरः सुरूपः सुभगो वक्ता वा भवतु परं अर्थं विना न प्रतिष्ठां गच्छति। धनार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते। त्यक्त्वा जनयितारं (पितरं) स्वं (अपने) निःस्वं (निर्धनं) गच्छति दूरतः। भवान् कुलक्रमागतं राज्यभारमुद्वहतु। स्वकीयं पितरं मातरं गुरुजनं भवंतोऽचंतु। छात्राः सर्वदा सदाचारान् चरंतु।

द्वितीय पाठ।

(१) आत्मनेपदी धातु

१ मतिः एधतां[1]	बुद्धि	बढ़े।
जीवकः सुरमंजरीं उद्वहतां।	जीवंधर	सुरमंजरीको ब्याहे।
पिता पुत्रं स्वजतां।	पिता	पुत्रको आलिंगन करे।
२ विद्यार्थिनौ शिक्षेतां।	दो विद्यार्थी	पढ़ावें।
ब्रह्मचारिणौ दीक्षेतां।	दो ब्रह्मचारी	दीक्षावें।
एते नगरे प्रथेतां।	ये दो नगर	प्रसिद्ध हों।
एतौ चेष्टेतां।	ये दोनों	चेष्टा करें।
शिशू यतेतां।	दो लड़के	प्रयत्न करें।
३ शिशवः स्मयंताम्।	लड़के	मुस्करावें।
ते साधून् कत्थंतां।	वे साधुओंकी	प्रशंसा करें।
अमूः कार्याणि आरभंताम्।	ये लोग	काम शुरू करें।
गुणिनः यशांसि लभंतां।		यश प्राप्त करें।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

वर्द्धतां, एधेतां, वेष्टंतां, यततां, स्मयतां, आरभतां, कत्थतां, शंकंतां, मोदंताम्, भिक्षतां, ईहंतां, ईजंताम्, लभेताम्, सहतां, ईक्षंतां।

शुद्ध करो—

अमू मोदंतां, बालकाः यतेतां, पंडिताः प्रथतां, शत्रवः वीर्यं सहेतां, नद्यः वर्द्धतां, युवकौ उद्वहतां, विद्वांसः शास्त्राणि गाहेतां।

संस्कृत बनाओ—

लड़के लोग नदियोंको देखें। बालक पुस्तकोंका विनय करे।

१—आत्मनेपदी धातुओंके वर्तमानकालके एधते, एधेते, एधंते, आदि रूपोंके अंतके 'ते' को 'तां' कर देनेसे रूप बनते हैं।

लड़के यश पावें। जीवंधर प्रसिद्ध हो। चन्द्रमा दीप्त हो। राजा दुर्जनोंको पीडादे।

शुद्ध करो—

गुणवान् कीर्तिं लभतु। शिशवः कुसुमानि जिघ्रंतां। राजधानी प्रसतु। बुद्धिः बर्द्धतु। पुत्रौ जीवेतां। राजानः दुष्टान् अर्द्दतां। पिता पुत्रं स्वजतां। वृद्धाः लाजान् विकिरेतां। हृदयं मोदतु।

तृतीय पाठ।

(१) उभयपदी धातु

१ पाचकः यवान् भृज्जतु (तां) रसोइया जौको भूंजे।

शिशुः लताः सिंचतु (तां) लड़का लताओंको सींचे।

राजा दरिद्रान् भरतु (तां) राजा दरिद्रोंका पोषण करे।

निर्धनः धनं याचतु (तां) निर्धन धन मांगे।

२ श्रावकौ जिनं यजतां (जेतां) दो श्रावक जिनकी पूजा करें।

कृषीवलौ क्षेत्रं कर्षतां (र्षेतां) दो किसान खेतको जोतें।

भृत्यौ गर्तं खनतां (नेतां) दो सेवक गड्डा खोदें।

तंतुवायौ वस्त्राणि वयतां (येतां) दो जुलाहे कपड़े बुनें।

३ ते त्वां तुदंतु (तां) वे तुझे दुःख दें।

दरिद्राः धनवंतं आश्रयंतु (तां) गरीब लोग धनवान्का सहारा लें।

रजकाः वस्त्राणि रजंतु (तां) धोबी कपड़े रंगे।

वृक्षाः धवंतु (तां) वृक्ष कंपै।

सेवकाः वृक्षान् लुंपंतु (तां) सेवक वृक्ष काटें।

१—आत्मनेपदमें जब रूप चलाना हो तब आत्मनेपदी धातुओंके समान और परस्मैपदमें चलाना हो तब परस्मैपदी धातुओंके समान चलाना।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

लिम्पतु, कर्षंतां, सिंचंतु, त्विषंतां, श्रयतां, भरतु, गूहतां, सिंचतु, भजेतां, पचंतां, नयंतां।

शुद्ध करो—

सूर्यः त्विषेतां, गृहस्थः दरिद्रान् भरंतु, निर्धनः धनिनं भजेतां, राजा कारागारवासिनः मुंचंतु, प्रभुः भृत्यान् आदिशतां, नार्यः चंदनं लिंपेतां, ब्रह्मचारिणः दीव्येतां, भृत्याः स्वामिनं सेवताम्।

संस्कृत बनाओ—

श्रावक लोग पापोंका संहार करें। किसान लोग खेत बोवें। गृहस्थ द्रव्य वितरण करें। सेवक भार ढोवे। पुत्रविरह हृदयको व्यथित करे। निर्धन धनियोंका सहारा लें। लड़कियां शरीर लिप्त करें। दो स्वामी सेवकोंको आज्ञा दें। मुनि धर्मका उपदेश दें। कुम्हार घड़ा बनावे। पापी पाप छोडे। भिक्षुक गांवको जाय। गाय खेतको खावे। विद्यार्थी संस्कृत पढे। कोइ किसीकी निंदा न करे। धनिक लोग गुणियोंका पोषण करें। राजा धर्मात्मा हों। सब लोग सुखी हों। कोई दुख न पावे।

चतुर्थ पाठ।

(१) उत्तम पुरुष

परस्मैपदी धातु

१ अहं	जैनेंद्रं	पठानि[1]।	मैं	जैनेंद्र पढूं।
अहं	विद्यालयं	गच्छानि।	मैं	पाठशाला जाऊं।
अहं	जिनं	अर्चानि।	मैं	जिनकी पूजाकरूं।
अहं	विद्यां	इच्छानि।	मैं	विद्याकी चाहूं।

१—वर्तमान कालके उत्तमपुरुषके वदामि, वदावः, वदामः आदि रूपोंके मि, वः, मः, को क्रमसे 'नि, व, म' कर देनेसे इसके रूप हो जाते हैं।

	अहं		मिषाणि।	मैं	स्पर्द्धा करूं।
	अहं	फलं	खादानि।	मैं	फल खाऊं।
२	आवां		मज्जाव।	हम दो जने	डूबें।
	आवां	घटान्	सृजाव।	हम दो जने	घड़ा बनावें।
	आवां		जयाव।	हम दोनों	जीतें।
	आवां	ग्रामं	व्रजाव।	हम दो जने	गांव जावें।
	आवां	पापानि	निंदाव।	हम दोनों	पापोंकी निंदा करें।
	आवां		नंदाव।	हम दोनों	आनंदित हों।
३	वयं	वनं	अंचाम।	हम	बनको जावें।
	वयं		अताम।	हम सब	हमेशा चलें।
	वयं	गृहं	विशाम।	हम	घरमें प्रवेश करें।
	वयं	संसारं	तराम।	हम	संसारको पार करें।
	वयं	न	क्रंदाम।	हम न	रोवें।
	वयं	पुष्पाणि	विकिराम।	हम	फूल बिखेरें।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

हराम, भवानि, गदाव, नंदाम, अंचाव, जिघ्राणि, पिबानि, दहाव, दशाम, जीवाम, इच्छाम, सृजाव, जयाम, विशानि,।

संस्कृत बनाओ—

हम दूध पीवें। मैं पत्र लिखूं। हम दोनों चिरकाल जीवें। हम शत्रु जीतें। हम घरमें प्रवेश करें। मैं दुर्जनकी निंदा करूं। हम दो जने पाठ पूछें। मैं तुमको स्पर्श करूं। हम बनारस (वाराणसी) चलें। हम फूल सूंघें। हम यहां रहें। मैं शीघ्र प्रस्थान करूं। मैं कर्म जलाऊं। हम दो जने फल खावें। हम नदी तरें। हम सत्य वाक्य बोलें। मैं पंडित होऊं। हम शास्त्र मनन करें। हम दोनों धन बांटें।

पंचम पाठ।

(१) आत्मनेपदी धातु

१ अहं	स्त्रीरत्नं	लभे।	मैं	श्रेष्ठ स्त्रीको प्राप्त करूं।
अहं	तां	उद्वहे।	मैं	उसको ब्याहूं।
अहं	सज्जनं	कत्थे।	मैं	सज्जनकी प्रशंसा करूं।
अहं	गुणिनः	माने।	मैं	गुणियोंका संमानकरूं।
अहं		शंके।	मैं	शंका करूं।
अहं		ईहे।	मैं	प्रयत्न करूं।
२ आवां	सेवकान्	तिजावहे।	हम दोनों	सेवकोंको क्षमा करें।
आवां	शिशून्	आदरावहे।	हम दोनों	लड़कोंका आदर करें।
आवां	पठनं	आरभावहे।	हम दोनों	पढ़ना प्रारंभ करें।
आवां	दुर्जनान्	ईजावहे।	हम दोनों	दुर्जनोंकी निंदा करें।
आवां	धनं	ददावहे।	हम दोनों	धनदें।
३ वयं		दीक्षामहे।	हम लोग	दीक्षित हों।
वयं	तान्	स्वजामहे।	हम लोग	उनका आलिंगन करें।
वयं	दुष्टान्	गर्हामहे।	हम लोग	दुष्टोंकी निंदा करें।
वयं	ताः	उद्वहामहे।	हम लोग	उनसे विवाह करें।
वयं		स्मयामहे।	हम	मुस्करावें।

निम्नलिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

ईक्षे, स्मये, ईजामहे, यते, ईहे, आदरे, गाहावहे, मनावहे, गर्हावहे, भिक्षे, तिजे, शंकामहे, लभावहे, रभे, स्वजामहे।

शुद्ध करो—

अहं यशः लभानि। आवां कार्यं आरभाव। वयं त्वां स्वजाम।

१—वर्तमान कालके आत्मनेपदी धातुओंके लभे, लभावहे, लभामहे आदिके 'ए' को 'ऐ' कर देनेसे इसके रूपहो जाते हैं।

अहं दुर्जनान् गर्हाव। आवां सज्जनान् आदरै। वयं शत्रून् जयामि। वयं शास्त्राणि मनावहै। वयं अन्नं भिक्षाम। अहं वनं व्रजै।

संस्कृत बनाओ—

हम लोग यत्न करें। मैं अच्छे कार्य प्रारंभ करूं। हम दोनों सज्जनोंकी प्रशंसा करें। हम लोग अपराधियोंको क्षमा करें। हम गुणियोंका आदर करें। मैं दौड़ालूं। हम दो जने बढें। हम द्रव्योंका विनिमय करें। मैं शोभित होऊं। हम दोनों जीतें।

षष्ठ पाठ।

उभयपदी धातु

१ अहं ओदनं पचानि (चै) मैं चावल पकाउं।
अहं पापानि मुंचानि (चै) मैं पाप छोड़ूं।
अहं तं न तुदानि(दै) मैं उसको व्यथित न करूं।
अहं क्षेत्रं सिंचानि (चै) मैं खेत सींचूं।
अहं क्षेत्रं वपानि (पै) मैं खेत बोऊं।
अहं दुर्बलान् भराणि (रै) मैं दुर्बलोंका पालन करूं।

२ आवां धनं गूहाव (वहै) हम दोनों धन छिपावें।
आवां गुणिनः आश्रयाव (वहै) हम दो जने गुणियोंका आश्रय लें।
आवां जिनं भजाव (वहै) हम दो जने जिनभगवान्‌को भजें।
आवां अर्थं याचाव (वहै) हम दो जने धन मांगें।
आवां धर्मं उपदिशाव (वहै) हम दो जने धर्मका उपदेश दें।

३ वयं दृषदः क्षिपाम (महै) हम लोग पत्थर फेंकें।
वयं वृक्षान् लुम्पाम (महै) हम वृक्षोंका काटें।
वयं वस्त्राणि वयाम (महै) हम कपड़े बुनें।
वयं दुकूलं रजाम (महै) हम दुकूल (धोती दुपट्टा) रंगें।
वयं गृहं लिंपाम (महै) हम घर लीपें।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

क्षषाम, भजै, वहानि, तुदामहै, सिंचाम, भराणि, याचै, याजानि, भजावहै, श्रयाम, रजानि, वहावहै, नयानि।

शुद्ध करो—

अहं जिनं श्रयामहै। अहं पापं मुंचाम। आवां चेत्रं वपामहै। वयं ताः तुदै। अहं लताः सिंचामः। आवां जिनं यजामहै। वयं वस्त्राणि रजाव। वयं शत्रून् क्षषावहै।

संस्कृत बनाओ—

हम किसीको पीडा न दें। हम दो जने पेड सींचें। मैं रस्सी लाउं। हम लोग वैरियोंको मारें। हम भगवान्‌का सहारा लें। हम बोझ ढोवें। हम लोग नौकरोंको आज्ञा दें। हम धोती (शाटी) रंगें। मैं जौ (यव) भूंजूं। हम ढेले (लोष्ठ) फेंके।

सप्तम पाठ।

(१) मध्यम पुरुष।

परस्मैपदी धातु

१ त्वं	लतां	उक्ष।	तू	लता सींच।
त्वं	कथां	गद।	तू	कथा कह।
त्वं	विद्यां	मन।	तू	विद्या पढ।
त्वं	धनं	वितर।	तू	धन बांट।
त्वं	तां	तर्ज।	तू	उस लड़कीको तर्जना कर।

१—परस्मैपदी धातुओंके मध्यमपुरुषकी आज्ञा (लोट्) अर्थमें रूप चलाने होंतो वर्तमान कालके मध्यम पुरुषके उक्षसि, उक्षथः, उक्षथ आदि रूपोंमें क्रमसे, सिकालोप 'थः' को 'तं' और 'थ' को 'त' कर देना चाहिये।

त्वं	पंडितः	भव।	तू	पंडित हो।
२ युवां		जेषतं।	तुम दोनों	शोभित होओ।
युवां	पुष्पाणि	विकिरतं।	तुम दो जने	फूल बखेरो।
युवां	इमां	पश्यतं।	तुम दोनों	इस स्त्रीको देखो।
युवां	लतां	शीकतं।	तुम दो जने	लताको सींचो।
युवां	नदीं	क्रामतं।	तुम दो जने	नदीको जाओ।
३ यूयं	कुमारीं	तर्दत।	तुम लोग	कुमारीको मारो।
यूयं	ग्रामं	गच्छत।	तुम लोग	गांवको जाओ।
यूयं	गृहं	विशत।	तुम लोग	घरमें प्रवेश करो।
यूयं	अपराधान्	मर्षत।	तुम लोग	अपराधोंको क्षमा करो।
यूयं	जिनं	महत।	तुम लोग	जिन भगवानकी पूजा करो।
यूयं	दुग्धं	पिबत।	तुम लोग	दूध पीओ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भूष, क्रामत, निंद, गदत, अर्चतं, चाम, आमृश, जर्जतं, इच्छत, भवतं, मनतं, कुंततं, पृच्छतं, वदत, जपतं, प्रणम, जय, जीवत, क्रीच्छत, रिषत।

संस्कृत बनाओ—

तुम बनको जाओ। तुम लोग पाठ पढो। जिन भगवानकी पूजो। तुम दो जने धन कमाओ। किसीकी निंदा न करो। तुम दो जने सर्वदा आनंदित होओ। कपड़े बुनो। पापोंको छोडो। तुम लोग कोई बात पूछो। फूल बिखेरो।

अष्टम पाठ ।

आत्मनेपदी धातु

१	त्वं		भाषस्व ।	तुम	कहो ।
	त्वं	ग्रंथं	वेष्टस्व ।	तुम	ग्रंथको वेष्टित करो ।
	त्वं	विद्यां	ईहस्व ।	तुम	विद्याको चाहो ।
	त्वं	सुजनान्	कत्थस्व ।	तुम	सज्जनोंकी प्रशंसा करो ।
	त्वं	नदीं	ईचस्व ।	तुम	नदीको देखो ।
२	युवां	तान्	श्लाघेथां ।	तुम दो जने	उनकी प्रशंसा करो ।
	युवां	शास्त्रं	लोचेथां ।	तुम दो जने	शास्त्रोंको देखो ।
	युवां	धनं	मांक्षेथां ।	तुम दो जने	धनकी इच्छा करो ।
	युवां	ग्रंथान्	गाहेथां ।	तुम दो जने	ग्रंथोंका अवगाहन करो ।
३	यूयं	अन्नं	भिक्षध्वं ।	तुम लोग	अन्न मांगो ।
	यूयं		एधध्वं ।	तुम लोग	बढ़ो ।
	यूयं		शोभध्वं ।	तुम लोग	शोभित होओ ।
	यूयं	नानावस्तूनि	मयध्वं ।	तुम लोग	नाना वस्तुओंका लेनदेन करो ।
	यूयं		शंकध्वं ।	तुम लोग	शंका करो ।
	यूयं		दीक्षध्वं ।	तुम लोग	दीक्षा लो ।
	यूयं		यतध्वं ।	तुम लोग	यत्न करो ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

श्लायस्व, तिजध्वं, उद्वहस्व, ईजस्व, यतध्वं, आददस्व, भिक्षेथां, शिक्षध्वं, ईक्षेथां ।

१—आत्मनेपदी धातुओंके आज्ञा (लोट्) में मध्यमपुरुषके यदि रूप बनाने होंतो वर्त्तमान कालके मध्यमपुरुषके भाषसे, भाषेथे, भाषध्वे आदिमेंके 'से, थे, ध्वे' को क्रमसे स्व, थां, और ध्वं कर देना चाहिये ।

संस्कृत बनाओ—

तुम लोग ईश्वरके दर्शन करो। तुम लोग हमको क्षमा करो। तुम दो जने शास्त्रोंका अवगाहन करो। तुम गुणियोंकी प्रशंसा करो। तुम लोग शंका करो। तुम दुर्जनोंकी निंदा करो। तुम लोग शत्रुओंको क्षमा करो।

शुद्ध करो—

यूयं पंडितान् श्लाघस्व। त्वं जिनं कत्थध्वं। युवां अन्नं खादेथां। त्वं गंगां ईच्च। यूयं द्रव्यजातानि मयस्व। युवां मां तिजतं। यूयं पुष्पाणि किरस्व।

नवम पाठ।

उभयपदी धातु

१ त्वं भारं वह (स्व) तुम भार ढोओ।
त्वं भृत्यं आदिश (स्व) तुम नौकरको आज्ञा दो।
त्वं ईश्वरं भज (स्व) तुम भगवान्‌की सेवो।
त्वं धनानि गूह (स्व) तुम धन छिपाओ।
त्वं आम्रं चष (स्व) तुम आमको चूषो।
त्वं त्विष (स्व) तुम दीप्त होवो।
२ युवां दरिद्रान् भरतं (रेथां) तुम दो जने दरिद्रोंका पालन करो।
युवां शत्रून् पृषतं (षेथां) तुम दो जने शत्रुओंको मारो।
युवां जिनान् यजतं (जेथां) तुम दोनों जिनकी पूजा करो।
युवां राजतं (जेथां) तुम दो जने शोभित होओ।
युवां क्षेत्रं वपतं (पेथां) तुम दो जने खेत बोओ।
३ यूयं ईश्वरं श्रयत (ध्वं) तुम लोग भगवानका सहारा लो।

यूयं अन्नं भृज्जत (ध्वं) तुम लोग अन्न पकाओ।

यूयं गात्रं लिंपत (ध्वं) तुम लोग शरीर लिप्त करो।

यूयं तरून् लुंपत (ध्वं) तुम लोग पेड़ काटो।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

यज, आदिशेथां, भजस्व, गृह्णध्वं, मुंचतं, आश्रयेथां, याचतं, सिंचत, भरध्वं, तुद, कर्षस्व, क्षपध्वं, खनेथां।

शुद्ध करो—

त्वं भृत्यं आदिशध्वं। युवां तान् तुद। यूयं तं यजतं। त्वं लतां लुंपतं। यूयं इंधनं आहर। युवां क्षेत्रं सिंचध्वं।

संस्कृत बनाओ—

तुम कपड़े रंगो। तुम सब लोग सच्चे धर्मका सहारा लो। तुम दो जने विद्या मांगो। तुम किसीको दुख न दो। तुम लोग जौ भूंजो। तुम शत्रुओंको मारो। तुम लोग दुर्जनोंको कष्टदो। तुम दो जने इस निरपराधीको छोड़ दो। तुम लोग कूआं खोदो। तुम बीज बोओ। तुम दोनों खेत जोतो।

परिशिष्ट।

(१) संबोधन प्रणाली

स्वरांत पुलिंग (२) अकरांत

१ भोः वृषल! इदं स्वास्थ्यं नाम न भवति। हे कृषीवल (किसान) यह स्वास्थ्य नहीं है।

१—दूसरे काममें लगे हुए आदमीको अपनी तरफ सम्मुख करनेके लिये जो वाक्य बोला जाता है उसे संबोधन कहते हैं। शब्दोंके कर्ता (प्रथमा) के रूप जो पहिले बतलाये गये हैं वही संबोधनके भी समझना। परंतु एक वचनमें भेद होता है। १ अकरांत शब्दोंके संबोधनके एक वचनमें विसर्ग नहीं होते।

रे बाल ! त्वं किमर्थं इमं हतवान्—रे मूर्ख ! तूने किसलिये इसको मारा।

हे पुत्र ! त्वं कुत्र गतः—हे पुत्र ! तू कहां गया।

भोः विद्याधर ! त्वं किमिच्छसि—हे विद्याधर ! तू क्या चाहता है।

२ भोः पथिकौ ! युवां कुत्र गच्छथः—अयि रास्तागीरो ! तुम दोनों कहां जाते हो।

भोः महाभागौ ! युवां कुत्रत्यौ—हे महाभागो ! तुम दोनों कहांके रहने वाले हो।

भोः विप्रौ ! किं युवां मदिरां पिबथः-भो ब्राह्मणो ! क्या तुम दोनों मदिरा पीते हो।

३ भोः सज्जनाः ! यूयं किं विपन्नाः—हे सज्जनो ! तुम क्यों खेद खिन्न हो।

भोः पंडिताः ! यूयं किं पठथ—हे पंडितो ! तुम लोग क्या पढ़ते हो।

भोः छात्राः ! युष्मान् अहं पृच्छामि—हे विद्यार्थियो ! तुम लोगोंको मैं पूछता हूं।

(१) इकरांत

१ भोः कवे ! त्वं किं रचसि—हे कवि ! तुम क्या रचते हो।

भोः मुने ! त्वं अपराधिनं तिजस्व—हे मुनि ! तुम दोषीको क्षमा करो।

भोः अहे ! त्वं बालं किं दशसि—हे सांप ! तू बालकको क्यों काटता है।

भोः (२) सखे ! मां रक्ष—मित्र ! मेरी रक्षा करो।

२ भोः अग्नी ! युवां किं वनं दहथः—अरे अग्नियों ! तुम दोनों क्यों वनको जलाते हो।

भोः कपी ! युवां किं गृहं गच्छथः—रे बंदरो ! तुम दोनों क्यों घरको जाते हो।

भोः अतिथी ! युवां किं धनमिच्छथः—भो अतिथियो ! तुम दोनों क्यों धन चाहते हो।

---

१ इकारांत शब्दके एक वचनमें 'इ' के स्थानमें 'ए' और विसर्गका लोप हो जाता है।

२—सखि शब्दके द्विवचन बहुवचनके रूप कर्ता (प्रथमा)के समान होंगे।

३ भो: अरय: ! यूयं अस्मान् क्षमध्वं—अयि शत्रुओ! तुम लोग हमको क्षमा करो।

भो: नृपतय: ! यूयं प्रजा: रक्षत—हे राजाओ! तुम लोग प्रजाको रक्षा करो।

भो: रवय: ! युष्मान् वयं अर्चाम:—ए सूर्यों! तुम्हें हम लोग पूजते हैं।

(१) उकारांत

१ भो: साधो ! त्वामहं प्रणमामि—हे साधु! मैं तुमको प्रणाम करता हूं।

भो: इंदो ! त्वं किरणं विकिर—हे चंद्र! तू किरणोंको फैला।

भो: (२) क्रोष्टो ! त्वं किं क्रंदसि—हे जंबुक! तू क्यों रोता है।

भो: प्रभो ! त्वं सेवकं क्षमस्व—हे स्वामी! तुम सेवकको क्षमा करो।

२ भो: शिशू ! युवां किं प्रलपथ:—हे लड़के! तुम दोनों क्यों प्रलाप करते हो।

भो: गुरू ! युवां छात्रान् पृच्छथ:—हे गुरुओ! तुम दोनो छात्रोंको पूछो।

भो: विभावसू ! युवां दुर्जनान् दहथ:—हे अग्निओं! तुम दोनों दुर्जनोंको जलाओ।

३ भो: बंधव: ! यूयं ईश्वरं अर्चत—हे भाइयो! तुम लोग ईश्वरको पूजो।

भो: तरव: ! यूयं छायां वितरत—हे वृक्षो! तुम छायाको देओ।

भो: शत्रव: यूयं दोषिण: क्षमध्वं—हे दुश्मनो! तुम लोग दोषियोंको क्षमा करो।

(३) ऋकारांत

१ भो: गृहीत: ! दातारं अर्च (४)—हे ग्रहण करनेवाले! तू दाताको पूज।

भो: दात: ! त्वं धनं वितर—हे दाता! तू धन दे।

१—संबोधनके एक वचनमें उकारांत शब्दोंके अन्तके उकारको ओकार और विसर्गोंका लोप हो जाता है। २ क्रोष्टुके द्विवचन बहुवचन प्रथमाके समान होंगे ३ ऋकारांतोंके अन्तके ऋकारको जगह 'अ:' हो जाता है। ४—युष्मद् अस्मद् शब्दका प्रयोग न करनेपर भी उनका अर्थ रखने मात्रसे ही मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुषकी क्रिया व्यवहारमें लाई जाती है।

भो: श्रोत: ! त्वं किं पृच्छसि—हे श्रोता ! तू क्या पूछता है।

२ भो: जेतारौ ! युवां शत्रून् अर्दतं—हे जीतनेवालो ! तुम दोनों शत्रुओंको पीड़ा दो।

भो: दोग्धारौ ! युवां कुत्र गच्छथ: —हे दुहनेवालो ! तुम दोनों कहां जाते हो।

भो: वक्तारौ ! युवां किं वदथ:—हे कहनेवालो ! तुम दोनों क्या कहते हो।

३ भो: ज्ञातार: ! यूयं किं उपदिशथ:—हे जानने वालो ! तुम लोग क्या उपदेश देते हो।

भो: हंतार: ! यूयं किं तान् हतवंत:—हे हिंसको ! तुम लोगोंने क्यों उनको मारा।

भो: कर्तार: ! यूयं किमीहध्वे—हे कर्त्तारो ! तुम लोग क्या प्रयत्न करते हो।

हिंदी बनाओ—

कुमार ! तातो (पिता) मां आह्वयति। सुनंद ! किमर्थमिह (यहां) आगमनं। हा पुत्र शंखचूड़ ! कथमद्य (आज) त्वां म्रियमाणमहं द्रक्ष्यामि। सुभग ! पितरौ ते (तुम्हारे) प्राप्तौ। भो: फणिपते (सांप) किमेवमुद्विग्नोऽसि (हो)। भो: पक्षिराज ! (गरुड) तूष्णीं (चुप) तिष्ठ क्षणमेकं, यावत् (जबतक) एतौ स्वपितरौ प्रणमामि। वत्स ! आगच्छ, आगच्छ, परिष्वजस्व माम्। हा शंखचूडहतक ! (दुष्टशंखचूड) कथं त्वं गर्भस्थ एव न मृत: यस्त्वमेवं प्रतिक्षणं मृत्युसदृशं दु:खमनुभवसि। हा आर्यपुत्र ! (पतिकेलिये संबोधन) अतिदुष्कृतकारिणी खलु (निश्चयसे) अहं। या ईदृशं (ऐसे) आर्यपुत्रं (पति) पश्यंती अपि जीवितं न परित्यजामि। साधो ! साधु (अच्छा) खलु इदं, अनुमोदामहे वयं। सर्वथा (सबतरहसे) सावधानो भव। शंखचूड ! त्वमपि इदानीं (इससमय) स्वगृहं गच्छ। हा सुत ! हा वत्स ! हा गुरुजनवत्सल ! देहि प्रतिवचनं (उत्तर)। हा प्रणयि (प्रेमी)

जनवल्लभ (प्रिय) हा सर्वगुणनिधे! त्वं कुत्र गतः। तनय! (पुत्र) त्वमद्य परलोकं गतोऽतो धैर्यं निराधारं जातं, अशरणो (शरणरहित) विनयः कं शरणं गच्छतु, क्षमां वोढुं (धारण करनेके लिये) कोऽन्यः क्षमः (समर्थ) हतं सत्यं सत्यं, व्रजतु च कृपा क्व (कहां) अद्य कृपणा (दीन, विचारी) जगत् शून्यं जातं। महाराज! जीमूतकेतो! मा एवं आचर।

संस्कृत बनाओ—

पिता! मुझे आज्ञा दो। भाई! ऐसा काम न करो। उपदेष्टाओ! अधर्मका उपदेश न दो। भर्तारो! अपनी अपनी प्रजाका पालन करो। साधुलोगो! वीतराग हो ओ। भिक्षुको! भिक्षा वृत्ति अच्छी नहीं है। विद्यार्थियो! परश्रम करो। लड़को! पढ़ो। भाई! क्यों रोते हो। ज्ञाताओ! मूर्खोंको उपदेश दो।

नोट—पृष्ठ १८के परिशिष्टमें दिये गये दीर्घ ईकारांत, ऐकारात, ओकारांत, औकारांत शब्दोंके रूप संबोधनमें कर्ता (प्रथमा) के समान ही होते हैं।

(१) व्यंजनांत पुलिंग

चकारांत—हे जलमुक्! जलं किं न मुंचसि—रे वादल। तू पानी क्यों नहीं छोड़ता है।

जकारांत—भोः सम्राट्! प्रजाः रक्ष—अये चक्रवर्ती! प्रजाकी रक्षा कर।

जकारांत—भोः भिषक्! प्रणमामि त्वां—हे वैद्य! मैं तुमको प्रणाम करता हूं।

तकारांत—भोः भूभृत्! नीतिज्ञो भव—ऐ! राजा! तू नीतिका ज्ञाता हो।

मत्भागांत—भोः धीमन्! (२) धर्ममनुतिष्ठ—ऐ! बुद्धिमान्! तू धर्म कर।

म (व) त् भागांत—भो धनवन्! दरिद्रान् भर—हे धनाढ्य! गरीबोंकी रक्षा कर।

१—व्यंजनांत शब्दोंके संबोधनके द्विवचन, बहुबचनके रूप कर्ता (प्रथम) के समान होते हैं। २—मत् (वत्) भागांतोंके संबोधनके एक वचनमें अन्तके अक्षरसे पहिले अक्षरको दीर्घ नहीं होता।

अत् (शब्द)—भो गायन्! त्वं किं गदसि—रे गाते हुये तू क्या कहता है।

दकारांत—भोः सुहृत् (द्) त्वं मां रक्ष—हे मित्र! तू मेरी रक्षा कर।

अन्‌भागांत—भोः (१) राजन्! त्वं किमेवमुद्विग्नो भवसि—ऐ राजा! तू ऐसा क्यों उद्विग्न होता है।

अन्‌भागांत—भोः शर्मन्! त्वं किं न पठसि—ऐ ब्राह्मण! तू क्यों नहीं पढ़ता।

इन्‌भागांत—भोः तपस्विन्! त्वं सत् तपः आचर—भोः! तपस्वी! तू श्रेष्ठ तप कर।

अस्‌भागांत—भोः (२) चंद्रमः! त्वं प्रकाशस्व—हे चंद्र! तू प्रकाशित हो।

वस्‌भागांत—भोः विद्वन्! त्वां गुरुः किमादिष्टवान्—हे विद्वान्! गुरुने तुझे क्या आज्ञा दी

ईयस् भागांत—भोः गरीयन्! त्वं किं तान निंदसि—हे बड़े आदमी! तू उनकी क्यों निंदा करता है।

शुद्ध करो—

भोः बुद्धिमान् वालक। भोः कपटी मुने। भोः धनवंतो लुब्धक। भोः मायाचारिणः साधो। भोः गर्वितः दात। भोः माननीय भूभृतो। भोः विद्वान् राजा। भोः प्रकाशक चंद्रमाः। रे दुष्ट वनौकाः (जंगली) भोः दयालु स्वामी। भोः निर्दयो यज्वन्! भोः शिक्षित सभासदो।

(३) स्त्रीलिंग शब्द

आकारांत—हे बालिके! त्वं किं न पठसि—लड़की! तू क्यों नहीं पढ़ती।

१—नकारांत शब्दोंके संबोधनके एक वचनमें कुछ अन्तर नहीं होता शुद्ध शब्द ही रहते हैं। २—सकारांत शब्दोंके अन्तके अक्षरसे पहिले अक्षरको दीर्घ नहीं होता। और शेष रूप प्रथमाके एक वचनका सा ही होता है। ३—संबोधनके एक वचनमें ही (प्रथमा) कर्ताके रूपोंसे भेद होता है द्विवचन, बहुवचनमें नहीं इसलिये एकवचनकेही उदाहरण दिये गये हैं।

इकारांत—हे बुद्धे ! कथं त्वं सन्मार्गं न गच्छसि—री बुद्धि ! तू क्यों अच्छे मार्गमें नहीं जाती।

ईकारांत—हे (१) कुमारि ! किं त्वं नदीं व्रजसि—ऐ कुमारी ! क्यों तू नदीको जाती है।

उकारांत—हे धेनो ! त्वं वत्सं किं मुंचसि—हे गाय ! तू बछड़े को क्यों छोड़ती है।

ऊकारांत—हे (२) श्वश्रु ! त्वं वधूं किं तर्जसि—हे सासु ! तू बहूको क्यों डाटती है।

ऋकारांत—हे मातः ! मां रक्ष—हे माता ! मेरी रक्षा कर।

चकारांत—हे जिनवाक् ! मूर्खान् किं न उपदिशसि—हे जिनवाणी ! तू मूर्खोंको क्यों नहीं उपदेश देती।

दकारांत—हे संपत् (द्) ! त्वं किं चपला—हे संपत् ! तू क्यों चपल है।

धकारांत—हे क्षुत् ! त्वं मानवान् किं तुदसि—हे भूंख ! तू मनुष्योंको क्यों पीड़ा देती है।

तकारांत—हे योषित् ! त्वमिदं किं कृतवती—री औरत ! तूने यह क्या किया।

इर्भागांत—हे गीः ! त्वं जनान् अव—हे वाणी ! तू लोगोंको संतुष्ट कर।

उर्भागांत—हे पूः ! त्वमधिकं शोभसे—हे नगरी ! तू अच्छी तरह शोभती है

भकारांत—हे ककुब् (प्) त्वमद्य किं निर्मला—हे दिशा ! तू आज क्यों निर्मल है।

शुद्ध करो—

भोः गुणवती कन्ये ! भोः बुद्धिर्मति सुशीला ! हे अम्बे (३) !

१-२-३ अम्मा (माता) के अर्थको कहनेवाले दो स्वरवाले अम्बा आदिक दीर्घ आकारांत, तथा स्त्रीलिंग दीर्घ ईकारांत और ऊकारांत शब्दोंके अंतका स्वर संबोधनके एक वचनमें ह्रस्व हो जाता है।

भोः तपस्विन्यो योषित्! भोः गर्विता वधूः! हे कृष्णे धेनुः! हे दयावती दुहिता! हे विपदः! हे साध्वि जननी!

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पिपीलिके, अम्ब, ओषधे, तरी, नदी, पटीयस्यौ, रेणो, रज्जवः, चमु, श्वश्र्वौ, ननांदः, मातरः, कविवाक्, परिषत्, युत्, सरित्, श्रीः, (१) आपः, स्वसः, अम्बिके।

हिंदी बनाओ—

हे सखि! आग्रहं मा (मत) भजस्व। हे दासि! कामो मानसं तुदति। हे मृगीनयने! त्वं किमिदमाचरसि। प्रिये! इमां शोभां पश्य। हे सुमुखि! पुनः पुनस्त्वामहं वदामि। हे योषित्! त्वमतिकठोरा वर्तसे।

नपुंसकलिंग

अकारांत—रे पुष्प! त्वं कथं सुगंधं न वितरसि—ऐ फूल! तू क्यों सुगंधि नहीं देता।

इकारांत—रे वारि (रे) त्वं भूमिं उत्च—रे जल! पृथिवीको सींच।

उकारांत—रे मधु (धो) त्वं महत् पापं वितरसि—ए शहद! तू बड़ा पाप देता है।

ऋकारांत—हे कर्तृ (तः) त्वं साधु कार्यं अनुतिष्ठ—हे कर्ता! तू अच्छे काम कर।

(नोट—शेष व्यंजनांत शब्दोंके रूप कर्ता (प्रथमा) के समान ही सब वचनोंमें होते हैं। इसलिये यहां नहीं लिखे गये हैं।)

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अक्षि, पद्म, कुले, अगुरो, हनु, कर्तृ, गुणवत्, वेश्म, (२) कर्मन्, पयः मनः, हविः, चक्षुः, धनुः।

१—श्री, स्त्री आदि एक स्वरवाले दीर्घ ईकारांत—ऊकारांत शब्दोंको ह्रस्व नहीं होता।

२—नकारांत शब्दोंके नपुंसक लिंगमें संबोधन एक वचनके रूप दो प्रकारके होते हैं एक तो उनके अन्तके नकारका लोप होनेसे। जैसे—वेश्म आदि। दूसरे पुंलिंगके समान नकारका लोप न होनेसे जैसे वेश्मन, कर्मन आदि।

शब्द	अर्थ
तडाग (पुं०)	तालाब।
तंडुल (पुं०)	चावल।
तृष्णा (स्त्री०)	चाह, प्यास।

द

शब्द	अर्थ
दावानल (पुं०)	वनकी आग।
दुरंत (त्रि०)	अंतमें दुःख देने वाला।
दैवज्ञ (पुं०)	पुरोहित।
दोग्धृ (पुं०)	दुहनेवाला।

ध

शब्द	अर्थ
धूसर (त्रि०)	मटीला, फीके रंगका।
धृत (त्रि०)	धारणकिया हुआ। पकड़ा गया।
धौत (त्रि०)	धोया गया, पवित्र।

न

शब्द	अर्थ
नद (पुं०)	तालाब।
नरपुंगव (पुं०)	श्रेष्ठ मनुष्य।
नव (त्रि०)	नया, नवीन।
नवोढा (स्त्री०)	नई विवाहित।
निरूपयंती (स्त्री)	देखती हुई।
निर्बोध (त्रि०)	मूर्ख।
नीड (पुं०)	घोसला।
नृशंस (त्रि०)	क्रूर, मनुष्य-घातक।

प

शब्द	अर्थ
पयस्विनी (स्त्री०)	दूध या पानी वाली।
पर (त्रि०)	दूसरा, तत्पर।
परशु (पुं०)	हंसुआ।
परायण (त्रि०)	तत्पर।
पलायमान (त्रि०)	भागता हुआ।
पानमत्त (त्रि०)	पीनेमें लगा हुवा।
प्रचेतस् (पुं०)	वरुण, उदार चित्त।
प्रवीण (त्रि०)	चतुर, हुशियार।
प्रसवित्री (स्त्री०)	उत्पन्नकरने-वाली।
प्रसूति (स्त्री०)	संतान।
प्रांशु (पुं०)	तेजस्वी।

ब

शब्द	अर्थ
बोद्धृ (पुं०)	जाननेवाला।

भ

शब्द	अर्थ
भवित्री (स्त्री०)	होनेवाली।
भव्य (पुं०)	धर्मात्मा, श्रेष्ठ।
भेक (पुं०)	मेंडक।

म

शब्द	अर्थ
मरीचिमालिन् (पुं०)	सूर्य।

मलीमस (त्रि०) मैला।
मागध (त्रि०) मगधदेशका।
मानस (पु०) एक तालाब।
मृगराज (पुं०) सिंह।
मृदु (त्रि०) कोमल।
मेध्य (त्रि०) पवित्र।
मैथिल (त्रि०) मिथलादेशका।

य

यशस्कर (त्रि०) कीर्तिकी करने वाला।
युगल (न०) जोडा, दो।

र

रजत (न०) चांदी।
रज्जु (पुं०) रस्सी।
रवि (पुं०) सूरज।
राजमार्ग (पुं०) सडक।
रुद्ध (त्रि०) रुका हुआ।

व

वपुष्मत् (त्रि०) प्राणी, मोटे शरीर वाला।
वसन (न०) कपड़ा।
वाष्प (न०) आंसू।
विधि (पु०) भाग्य, ब्रह्मा।
विपन्न (त्रि०) दुःखी।
विपुल (त्रि०) बहुत, अति
विभावसु (पुं०) अग्नि, सूर्य।

श

शयालु (त्रि०) सोनेवाला।
शशिन् (पुं०) चांद, चंद्रमा।
शाल्मलि (पुं०) सेमरका पेड़।
शुभ्र (त्रि०) सफेद, श्वेत।
श्यामल (त्रि०) हरी, नीली।
श्यामायमान (त्रि०) नीला-होता हुआ।

स

सन्मति (पुं०) महावीरस्वामी,
सन्मति (त्रि०) श्रेष्ठबुद्धिवाला।
सलिल (न०) जल।
संनिभ (त्रि०) तुल्य, बराबर।
संभव (त्रि०) उत्पन्न हुआ, उत्पत्ति।
सुतीक्ष्ण (त्रि०) बहुत तीखा, तेज।
सूपकार (पुं०) रसोइया।
स्थविष्ठ (त्रि०) अतिस्थूल, मोटा।
स्थास्नु (त्रि०) अचल, एक जगह स्थित।
स्मृति (स्त्री०) याददास्त।
स्वैर (न०) स्वच्छंद।
हर्तृ (त्रि०) हरणकरने वाला, चोर।

शुद्ध करो—

भोः गंधवत् पुष्पं। रे नीचं चेतः। विशालः अगुरुः। भोः सुमधुरं मधु। रे अंधं चक्षुः। रे अकार्यकारि कर्ता। हे सुपयः सरसी।

साहित्य परिचय

संस्कृत बनाओ—

किसी समय राजगृह नगरमें (राजगृहे) एक विशाल बौद्ध-साधुसंघ आया। यह बात महाराज श्रेणिकने भी जानी। श्रेणिक रानीचेलनाके पास गये और साधुओंकी प्रशंसाकी कि—"हे प्यारी! बौद्ध गुरु अतिज्ञानी हैं। उत्कृष्टतपका आचरण करते हैं समस्त संसारको देखते हैं। यदि कोई (कश्चित्) उनसे कुछ पूछता है तो वे सब ज्ञातव्य बातें कहते हैं। आत्माको ध्याते हैं उसे मोक्षको ले जाते है (नयंति) एवं यथार्थपदार्थोंका उपदेश देते हैं। उनका शरीर देदीप्यमान है।" रानी चेलनाने कहा—कृपानाथ! यदि वे साधु ऐसे पवित्र और ध्यानी हैं तो मैं भी उनके दर्शन करूंगी। महाराज! आप यह बात सत्य मानिये कि यदि वे साधु ऐसे हो, सच्चे होंगे तो मैं बौद्ध धर्मको स्वीकार करूंगी (स्वीकरिष्यामि) मैं आग्रह नहीं करती कि जैन धर्मको ही धारण करूं परंतु विना परीक्षाके मैं इसे नहीं छोडूंगी। क्योंकि वे मनुष्य मूर्ख हैं जो हेयोपादेयको नहीं जानते। तत्पश्चात् राजाने नौकरोंको आज्ञा दी कि (यत्) एक मंडप बनाओ। सेवकोंने मंडप बनाया। बौद्ध साधुओंने वहां ध्यान प्रारम्भ किया। रानी भी वहां शीघ्र ही आई और बौद्ध गुरुओंसे पूछने लगी। समीपस्थित एक ब्रह्मचारीने कहा कि—हे माता! समस्त साधु ध्यान कर रहे हैं। मोक्ष स्थित हैं देह सहित भी सिद्ध हैं इसलिये ये उत्तर नहीं देते हैं। रानी चेलना कुछ न बोली बाहर आकर

(बहिरागत्य) मंडपको आग द्वारा जला दिया तथा दूर खड़ी हो गई। पश्चात् राजमन्दिरमें चली गई।

हिंदी बनाओ—

राज्ञी चेलना वदतिस्म श्रेणिकं प्रति। भोः नरनाथ! तिजस्व मां, अहमेकां विचित्रामाख्यायिकां (कहानी) गदामि। तां श्रुत्वा मदीयमपराधं निर्णय। नाथ! अत्र भरतदेशस्था कौशांबी नाम्नी (२) राजते स्म नगरी काचित्। वसुपालो नृपो रक्षति स्म ताम्। तत्र श्रेष्ठिनौ सागरदत्तसुभद्रदत्तनामानौ वैश्यौ परस्परं महतीं मित्रतामुपगतौ। एकदा एकस्थानस्थितौ तौ अन्योन्य—स्नेहवर्द्धिकाः (परस्परके प्रेमको बढ़ानेवाली) अनेका वार्ता वदत. स्म। स्नेहपराकाष्ठां (प्रेमका हद्द दर्जा) दर्शयितुकामः (दिखाने की इच्छा वाला) सुभद्रदत्तः सागरदत्तं गदति स्म। "प्रिय सागरदत्त! यदि भाग्यवशतो ऽहं पुत्रं लप्स्ये त्वं च पुत्रीं लप्स्यसे तदा स पुत्रः तां पुत्रीमेव उद्वक्ष्यते न अन्यां, यदि त्वं पुत्रमहं च पुत्रीं तदापि तथा एव भविष्यति,, इति। इदं श्रुत्वा सागरदत्तो भणति स्म "भवत्कथनमहमवश्यमेव चरिष्यामि" इति। अथ श्रेष्ठिसागरदत्तभार्या वसुमती दैववशतः सर्पाकृतिधारणं भयावहं (डरावने वाला) पुत्रमेकं सूतवती (पैदा करती हुई)। तन्नाम (उसका नाम) वसुमित्रो भवतिस्म एवं सुभद्रदत्तधर्मपत्नी सागरदत्ता चंद्रवदनां (१) मनोहरांगीं सुवर्णवर्णां नानागुण—आकरां (खान) नागदत्ताभिधां (२) सुतामुत्पादयामास (उत्पन्न करती हुई) क्रमशः कुमारी कुमारश्च युवावस्थामधिगतौ। वसुमित्रो नागदत्तामुद्वहते स्म। ततस्तौ सांसारिकसुखमिंद्रियजन्यमनुभवतः स्म। कदाचित् सागरदत्ता सर्वोत्तमभूषणभूषितां चंद-

---

१—चन्द्रमाके समान मुखवाली। २—अभिधा नाम।

नादिसुगंधिद्रव्यलिप्तां स्वसुतां नागदत्तां वीक्ष्य क्रंदति स्म। नागदत्ता च तां ईदृशीं विलपंतीं दृष्ट्वा पृच्छति स्म (पृष्टवती) "मातः! किमिदम्! अद्य मां विलोक्य किं सहसा रोदितवती? शीघ्रमेव तत्कारणं वद। सा बहु विलपंती एव गदितवती। सुते! अहं युवावस्थासंपन्नामपि त्वां पतिजन्यसुखविरहितां पश्यामीति क्रंदामि। यदि स कुमारो मनुष्याकृतिः कुरूप एव स्यात् [होता] तदा किमपि दुःखं न स्यात् परं त्वत्पतिः स कुमारस्तु सर्पः। अतोऽहं विलपामि। नागदत्ता इमां मातृवार्तामाकर्ण्य [सुनकर] प्रथमं हसति स्म। पुनरेवं गदितवती। "जननि! एतदर्थं त्वं किंचिन्मात्रमपि दुःखं न वह। अहं सकलां (तमाम) स्वकथां वदामि यत्मदीय शयनागारस्थिता (१) एका पेटिका (संदूकी) वर्तते। दिवा (दिनमें) मत्पतिः (२) नागरूपं लभते नक्तं (रातिको) च ततो वहिर्निष्क्रम्य (निकलकर) नराकृतिं वहति। तथा नाना सुखानि अनुभवति। सुतामुखनिसृतां (निकली हुई) एतामाश्चर्यान्वितां वार्तां श्रुत्वा सागरदत्ता (३) तन्माता गदितवती।

सुते नागदत्ते! यदि सत्या एषा वार्ता तदा मदुक्तं (मेरा कहना) आचर। तां मंजूषां (पेटी) परिचितस्थानस्थितां कुरु (कर) एवं मां च दर्शय [दिखला] तदा अहं तां वार्तां सत्यं बोधिष्यामि [जानूंगी]"

नागदत्ता तथा एव अनुष्ठितवती। कुमारः सर्पाकारो भयंकररूपं परित्यक्तवान् सुरूपं नराकारं च लब्धवान्। तदा एव तत्र गूढा तन्माता तां मंजूषां संगृह्य [लेकर] दग्धवती। ततः स वसुमित्रः सर्वदा एव मनुष्याकारधारको भवति स्म,, इति।

इति प्रथमभाग समाप्त।

१—सोनेकी घरमें स्थित। २—मेरा मालिक। ३ उसकी मा।

शब्दकोष।

शब्द — अर्थ

अकुलीन (त्रि०) नीचकुलका।
अनगारिन् (पु०) घररहित।
अनन्यवृत्ति (त्रि०) जिसका चित्त एक स्थानमें लगा हो।
अनुज (त्रि०) छोटा भाई, पिछारसे पैदा होनेवाला।
अभिभूत (त्रि०) तिरस्कृत।
अपेय (त्रि०) पीनेके अयोग्य।
अयत्नरमणीय (त्रि०) स्वभावसे मनोहर।
अर्हणा (स्त्री०) पूजा, सत्कार।
आगंतुक (त्रि०) आनेवाला अतिथि।

इ

इंदु (पु०) चंद्रमा।

उ

उद्भिद् (पु०) पेड़, वनस्पति।
उन्मनस् (त्रि०) पागल।
उपदेष्टृ उपदेशक।

ऋ

ऋजु (त्रि०) सरल, सीधा।
एतावत् (त्रि०) इतना।
कपोत (पु०) कबूतर, परेवा।

क

कर्मकृत् (त्रि०) काम करनेवाला।
कांसपरिमृज् (पु०) कृष्ण, कांसेको साफकरनेवाला, कसेरा।
कारु (पु०) बढई।
कुटीर (पु०) झोपडी।
कोट्टपाल (पु०) कोतवाल।
क्रय (पु०) वेचना, विक्री।

ख

खनित्र (नं०) फावडा, पृथ्वी खोदनेका शस्त्र।

ग

गगन (नं०) आकाश।
गरिमन् (पु०) वडप्पन।
गोत्रभिद् (पु०) इंद्र।

च

चटिका (स्त्री०) एक तरहका पक्षी।
चारु (त्रि०) सुन्दर, अच्छा।

ज

ज्योत्स्ना (स्त्री) चांदनी।

त

तक्ष (भ्वा० धा०) छीलना।